आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 मार्च, 2023
डाक प्रेषण तिथि 10 मार्च, 2023

वर्ष : 81 अंक : 03
चैत्र, 2079 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

मार्च, 2023

Website : www.jinwani.in

जो सबके साथ आत्मीयभाव से रहना सीख जाता है, निभने और निभाने की कला को जान लेता है, वह चाहे घर में हो, संघ-समाज में हो या संयममार्ग पर चरण बढ़ाने वाला हो, वह जहाँ पर रहेगा वहाँ उस पर आनन्द की धारा बरसती रहेगी। – आचार्यश्री हीरा

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के द्वारा प्रकाशित प्रवचन-साहित्य

प्रार्थना-प्रवचन, मूल्य-15.00 रुपये,

Concept of Prayer, Rs. 25/-

प्रवचनकार-आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.

प्रार्थना-प्रवचन एक अद्भुत पुस्तक है, जिसमें प्रार्थना के माध्यम से वीतरागता तक पहुँचने का मार्ग प्रतिपादित है। प्रार्थना के तीन प्रकार प्रतिपादित किए गए हैं-याचना प्रधान, स्तुति प्रधान एवं भावना प्रधान प्रार्थना। इन प्रवचनों से आचार्य श्री का आध्यात्मिक वैभव प्रकट होता है। इसके हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में संस्करण प्रकाशित हैं।

हीरा-प्रवचन-पीयूष, भाग-1 से 5,

मूल्य-150.00 रुपये (पाँचों भागों का),

प्रवचनकार-आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आगम एवं धर्म के मर्म को जीवन एवं व्यवहार के साथ जोड़कर प्रस्तुत करने में दक्ष हैं। आपके प्रवचनों में ओज, सम्यक् चोट एवं हितकारी भाव का समन्वय रहता है। इन पाँचों भागों में परीषह-जय, संवेदनशीलता, मृत्यु-जय, जागरूक संघ आदि विशिष्ट विषयों पर सरल भाषा में लिपिबद्ध 156 प्रवचन हैं, जो पाठक के चित्त में आत्म-जागृति की स्फुरणा एवं पुरुषार्थ के विचार को जन्म देने में सक्षम हैं।

आध्यात्मिक आलोक, मूल्य-50.00 रुपये,

प्रवचनकार-आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा.

इस पुस्तक में आचार्यश्री के प्रवचनों को दो खण्डों में विभाजित किया गया है। प्रथम खण्ड में 45 एवं द्वितीय खण्ड में 39 प्रवचनों के माध्यम से जैन साधना-पद्धति के रूप में बारह व्रतों का विस्तृत वर्णन किया गया है। सुज्ञ श्रावकगणों को व्रती जीवन के समीचीन स्वरूप का दिग्दर्शन तथा व्यावहारिक पक्षों के साथ मर्यादित जीवन की विशेषता बताने हेतु पुस्तक में प्रवचन समाहित हैं।

व्रत प्रवचन संग्रह, मूल्य-10.00 रुपये,

प्रवचनकार-आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

प्रस्तुत पुस्तक में आचार्यश्री द्वारा अपने प्रवचनों में अहिंसा आदि 5 व्रतों के महत्त्व, स्वरूप और क्रियान्वयन पर शास्त्रीय और व्यावहारिक दृष्टि से सहज, सरल भाषा और बोधगम्य शैली में विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

मान व्याख्यान-माला, मूल्य रुपये 25/-,

प्रवचनकार-उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा.

प्रस्तुत पुस्तक में नवपद आराधना के प्रवचनों के साथ सामायिक, स्वाध्याय-साधना, संघ-उन्नयन, व्रत-ग्रहण, कषाय-विजय जैसे प्रेरक प्रवचन संकलित हैं। इसमें जीवन-व्यवहार और धर्म, बुद्धि का फल तत्त्वविचार, व्रत-धारण से दु:खमुक्ति आदि 35 शीर्षकों के अन्तर्गत प्रवचनों का समावेश करके पुस्तक को विस्तार दिया गया है।

गजेन्द्र व्याख्यान माला, भाग-1 से 7,

मूल्य 105/- (सातों भागों का)

प्रवचनकार-आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा.

इन 7 भागों में आचार्य भगवन्त द्वारा अपनी पावन अघनाशिनी वाणी में दिये गये उपयोगी प्रवचनों का समावेश है। इनमें पर्युषण पर्व, साधना-आराधना, महापुरुष प्रसङ्ग और जीवन-व्यवहार से सम्बन्धित 119 प्रवचन हैं। इन पुस्तकों में प्रत्येक को प्रारम्भिक साधना से चरम लक्ष्य प्राप्त कराने वाली साधना का मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

आहार-संयम और रात्रि भोजन-त्याग,

मूल्य-5.00 रुपये,

प्रवचनकार-आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पुस्तक में आहार के संयम के स्वरूप एवं लाभों के साथ रात्रिभोजन-त्याग के सन्दर्भ में आचार्यश्री का मर्मस्पर्शी प्रवचन उल्लेखित है। उक्त विषय में आचार्यश्री की सम्पादक महोदय से हुई चर्चा भी प्रस्तुत की गयी है। परिशिष्ट में रात्रिभोजन-त्याग सम्बन्धी पद्यों का संकलन भी है।

अंक सौजन्य

श्री महावीराय नमः
श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः

।। जय गुरु हीरा।। ।। जय गुरु महेन्द्र।। ।। जय गुरु मान।।

संसार के अन्धकार को दूर करने में सहस्र रश्मियों वाला सूर्य सक्षम है, पर अज्ञान के अन्धकार को दूर करने में गुरु ही सक्षम है।

अप्रतिहत कर्मयोगी पूज्य पिताश्री सोहनलालजी पूज्या माताश्री सौ. प्रेमलताजी बोथरा

आपने असाधारण परिस्थिति में, शारीरिक प्रतिकूलता होते हुए भी दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर सेवा, अनुकम्पा और जीवदया का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। सन्त-सेवा, गुरु-भक्ति, श्रद्धा, समर्पण, मानव-सेवा, जैन पुस्तकालय, गो-सेवा, कबूतर-दाना, बकराशाला, मछलीरक्षण आदि के माध्यम से गुरु भगवन्तों की इस युक्ति को चरितार्थ किया है कि क्रियात्मक सेवा ही भावात्मक सेवा का सक्रिय रूप है।

स्वाध्याय, तपस्या, सेवा एवं शिक्षण ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी पूज्य पिताजी एवं उनके जीवन के हर मोड़ पर अपना कर्तव्यपथ पर साथ निभाती पूज्या माताजी के चरणों में अनन्त प्रणाम....

आपने ही कर्म के साथ धर्म का मार्ग बताया, गुरु हस्ती एवं गुरु हीरा जैसे महान् अध्यात्म योगी महापुरुषों की छत्रछाया के शुभ सान्निध्य में पहुँचाया।

श्रद्धावनत

महावीर-रंजना, अनिल-सुनीता, अर्पित-प्रियंका
यश, ऐश्वर्या, रुचि, देवम्, मंथन, निष्ठा बोथरा
एवं
हेमलता, हर्षित-लव्या, हिमांशु पारख

अर्पित एग्रो प्राइवेट लिमिटेड, एम.आई.डी.सी., जलगाँव (महाराष्ट्र)

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

ISSN 2249 - 2011 हिन्दी–मासिक

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरुपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, 2705088
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

卐 सह–सम्पादक
नौरतनमल मेहता, जोधपुर
त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

卐 सम्पादकीय कार्यालय
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinwani@gmail.com / editorjinvani@gmail.com

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अवि पाव-परिक्खेवी,
अवि मित्तेसु कुप्पइ।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स,
रहे भासइ पावयं।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, 11.8

अपमान करे जो परवृत्ति पर,
जो मित्रों पर भी क्रोध करे।
प्रिय मित्रजनों का भी जग में,
एकान्त पाप का कथन करे।।

मार्च 2023
वीर निर्वाण सम्वत्, 2549
चैत्र, 2079

वर्ष 81 अंक 3

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 8000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि ``JINWANI'' बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS से जमा कराकर जमापर्ची के साथ पेन नं. भी (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप्प नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	प्रभुवीर की स्तुति	–डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	–डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	गुणवान बनने के सूत्र	–आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	11
प्रवचन-	धर्म का प्रथम चरण अहिंसा	–आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	12
	धर्मोत्तम पुरुष आचार्यश्री धर्मदासजी म.सा.	–भावीआचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	15
	परिणति और प्रवृत्ति	–तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	19
	विनय गुण-धारण : अहंकार-निवारण	–श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	28
जन्म-शती-	गुरु सुदर्शन की प्रेरक जीवन-झाँकी	–संघ सञ्चालक श्री नरेशमुनिजी म.सा.	23
प्रासङ्गिक-	महावीराष्टकं स्तोत्रम्	–श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.	31
	भगवान महावीर की व्रत-व्यवस्था में अपरिग्रह और अस्तेय	–डॉ. दिलीप धींग	34
	वर्धमान वर्तमान में भी प्रासंगिक	–श्रीमती अंशु संजय सुराणा	40
प्रवचनांश-	जैन होने के 10 लक्षण	–महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.	33
85वाँ जन्म-दिवस-	गुणग्राही आचार्यश्री हीरा	–श्री त्रिलोकचन्द जैन	54
English-section	**Acharya Shri Hasti on Contemporary Global Problems and Remedial Measures**	–*Prof. S. R. Bhatt*	43
श्रावकाचार-	बारह व्रत : श्रावक के लिए परम आवश्यक	–श्री राकेश कोचर	57
तत्त्वबोध-	स्थानकवासी जैनधर्म की विशेषताएँ	–श्री हेमन्त डागा	60
अध्यात्म-विज्ञान-	रोग के क्षणों में समाधि कैसे रखें?	–श्रीमती रतन चोरड़िया	62
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर कर्मों को समझें (26)	–श्री धर्मचन्द जैन	67
गीत/कविता-	सद्गुरु	–श्री महावीर एम. गुलेच्छा	27
	संयम के रथ पे.... होके सवार	–श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	30
	आचार्यश्री हीरा गुणगान	–महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा.	32
	आओ खेलें होली	–श्रीमती अंशु संजय सुराणा	56
	समय आखिर बीत ही जाता है...!	–श्री राजेन्द्र जैन 'राजा'	59
	परिवर्तन	–श्री विजेन्द्र जैन	59
	तलहटी से शिखर तक	–डॉ. रमेश 'मयंक'	66
	जड़ की पकड़	–श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	69
विचार/चिन्तन-	वाणी-विवेक	–श्री राजेन्द्र पारख	18
	प्रेरक-वचन	–श्री पारस आँचलिया	22
	धन्य-धन्य है साधु-जीवन	–श्री जयदीप ढड्ढा	39
	धूम्रपान छोड़ने के आसान तरीके	–श्री अभय कुमार जैन	51
	समाज के समक्ष चुनौतियाँ : शराब एवं जैनेतर परिवारों में विवाह	–प्रोफेसर रतन जैन	69
	अभिनन्दनीय पहल	–श्री धनसुरेश जैन	89
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	–श्री गौत्तमचन्द जैन	70
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	72
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	90
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	–विभिन्न लेखक	91

10 मार्च 2023
जिनवाणी 7
ISSN 2249-2011

सम्पादकीय

प्रभुवीर की स्तुति

डॉ. धर्मचन्द जैन

तीर्थंकर महावीर का 2,623वाँ जन्म-दिवस चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को उपस्थित हो रहा है। वे मानव की देह में अलौकिक सामर्थ्य एवं अन्त:प्रकाश से सम्पन्न महापुरुष थे। अपने चित्त को ज्ञान रश्मियों से साधते हुए उन्होंने क्षपकश्रेणि पर आरूढ़ होकर समस्त विकारों पर विजय प्राप्त की थी। मोह कर्म के साथ ज्ञानावरण, दर्शनावरण एवं अन्तराय कर्म का सम्पूर्ण क्षय कर वे अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र एवं अनन्त वीर्य से सम्पन्न बने। किसी अन्य दार्शनिक परम्परा के प्रति तनिक भी द्वेष का भाव उनके चित्त में नहीं था। राग-द्वेष के विजेता बनकर उन्होंने सम्पूर्ण जगत के लिए सन्मार्ग को प्रकाशित किया तथा जगत के समस्त जीवों के उद्धार हेतु करुणापूर्वक देशना फरमायी। उस देशना पर श्रद्धा रखकर प्राणी अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, क्षमा, मार्दव, आर्जव, निर्लोभता आदि धर्मों को अपनाकर दु:ख का क्षय कर सकता है।

प्रभु महावीर की वाणी की आज समस्त विश्व को आवश्यकता है। तीर्थंकर महावीर का अनेक आचार्यों ने भक्तिभावपूर्वक स्तुतिगान किया है।

प्रभु महावीर की स्तुति सर्वप्रथम सूत्रकृताङ्गसूत्र के छठे अध्याय में सम्प्राप्त होती है। अत: इस अध्ययन को 'वीरत्थुई' के नाम से भी जाना जाता है। वीरस्तुति (वीरत्थुई) में तीर्थंकर महावीर के अनेक विशेषण प्राप्त होते हैं, जिनसे उनके दिव्य-व्यक्तित्व पर प्रकाश प्राप्त होता है। वीरत्थुई में उन्हें क्षेत्रज्ञ अर्थात् आत्मज्ञ, खेदज्ञ अर्थात् दु:खज्ञ, महर्षि, अनन्तज्ञानी, अनन्तदर्शी, यशस्वी, प्रज्ञासम्पन्न, सर्वदर्शी, अभिभूतज्ञानी (सर्वातिशायी ज्ञानी), अनिकेतचारी (अनगार), अनन्तचक्षु, आशुप्रज्ञ, महानुभाव, अनुत्तर, विशिष्ट, निर्मल, अकषायी, मुक्त, देवाधिपति, प्रतिपूर्णवीर्य (सर्व समर्थ), श्रमण, ज्ञातपुत्र, भूतिप्रज्ञ (सर्वाधिक प्रज्ञाशील), लोकोत्तम (लोक में श्रेष्ठ), अभयंकर, विगतगृद्धि (आसक्तिरहित) आदि अनेक विशेषणों से उनके अनुत्तर व्यक्तित्व को अभिव्यक्त किया गया है। इन विशेषणों में कही भी अतिशयोक्ति दिखाई नहीं पड़ती।

आगमों की सरणि में अंगबाह्य आगमों के अन्तर्गत कुछ ऐसे आगम सम्मिलित किए जाते हैं, जिन्हें आगे चलकर प्रकीर्णक कहा गया है। नन्दीसूत्र में ऐसे ऋषिभाषित आदि नौ अंगबाह्य आगमों का उल्लेख है जो उत्तरवर्तीकाल में प्रकीर्णकों की गणना में समाविष्ट हुए हैं। मूर्तिपूजक परम्परा में 45 आगमों के अन्तर्गत 10 प्रकीर्णक तथा 84 आगमों की संख्या में 30 प्रकीर्णक स्वीकार किये गए हैं। इन प्रकीर्णकों में अध्यात्मपरक, समाधिमरणपरक, ज्योतिर्विद्या सम्बन्धी, गच्छाचार एवं लोक सम्बन्धी तथा स्तुतिपरक साहित्य निर्मित हुआ है। इन प्रकीर्णकों में प्रभु महावीर की स्तुति में 'वीरत्थओ' (वीरस्तव) नामक प्रकीर्णक तीर्थंकर महावीर की स्तुति में रचित है। विद्वानों के अनुसार यह प्रकीर्णक ग्रन्थ 10वीं शताब्दी की रचना है।

वीरस्तव (वीरत्थओ) नामक प्रकीर्णक में तीर्थंकर महावीर की 26 नामों से स्तुति की गई है। वे 26 नाम इस प्रकार हैं-1. अरुह, 2. अरिहंत, 2. अरहंत, 4. देव, 5. जिन, 6. वीर, 7. परमकारुणिक, 8. सर्वज्ञ, 9. सर्वदर्शी, 10. पारगामी, 11. त्रिकालज्ञ, 12. नाथ, 13. वीतराग, 14. केवली, 15. त्रिभुवन गुरु, 16. पूर्ण (सर्व), 17. त्रिभुवन श्रेष्ठ, 18. भगवान, 19. तीर्थंकर, 20. शक्रवन्दित, 21. जिनेन्द्र, 22. वर्धमान, 23. हरि (विष्णु), 24. हर, 25. कमलासन और 26. प्रमुख बुद्ध।

1. अरुह–अरुह का अर्थ होता है पुन: नहीं उगने वाला अर्थात् पुन: जन्म न लेने वाला। प्रभुवर तीर्थंकर देह में चरम शरीरी होते हैं। वे अष्टविध कर्मों का क्षय कर मुक्ति का वरण करते हैं। पुन: जन्म ग्रहण करने हेतु कोई कर्म शेष नहीं रहता है। इसलिये उनका पुनर्जन्म नहीं होता। जैनदर्शन की यह मान्यता वैदिक परम्परा से अपने को पृथक् करती है। वैदिक परम्परा में विष्णु पुन:-पुन: संसार में अवतार ग्रहण करते हैं, किन्तु जैन परम्परा इसको स्वीकार नहीं करती।

2. अरिहंत–घोर उपसर्ग, परीषह और कषाय के कारणभूत समस्त कर्म रूपी शत्रुओं का क्षय (अरि + हंत) कर देने के कारण इन्हें अरिहंत कहा गया है। अरिहंत का अर्थ योग्य अथवा सामर्थ्यवान् भी होता है। प्रभु महावीर वन्दन, स्तुति, नमस्कार, पूजा एवं सत्कार के योग्य हैं तथा सिद्धि प्राप्त करने में समर्थ हैं इसलिये भी वे अरिहंत हैं।

3. अरहंत–अरहंत शब्द भी योग्य एवं सामर्थ्यवान् का सूचक है। किन्तु इसका दूसरा अर्थ भी है-रह अर्थात् रथ। यह रथ शब्द समस्त परिग्रह का सूचक है। वे समस्त परिग्रह से रहित हैं। रहस् अर्थात् पर्वत-गुफा के अन्धकार के समान अज्ञान से रहित होने के कारण भी वे अरहंत हैं।

4. देव–सिद्धि रूपी वधू के साथ क्रीड़ा करने वाले, मोह रूपी शत्रु पर विजय पाने वाले तथा अनन्त सुख रूपी पुण्य परिणामों से युक्त होने के कारण ये देव ही नहीं, अपितु देवाधिदेव हैं, क्योंकि सभी प्रकार के देव भी इनके चरणों में झुकते हैं।

5. जिन–रागादि शत्रुओं को जीतने के कारण तीर्थंकर प्रभु को जिन कहा गया है।

6. वीर–अष्टविध कर्म रूपी ग्रन्थि का विदारण करने के कारण, रमणीय भोगों के प्राप्त होने पर उनसे विमुख रहने के कारण इन्हें वीर कहा गया है। वीर को महावीर भी कहा जाता है, क्योंकि वे तृष्णा से रहित हैं तथा समस्त सांसारिक शक्तियों को परास्त करने वाले हैं।

7. परम कारुणिक–प्रभु महावीर शत्रु-मित्र सहित संसार के समस्त प्राणियों के प्रति करुणाशील हैं, अत: इन्हें परम कारुणिक कहा गया है।

8. सर्वज्ञ–प्रभु महावीर के लिए कुछ भी जानना शेष नहीं है। वे समस्त द्रव्यों और उनकी पर्यायों को जानते हैं। वे भूत, भविष्य और वर्तमान के समस्त द्रव्यों और पर्यायों का साक्षात् ज्ञान करने में समर्थ हैं, इसलिए सर्वज्ञ हैं।

9. सर्वदर्शी–समस्त लोक में विद्यमान अपने स्वरूप में स्थित तत्त्वों एवं द्रव्यों का वे केवलदर्शन से अवलोकन करने में समर्थ हैं, अत: सर्वदर्शी हैं।

10. पारगामी–जन्म-मरण रूपी भवों और सर्व कर्मों से पार हो जाने के कारण तथा सभी ज्ञेय विषयों के ज्ञाता, किं वा श्रुतसागर के पारगामी होने के कारण प्रभु को पारगामी विशेषण से सम्बोधित किया गया है।

11. त्रिकालज्ञ–भूत, भविष्य एवं वर्तमान तीनों कालों के पदार्थों को हथेली में स्थित आँवले के समान स्पष्ट जानने के कारण प्रभु महावीर त्रिकालज्ञ हैं।

12. नाथ–भयावह संसार समुद्र में डूबते हुए प्राणियों को देशना देकर उनके रक्षक होने से प्रभु को नाथ कहा गया है।

13. वीतराग–राग-द्वेष से पूरी तरह रहित होने के कारण तीर्थंकर महावीर वीतराग हैं। न उनका कोई प्रिय है और न कोई अप्रिय। अनेक देवी-देवता उनके चरणमूलों में उपस्थित होते हैं, फिर भी उनको तनिक भी रागादि विकार उत्पन्न नहीं होते। यही उनकी वीतरागता है।

14. केवली–सभी द्रव्यों की अनन्त पर्यायों को युगपद् रूप में केवलज्ञान से जानने के कारण वे केवली हैं। केवलज्ञान एवं केवलदर्शन से सम्पन्न होने के कारण प्रभु को केवली कहा जाता है।

15. त्रिभुवन गुरु–तीनों लोकों में सद्धर्म का नियोजन करने के कारण भगवान महावीर को त्रिभुवन गुरु अभिहित किया गया है।

16. पूर्ण (सर्व)–अन्तराय आदि कर्मों का अभाव होने से उनके कोई अभाव नहीं है, अत: वे पूर्ण

हैं। विपुल दु:खों से पीड़ित संसार के प्राणियों के लिए हितकारी होने के कारण वे उनके सर्वस्व भी हैं।

17. त्रिभुवन श्रेष्ठ–बल, वीर्य, ज्ञान, विज्ञान, सौभाग्य आदि में श्रेष्ठ तथा तीर्थंकर पद को धारण करने के कारण वीर प्रभु त्रिभुवन में श्रेष्ठ हैं।

18. भगवान (भयवन्त)–प्रतिपूर्ण रूप, ऐश्वर्य, धर्म, कान्ति, पुरुषार्थ और यश के कारण प्रभुवर भगवान हैं। प्राकृत भाषा में यदि 'भयवन्त' शब्द का कथन किया जाए तो सात प्रकार के भयों का वमन कर देने के कारण वे भयवन्त (भय + वान्त) हैं।

19. तीर्थंकर–चतुर्विध संघ रूपी तीर्थ की स्थापना करने के कारण वे तीर्थंकर हैं। गणधर एवं आगमवाणी को भी तीर्थ कहा गया है। लोक को इन्हें प्रदान करने के कारण भी वे तीर्थंकर हैं।

20. शक्रवन्दित–इन्द्रों द्वारा वन्दित होने के कारण जिनेश्वर प्रभु महावीर को शक्राभिवन्दित स्वीकार किया गया है।

21. जिनेन्द्र–जैन परम्परा में उपशान्त मोह तथा क्षीण मोह गुणस्थान वाले साधक को भी कथञ्चित् वीतराग होने के कारण 'जिन' कहा जाता है। उनकी अपेक्षा भी अधिक आध्यात्मिक ऐश्वर्य से युक्त होने के कारण प्रभु को जिनेन्द्र विशेषण दिया गया है।

22. वर्धमान–तीर्थंकर महावीर के गर्भ में आने से पिता सिद्धार्थ नृप के घर में वैभव, स्वर्ण कोष आदि में विपुल वृद्धि हुई, इस कारण इन्हें वर्धमान संज्ञा भी प्राप्त है।

23. हरि (विष्णु)–हथेली में शंख, चक्र, धनुष के चिह्न होने से तथा वर्षीदान करने के कारण इन्हें लक्ष्मी का निधान अर्थात् विष्णु या हरि नाम भी दिया गया है।

24. हर–प्राणियों के बाह्य एवं आभ्यन्तर कर्म रूपी रज का हरण करने के कारण इन्हें हर कहा गया है।

25. कमलासन (ब्रह्मा)–दान, शील, तप एवं भाव रूपी चार मुखों से युक्त होने के कारण अथवा समवसरण के चतुर्मुख होने के कारण इन्हें ब्रह्मा के रूप में भी प्रतिष्ठित किया गया है।

26. प्रमुख बुद्ध–निर्मल केवलज्ञान के द्वारा जीवादि द्रव्यों एवं उनकी पर्यायों को तथा सत्य को जानने के कारण प्रभु को बुद्ध भी कहा गया है।

स्तुति में जिन विशेषणों का प्रयोग किया गया है उनमें अधिकांश विशेषण प्रभु महावीर के साथ अन्य सभी तीर्थंकरों पर भी लागू होते हैं। वर्धमान नाम प्रभु महावीर का पृथक् से ज्ञात होता है, किन्तु वह भी समस्त तीर्थंकरों की विशेषताओं में गृहीत हो सकता है, क्योंकि प्रत्येक तीर्थंकर का जीव पुण्यशाली होता है, जिसके जन्म ग्रहण करने पर परिवार में सुख-समृद्धि एवं कोष आदि में वृद्धि होती है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि यह 'वीरस्तव' प्रभु महावीर के साथ समस्त तीर्थंकरों की स्तुति करता है। स्तुतिकर्ता की जैसी दृष्टि होती है वह उसी प्रकार से गुणों का अन्वेषण करता है। प्रभु महावीर में तो अनन्त गुण थे। उन सबको देखना, जानना और कथन करना सम्भव नहीं है। सूत्रकृताङ्गसूत्र में जिन विशेषणों की चर्चा की गई है, वे भी प्रभु महावीर के दिव्य व्यक्तित्व का यत्किञ्चित् ख्यापन करते हैं। वीरत्थुई एवं वीरत्थओ में प्रभु की जो स्तुति की गई है वह आत्मिक गुणों पर आधारित है, भक्तामर स्तोत्र की भाँति वह शरीर सौन्दर्य एवं बाह्य महाप्रातिहार्य आदि पर केन्द्रित नहीं है। तीर्थंकर के आत्मिक गुणों का विशेष महत्त्व होता है, जो हम साधारण जनों को आत्मगुणों का सम्वर्धन करने के लिए प्रेरित करता है।

संसार में नाना प्रकार के मनुष्य हैं, जिनमें हम राग-द्वेष की तीव्रता एवं मन्दता का दर्शन करते हैं। उनके ज्ञान की न्यूनता एवं निर्मलता को जानते हैं। क्रोध, मान, माया एवं लोभ की अधिकता एवं उन पर नियन्त्रण करने की क्षमता को भी देखते हैं। जो इन पर नियन्त्रण करता है वह आत्मा, मन और शरीर सभी स्तरों पर स्वस्थ रहता है तथा जो इनके चक्रव्यूह में फँसा रहता है एवं उसी को ठीक मानता है वह दु:ख के गर्त से नहीं निकल पाता।

प्रभु महावीर की स्तुति हमें आत्मगुणों का सम्वर्धन कर उनके सदृश बनने की प्रेरणा करती है। इसीलिये जीवन में स्तुति का महत्त्व है।

10 मार्च 2023
जिनवाणी 10
ISSN 2249-2011

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

जीवियं चेव रूवं च, विज्जुसंपाय-चंचलं।
जत्थ तं मुज्झसि रायं!, पेच्चत्थं णावबुज्झसे।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 18, गाथा 13

अर्थ-राजन्! जिस पर तुम मुग्ध हो रहे हो, वह जीवन और रूप तो विद्युत् की चमक की तरह चञ्चल है। तुम अपने परलोक के हित को नहीं समझ रहे हो।

विवेचन-गर्दभालि मुनि ने भयभीत राजा संजय को बड़ा ही महत्त्वपूर्ण उपदेश दिया है। राजा संजय से जब गर्दभालि मुनि के निकटवर्ती मृग पर बाण चला गया तथा मृग का वध हो गया तो अश्वारूढ़ राजा शीघ्र ही ध्यानस्थ मुनि के निकट आए एवं क्षमायाचना करने लगे। तब गर्दभालि मुनि के कहा-"राजन्! आप निर्भय रहें और इन वन के जीवों के अभयदाता बनें। इस अनित्य जीवलोक में आप हिंसा में क्यों प्रसक्त हो रहे हैं।" शिकार खेलना हिंसा का कार्य है। अत: त्याज्य है। जब जीवन में सब कुछ छोड़कर जाना अवश्यम्भावी है तब हिंसा में क्यों आसक्त बने हो? मुनि ने यह भी कहा कि यह जीवन और रूप-सौन्दर्य बिजली की चमक के समान चञ्चल है। फिर तुम इसमें क्यों मोह-मुग्ध बने हुए हो?

प्रस्तुत गाथा में जीवन और रूप-सौन्दर्य की अनित्यता का प्रतिपादन किया गया है। प्राय: मनुष्य इस सत्य को नहीं जानता है कि यह जीवन आकाश में मेघों के घर्षण से चमकने वाली विद्युत् के समान अनित्य है। जीवन कितना भी प्यारा एवं लम्बा क्यों न हो, फिर भी वह एक-न-एक दिन समाप्त हो जाता है। जो समाप्त होता है वह जीवन अनित्य है। इसलिये इस जीवन का सही उपयोग कर लेना चाहिए। हिंसा आदि पापों में संलग्न होकर जीवन को समाप्त करना आत्महितकारी नहीं होता।

राजा को राज्य प्राप्त हो जाता है। सत्ता का सुख उसे मिल जाता है। फिर भी वह यदि हिंसा आदि करके जीवन को पाप में लगाता है अथवा व्यर्थ गँवाता है तो यह उसकी मूर्खता ही कही जायेगी। यह बात राजा पर ही नहीं, उन सभी व्यक्तियों पर भी लागू होती है, जिन्हें पद, प्रतिष्ठा, सत्ता आदि का सुख मिला हुआ है, किन्तु वे उसका दुरुपयोग कर दूसरों का शोषण करते हैं, हिंसा, झूठ, चोरी आदि पापों में संलग्न होते हैं। अत: जिन पापकारी क्रियाओं से सहज में बचा जा सकता है, उनसे बचकर जीवन जीना ही जीवन की सार्थकता है।

मनुष्य तब तक भ्रान्त बना रहता है, जब तक वह जीवन की अनित्यता के सत्य को आत्मसात् नहीं करता है। इस धरती पर अपना साम्राज्य स्थापित करने वाले राजा, महाराजा, सम्राट्, चक्रवर्ती आदि सभी अपने जीवन को पूर्ण कर चले गए। किन्तु यहाँ जो उन्होंने एकत्रित किया उसे साथ लेकर नहीं जा सके। जो इस जीवन में पापकर्मों में संलग्न रहता है, वह इस जीवन में दु:खी बनता है। जो जीवन की अनित्यता को स्वीकार करके अनासक्त भाव से जीता है तथा हिंसा आदि पापों का त्याग करके संवर एवं निर्जरा की साधना करता है वह अपने जीवन को सफल बना लेता है।

जो यहाँ मोहमुग्ध होकर जीता है, वह उसके दुष्परिणामों को नहीं जानता। उसे यहाँ संकेत की भाषा में कहा गया है कि वह परलोक के हित को नहीं जानता है। यहाँ जो कुछ भी मिला है-जाति, कुल, रूप, बल आदि वे सभी अनित्य हैं। इनका मद करके जीना उचित नहीं है। इस प्रकार एक मुनि के द्वारा राजा को सम्बोधित किये जाने पर उस राजा का जीवन परिवर्तित हो गया और उसने प्रव्रज्या अङ्गीकार कर जीवन सफल बनाया।

इसी प्रकार गुरु-वचन एवं आगम-वाणी बड़े से बड़े धनिकों, प्रभुत्वशालियों, भोग-विलासियों तथा अभाव के कारण दु:खी प्राणियों के जीवन में परिवर्तन ला देते हैं। अत: गुरु-वचन एवं आगम-वचन श्रद्धेय तथा समादरणीय हैं।

10 मार्च 2023
जिनवाणी 11
ISSN 2249-2011

विचार-वारिधि

गुणवान बनने के सूत्र

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- बालक रत्न भी बन सकते हैं और टोल भी। माता-पिताओं को चाहिए कि अपना दायित्व समझकर बालकों के सुन्दर जीवन-निर्माण का लक्ष्य रखें अन्यथा हाथ से तीर छूट जाने पर लाइलाज है।
- दुनिया के बड़े लोग सत्संग में इसलिये भी संकोच करते हैं कि वहाँ साधारण लोगों के साथ बैठना होता है। सिनेमा में उनकी पोजीशन डाउन नहीं होती, पर सत्संग में हो जाती है, कितनी विचित्र बात है।
- सद्गृहस्थ धर्मप्रधान दृष्टि रखते हुए अर्थ-साधना करता है। सद्गृहस्थ को चाहिए कि वह प्रतिदिन इसका निरीक्षण करे कि मेरा 'अर्थ-साधन' धर्म के विपरीत तो नहीं जा रहा। उसका दृष्टिकोण उस किसान की तरह होता है जो बीज को खाता हुआ भी उसे बोना नहीं भूलता। बीज के लिए अच्छे दाने सुरक्षित रखता है।
- आप गुणज्ञ बनें, तभी सच्चा लाभ ले सकेंगे।
- यदि परीक्षा में बच्चों को नैतिक व्यवहार के भी अंक दिए जाएँ तो बच्चे देश के लिए वरदान हो सकते हैं।
- 'स्वाध्याय' संस्कार का बड़ा साधन है।
- परिग्रह छूटेगा तो आरम्भ स्वत: कम हो जायेगा।
- परिग्रह से मनुष्य की मति आकुल और अशान्त रहती है। अशान्त मन में धर्म-साधना नहीं होती।
- धर्म पहले इहलोक सुधारता है, फिर परलोक। धर्म से पहले इस जीवन में शान्ति मिलती है, फिर आगे।
- धर्म मानव-जीवन के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना वायुसेवन।
- कामना के जाल को वही काट सकता है, जिसके पास ज्ञान का बल है।
- मनुष्य जीवन का महत्त्व व्रत-नियम से है।
- राजनीति दण्ड से जीवन-सुधार चाहती है और धर्मनीति प्रेम से मन बदलकर।
- आत्मसुधार का एक निश्चित क्रम है-1. जीवन-सुधार, 2. मरण-सुधार और 3. आत्म-सुधार।
- अनर्थदण्ड के प्रमुख कारण हैं-1. मोह, 2. प्रमाद और 3. अज्ञान।
- किसी की उन्नति देखकर ईर्ष्या करना या उसकी हानि की सोचना भी अनर्थदण्ड है।
- अपध्यान में बाहरी हिंसा नहीं दिखती, परन्तु वहाँ अन्तरंग हिंसा है।
- अपध्यान वहाँ होता है, जहाँ तीव्र आसक्ति है।
- मनुष्य को ज्ञान का तीर लगे तो एक ही काफी है और नहीं लगे तो जन्मभर सुनते रहने पर भी कोई लाभ नहीं होता।
- मनुष्य के मन पर माया की झिल्ली आने से वह सद्तत्त्व को नहीं देख पाता और सत्कर्म में चल भी नहीं सकता।
- पारिवारिक प्रार्थना, साप्ताहिक स्वाध्याय सुसंस्कार के साधन हैं। इनके साथ निर्व्यसनी, प्रामाणिक और शुद्ध व्यवहार वाला होना आवश्यक है।
- जिसके द्वारा हित-अहित, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य और धर्माधर्म का बोध हो, वही सच्चा ज्ञान है। ज्ञान के बिना विज्ञान जीवन में हितकारी नहीं हो सकता।
- तप के साथ क्रोध आदि विकारों का त्याग करना उसका भूषण है। क्षमाभाव से उग्र तपस्या की शोभा है।

-'अमृत-वाक्' पुस्तक से गृहीत

10 मार्च 2023
जिनवाणी 12
ISSN 2249-2011

प्रवचन

धर्म का प्रथम चरण अहिंसा

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा महावीर भवन, लाखन कोटड़ी, अजमेर चातुर्मास में फरमाये गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री धर्मपालजी मेहता एवं सम्पादन डॉ. दिलीपजी धींग द्वारा किया गया है।

-सम्पादक

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय अनुपम वाणी स्थानाङ्गसूत्र के माध्यम से एक-एक स्थान का वर्णन करते हुए कहती है-**एगा वेयणा** अर्थात् वेदना एक है। वेदना पहले नहीं होती है, बल्कि बन्ध पहले होता है। भगवतीसूत्र में भगवान महावीर से गौतम स्वामी पृच्छा करते हैं-''भगवन्! क्रिया पहले है या वेदना? जीव सुख-दुःख रूप में, अनुकूलता-प्रतिकूलता के रूप में जो भी वेदन कर रहा है तो उसका वेदन करना पहले है या क्रिया का करना पहले है?'' उत्तर में भगवान ने फरमाया-''**पढमा किया पच्छा वेयणा**'' अर्थात् जीव पहले क्रिया करता है और क्रिया के अनुसार कर्म का बन्ध होता है। बन्ध की स्थिति जब पूरी होती है तब वह कर्म उदय में प्रवेश करता है। उदय में आकर अपने फलानुभव का सुख-दुःख रूप में वेदन कराता है तत्पश्चात् उस कर्म की निर्जरा होती है। इस प्रकार वेदना पहले नहीं है।

वेदना क्यों होती है? इसके उत्तर में ठाणांगसूत्र में अगला सूत्र है-**एगे पाणाइवाए** अर्थात् प्राणातिपात एक है। हिंसा एक तरह की है। बन्ध के रूप में भले ही वह मन, वचन या काया से की जाए; करने, कराने या अनुमोदना से की जाए। परन्तु जहाँ पाप का वर्णन चला है, वहाँ सबसे पहला पाप प्राणातिपात बताया जाता है। यह सब पापों का मूल है। हिंसा के रूप में पाप का सबसे पहले कथन किया गया है। दूसरे पाप इसके पश्चात् हैं। मृषावाद, अदत्तादान, कुशील, परिग्रह आदि अन्य जितने भी पाप हैं, वे सब हिंसा के बाद में हैं।

कई प्राणी ऐसे हैं कि वे दूसरे पापों को जानते तक नहीं हैं। झूठ क्या है और सच क्या है? इसकी जानकारी ही नहीं है। वे प्राणी यह भी नहीं जानते हैं कि क्या बोलना चाहिये और क्या नहीं बोलना चाहिये। संसार के अनन्त प्राणी ऐसे हैं कि जिन्हें बोलने के लिए ज़ुबान ही नहीं मिली। उन्हें सत्य और झूठ की कोई समझ ही नहीं है। जिन्हें बोलने के लिए जिह्वा ही नहीं मिली। वे एकेन्द्रिय प्राणी हैं। परन्तु चाहे-अनचाहे व्याघात सब प्राणियों में होता है। इसीलिए प्राणातिपात प्रथम पाप है और दया प्रथम धर्म है।

दशवैकालिकसूत्र (6.11) में कहा गया है-**सव्वे जीवा वि इच्छंति जीविउं, न मरिज्जिउं** अर्थात् सभी प्राणी जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। संसार में जितने जीव हैं, छोटे-बड़े, समझदार-नासमझ, विकसित-अविकसित, सुखी-दुःखी; सब जीना चाहते हैं। **प्राणान् धारयतीति जीवः** अर्थात् प्राणों को धारण करने वाला जीव है। जो जिया था, जीता है और जियेगा, वह जीव है। चेतना जिसका लक्षण है, वह जीव है। संसार के विभिन्न धर्मों में चाहे जितना अन्तर हो, चाहे जितनी मान्यताएँ हों, परन्तु जीव के रक्षण के बारे में सब धर्मों में कथन है। बाहरी दृष्टि से विभिन्न सम्प्रदायों में कई तरह के रिवाज हैं। कोई मुण्डन कराते हैं, कोई लोच कराते हैं तो कोई चोटी रखते हैं। कोई साधु बनने के बाद जटा (बाल) बढ़ाते हैं। वेश और भाषा की दृष्टि से भी अनेक भेद हैं। कोई वस्त्र धारण करते हैं, कोई धारण नहीं करते हैं। कोई लंगोटी लगाते हैं तो कोई एक वस्त्र ही पहनते हैं। कोई श्वेत वस्त्र पहनते हैं तो कोई गेरुआ पहनते हैं। कोई राख लगाते हैं और कोई धूनी रमाते हैं।

इस प्रकार कितने ही भेद और मान्यताएँ मिलेंगी। परन्तु दया के विषय में किसी में भेद नहीं मिलेगा। हिंसा को आज तक किसी ने भी धर्म नहीं कहा है। दया, धर्म है। यह बात सारे मत स्वीकार करते हैं। दया सबको मान्य है, भेद अन्य अपेक्षाओं से मिलते हैं।

संसार में भय सात हैं-1. इहलोक भय, 2. परलोक भय, 3. आदान भय, 4. अकस्मात् भय, 5. आजीविका भय, 6. अपयश भय और 7. मरण भय। इनमें मृत्यु का भय सर्वाधिक भयानक होता है। कोई जीव चाहे नाली की गन्दगी में रहने वाले कीड़े हों, चाहे सर्वार्थ सिद्ध विमान में रहने वाले देव हों, एक इन्द्रिय वाले हों या पूर्ण विकसित सभी इन्द्रियों से युक्त हों; मरना कोई नहीं चाहता। दु:खी से दु:खी प्राणी, घोर दु:खी प्राणी भी मरना नहीं चाहता। गन्दगी में रहने वाले कीड़ों को क्या आनन्द है, कौनसी सुन्दर जगह है, क्या खाने को मिलता है, परन्तु फिर भी वे जीना चाहते हैं। मरने की बात सबको बुरी लगती है।

तीर्थंकर महावीर ने सभी प्रकार की आराधनाओं का वर्णन किया, धर्म का स्वरूप कहा तो सबसे पहले उन्होंने अहिंसा को धर्म बताया-**धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा-संजमो-तवो** अर्थात् धर्म उत्कृष्ट मंगल है, अहिंसा उनमें सर्वप्रथम है। अहिंसा और दया के बाद ही सारे धर्म हैं।

आज स्थितियाँ भिन्न हो गई हैं। मानव का सोचना अलग हो गया है। जब तक दूसरे का दु:ख अपना दु:ख नहीं समझा जाएगा, तब तक इस दया की आराधना नहीं हो सकती। चाहे भगवान महावीर की वाणी में कहा जाए या अन्य सन्त-महापुरुषों की वाणी में कहा जाए, जीवदया के बगैर धर्म की महिमा नहीं है। किसी कवि ने कहा है-

चार वेद मुख से पढ़्या, समझ बिना सब झूठ।
जीवदया पाली नहीं, तो सब माथा कूट।।

कितना ही समझ लिया, विद्वान् हो गये, धर्म के मर्मज्ञ हो गये, परन्तु इन सबके होते हुए भी यदि जीवदया नहीं जानी तो सब व्यर्थ है। सम्बोध प्रकरण सूक्त में कहा है-

किं ताए पढियाए, पयकोडिए पलालभूयाए।
जं इत्तियं न नायं, परस्स पीडा न कायव्वा।।

अर्थात् जिसने परपीड़ा को नहीं जाना तो उसके लिए करोड़ों श्लोकों का अर्थ जानने से भी कोई लाभ नहीं है। चाहे किसी को कितनी भी भाषाओं की जानकारी हो जाए, चाहे कोई कितने ही दर्शनों का अभ्यास कर ले, हरेक धर्म का अच्छा जानकार हो जाए, अनेक शास्त्र और करोड़ों पद याद कर ले, लेकिन यह सब घास के पूले इकट्ठे करने जैसा ही होगा, अगर व्यक्ति ने इतना-सा भी नहीं जाना कि दूसरों को दु:ख नहीं देना चाहिये। सारी समझ का सार यही है कि दूसरों को दु:ख नहीं देना चाहिये, पीड़ा नहीं पहुँचानी चाहिये। जिसने यह एक बात समझ ली, उसने सबकुछ समझ लिया और यह एक बात यदि किसी के समझ में नहीं आई तो समझिये उसे कुछ नहीं आया। कम-से-कम शब्दों में कहें तो 'पाप नहीं करना।' इन तीन शब्दों को आचरण में ढालने वाले भी मोक्ष पा लेते हैं।

गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन से कह रहे हैं कि हे अर्जुन! दुर्भाव की बुद्धि, तामसिक बुद्धि, विकारी बुद्धि, अन्धकार से आवृत्त, मोह और पाप से घिरी हुई बुद्धि अधर्म में धर्म मानती है। विपरीत बुद्धि पाप को अच्छा मानती है। जंगल काटे जा रहे हैं और आप कह रहे हैं कि घर सजाया जा रहा है, फर्नीचर तैयार हो रहा है। न जाने कितने प्रकार की लकड़ी के उपयोग और दुरुपयोग किये जाने लगे हैं। हरे-भरे पेड़ काटे जा रहे हैं और आप उसे सजावट मान रहे हैं। जीव मर रहे हैं और आप उसे उत्पादन मान रहे हैं। मांस के लिए प्रतिदिन करोड़ों की संख्या में मूक-निर्दोष प्राणियों को मौत के घाट उतार दिया जाता है। चमड़े के पर्स, जूते आदि के लिए भी पशुओं को मारा जा रहा है।

इधर, परिवार-नियोजन के नाम पर गर्भपात और अनियन्त्रित भोग को समर्थन दिया जा रहा है। आश्चर्य है यह सब 'परिवार-नियोजन' के नाम पर हो रहा है और इसे तरक्की नाम भी दिया जा रहा है। इन कार्यों में न तो

अभयदान है, न जीवनदान और न ही किसी का उत्थान है। व्यर्थ के पाप किये जा रहे हैं। भ्रूण-हत्याएँ की जा रही हैं। अविकसित बच्चों को मारा जा रहा है और नाम दिया जा रहा है परिवार-नियोजन का। बच्चे को तो सन्त-तुल्य माना जाता है। यों बच्चे बिना व्रत के मारे जाते हैं, परन्तु उनके अन्दर छल-कपट की, झूठ बोलने की, ठगने की भावना नहीं होती है। जो प्रेम से बोलता है, बच्चा उसके पास चला जाता है। कहा जाता है कि-

जो भाखे बालक कथा, ते भाखे मुनिराय।
जो भाखे वरकामिनी, एता न निष्फल जाय।।

जो बात बालक के मुँह से, सन्तों के मुँह से निकलती है, वह सच हो जाती है। ऐसे सच बोलने वाले, किसी को दु:ख नहीं देने वाले मासूम बच्चों को जन्म से पहले खत्म किया जा रहा है। एक वनस्पति का जीव भी जो घर में पौधे के रूप में गमले में लगा हुआ है, उसके लिए भी यदि कोई अनर्गल सोचता है तो वह भी कुम्हला जाता है। तीर्थंकर भगवान महावीर ने कहा कि वनस्पति को भी भय लगता है। हिंसाकारी शब्द सुनने मात्र से पेड़-पौधे डरते हैं और कुम्हला तक जाते हैं। जब एकेन्द्रिय जीवों पर भी असर होता है तो पञ्चेन्द्रिय जीवों पर क्यों नहीं होता है? अवश्य होता है।

दयालु व्यक्तियों को ही प्राणियों के मर जाने से दु:ख होता है, खेद होता है। सुना है कहीं-कहीं पानी में कीड़े आते हैं तो उन्हें हटाना पड़ता है और वे मर जाते हैं तो बहिनें आकर प्रायश्चित्त करती हैं कि महाराज! जीव मर गये। एक तरफ, छोटे-छोटे जीवों की जाने-अनजाने में विराधना पर भी दु:ख होता है। दूसरी तरफ, दु:खद आश्चर्य होता है कि पञ्चेन्द्रिय जीवों को इञ्जेक्शन लगाकर तड़फा-तड़फाकर मारा जा रहा है। आदमी वासना को नहीं रोकता है और अपने पाप एवं असंयम का दण्ड दूसरों को देता है।

भगवान महावीर ने अहिंसा की बात सबसे पहले कही। सत्य, अचौर्य, शील और अपरिग्रह को बाद में रखा। यानी कि हिंसा सबसे बड़ा पाप है और अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। इस अहिंसा धर्म में सभी धर्म समाए हुए हैं। दया है तो सत्य है, नहीं तो कुछ नहीं। सत्य भी बोल रहे हैं, परन्तु किसी को खोटा दिखाना, नीचा दिखाना, दु:खी करने की भावना है तो वैसा सच भी पाप है। दशवैकालिकसूत्र (7.12) में कहा है कि-

तहेव काणं काणे त्ति, पंडगं पंडगे त्ति वा।
वाहियं वा वि रोगित्ति, तेणं चोरेत्ति नो वए।।

यदि किसी व्यक्ति के एक आँख नहीं है और आप उसे काणा कहें तो यह सच होने के बावजूद बोलने योग्य शब्द नहीं है। ऐसी भाषा से मन की दया और करुणा गायब हो जाती है। काणे को काणा कहना, उसे पीड़ा देना है। चोर को भी चोर नहीं कहें। मैं अपने लिए ही कहूँ कि यदि मैं भगवान महावीर की आज्ञा का पालन नहीं करूँगा तो किसी दृष्टि से यह अचौर्य धर्म की अवहेलना है। कुछ लोग दिखाते कुछ और हैं और भीतर में कुछ और होते हैं। दिखाते हैं कि पाप का त्याग है और भीतर में पाप का सेवन करते हैं। ऐसा करना भी चोरी है और यदि ऐसा करने वाले को चोर कहा जाए तो उसे बुरा लगेगा। इसलिए वचन प्रयोग में भी मन की करुणा आवश्यक है। बिना करुणा और दया के प्रयुक्त सत्य भी सत्य नहीं है।

वनस्पति की दया करते हैं, यह अच्छी बात है, लेकिन भ्रूणहत्या के समय भी दया की यह बात ध्यान में रखनी चाहिये। यदि भ्रूणहत्या के समय दया की यह बात याद नहीं रहे तो समझना चाहिये कि आपने अभी दया का स्वरूप नहीं समझा है। संसार की सारी मान्यता वाले दया को धर्म मान रहे हैं। आज दया का स्वरूप समझने और समझाने की जरूरत है। धर्म का मूल दया और अनुकम्पा है। सम्यग्दृष्टि में यदि दया नहीं तो कुछ नहीं। इसलिए अपनी दृष्टि विकसित कीजिये और ऐसे प्रत्याख्यान कीजिये, जिनसे पाप छूट जाएँ। दया की धारणा कीजिये। दया और दान की ओर बढ़ने का लक्ष्य रखिये। प्राणातिपात को छोड़कर दया की ओर बढ़ेंगे तो आपको शान्ति मिलेगी।

10 मार्च 2023
जिनवाणी 15
ISSN 2249-2011

प्रवचन

धर्मोत्तम पुरुष आचार्यश्री धर्मदासजी म.सा.

भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा 6 अक्टूबर, 2022 को जैन स्कूल, महामन्दिर-जोधपुर में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नीरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। -सम्पादक

बन्धुओं!

आकृति की समानता होते हुए भी प्रकृति की विभिन्नता के कारण से व्यक्ति-व्यक्ति में अन्तर होना स्वाभाविक है। विचारों की भिन्नता से पुरुषों के होने वाले चार विभाग आपको बताये जा रहे हैं, जिनमें एक है-उत्तम पुरुष, दूसरा है-मध्यम पुरुष, तीसरा है-अधम पुरुष और चौथा है अधमाधम पुरुष।

तृतीय अंग सूत्र ठाणांग में तीन प्रकार के उत्तम पुरुषों का वर्णन मिलता है, जिसमें एक है-धर्म उत्तम पुरुष, दूसरे-कर्म उत्तम पुरुष और तीसरे है-भोग उत्तम पुरुष। मैं अभी न तो कर्म उत्तम पुरुष का और न ही भोग उत्तम पुरुष का वर्णन कर रहा हूँ, बल्कि आज धर्म उत्तम पुरुष कैसे होते हैं और कौन होते हैं? इस विषय में चर्चा करनी है।

आजकल एक चलन चला है कि लोगों से प्रश्न कुछ अलग पूछा जाता है और उसका समाधान कुछ अलग घुमा-फिराकर दिया जाता है। एक व्यक्ति ने दूसरे से पूछा-''आपके पुत्र कितने हैं?'' उस भाई का जवाब था-''मेरे पड़ोसी के पाँच पुत्र हैं।'' पूछा क्या गया और जवाब क्या दिया गया, इससे सही समाधान प्राप्त नहीं होता है। हमें पूछे गये प्रश्न का सही-सही उत्तर देना है।

हाँ तो, धर्म उत्तम-पुरुष कौन हैं? जो धर्ममय जीवन जीता है और धर्म के लिए जीवन जीता है-वह धर्म उत्तम पुरुष है। वह दृढ़धर्मी और प्रियधर्मी होता है। जो धर्म के लिए प्राण तक न्योछावर कर देता है, वह धर्म उत्तम पुरुष है।

जिनशासन का इतिहास बहुत स्वर्णिम रहा है। इस शासन में अनेक महापुरुष अपने जीवन को महानता के शिखर तक लेकर गये हैं। मारणान्तिक उपसर्ग, कष्ट आने पर भी जिनशासन की रक्षा के लिए, धर्म के गौरव के लिए उन्होंने अपने प्राणों को भी हँसते-हँसते त्याग दिया है। उन्होंने धर्म के लिए ही जन्म धारण किया था, तो धर्म रक्षा के लिए ही मरण का वरण कर अपने नाम को इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णिम अक्षरों में अंकित कराकर शासन का गौरव वर्धापित किया। उन महापुरुषों के जीवन का एक-एक प्रसङ्ग आत्मसाधना में आगे बढ़ने वाले साधकों के मन में संयम-जीवन के प्रति नव उत्साह का सञ्चार कर देता है और लक्ष्य प्राप्ति के लिए अदम्य साहस जाग्रत कर देता है।

धर्म उत्तम पुरुषों की शृङ्खला में युग प्रधान आचार्यप्रवर श्री धर्मदासजी म.सा. हुए। आपका जिनशासन तथा स्थानकवासी परम्परा पर महान् उपकार रहा है। आपके उपकारों का स्मरण करते हुए भक्तों का हृदय भक्ति और श्रद्धा से सरोबार हो जाता है।

हाँ, तो आज का दिन उस महापुरुष के गुणगान करने का तथा उनके उपकारों को स्मरण करने का है। दीर्घ समयावधि व्यतीत होने से अनेक पूर्वाचार्यों की जन्मतिथि तथा स्वर्गगमन तिथि पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं होती है। पुराने महापुरुषों का कब जन्म हुआ, कब मरण हुआ, तिथि-मिति मिले न भी मिले, पर उन्होंने जीवन काल में क्या विशेष किया, इस सम्बन्ध में उल्लेख श्रुत परम्परा से तथा ऐतिहासिक पुस्तकों में प्राप्त होते हैं।

आचार्यश्री धर्मदासजी म.सा. का जन्म कोई चैत्र शुक्ला ग्यारस बताते हैं तो कोई विजयादशमी को उनका

जन्म बताते हैं। न जन्म का महत्त्व है, न मरण का महत्त्व है, महत्त्व है जन्म-मरण के बीच उस महापुरुष ने अपना जीवन कैसा जीया? महत्त्व है उस महापुरुष के व्यक्तित्व और कृतित्व का।

आज लाखों लोग आते हैं, जाते हैं, पर जिसने संयम अंगीकार करके आत्मकल्याण के साथ शासन-प्रभावना के निमित्त कुछ काम किया है, उसका जीवन स्मरणीय और वन्दनीय बनता है।

हाँ, आज हमें पूज्य आचार्यश्री धर्मदासजी म.सा. का जीवन जानना है। आपश्री का जन्म अहमदाबाद के पास में सरखेज नामक ग्राम में हुआ। पुण्यवान जीवों का जन्म उत्तम कुल और उत्तम क्षेत्र में ही होता है। उस गाँव में उस समय 700 घर थे और सभी जैनधर्म के अनुयायी थे। उस समय जैनधर्म जात-पात को नहीं मानकर आचरण को प्रधानता देता था।

उनके पिताजी का नाम जीवनदासजी तथा माँ का नाम डाहीबाई था। समय के साथ धर्मदासजी 8 वर्ष के हुए, तब उन्हें विद्याध्ययन के लिए पाठशाला भेजा। प्राचीन समय में प्रारम्भ में माता-पिता संस्कार देते थे, फिर कुछ उम्र बढ़ने पर, थोड़ी समझ आने पर ही विद्या हेतु गुरुकुल आदि में प्रवेश कराते थे। लेकिन आज की स्थिति बड़ी विचित्र और चिन्तनीय है कि बच्चा 2 साल का होता है, अच्छे से बोलना भी नहीं सीख पाता है, उससे पहले माता-पिता उसका स्कूल में प्रवेश करा देते हैं, क्योंकि माता-पिता के पास संस्कार देने का समय नहीं है, दोनों व्यवसाय या नौकरी में लगे हुए हैं। अपनी सम्पत्ति बढ़ाने में जीवन पूरा कर रहे हैं, लेकिन एक बात का ध्यान रखना कि सन्तति को सम्पत्ति देने से नहीं, अपितु संस्कार देने से ही उनके जीवन का निर्माण होगा। बिना संस्कारों के दी हुई सम्पत्ति आपके खुद के लिए भविष्य में विपत्ति बन जायेगी।

आज की माताएँ तो खुश होती हैं-चलो बच्चा स्कूल गया। चार-पाँच घण्टे तो मुझे हैरान, परेशान नहीं करेगा, लेकिन यह सोच भावी पीढ़ी में संस्कारों का रोपण नहीं कर सकती।

हाँ, हमारा प्रसङ्ग पूज्य श्री धर्मदासजी म.सा. का चल रहा था। 8 वर्ष की वय में पाठशाला में प्रवेश किया और सर्वप्रथम पोतियाबन्ध श्रावकों से धर्म तत्त्व सुनने को मिला।

आप जानते हैं, पोतियाबन्ध कौन होते हैं? इस परम्परा के श्रावक लाल रंग के वस्त्र पहनते थे, एक पात्र रखते थे, सिर पर चोटी रखते थे और सिर पर सफेद पोतिया-बाँधते थे। वे पैदल परिभ्रमण कर धर्म कथाओं को सुनाकर जनसाधारण को प्रभावित करते थे। विशुद्ध श्रमण परम्परा की चर्या को ये पोतियाबन्ध जनसाधारण से गोपनीय रखते थे। साथ में प्ररूपणा करते थे कि वर्तमान में शुद्ध-संयम की पालना सम्भव नहीं हो सकती।

एक बार पोतियाबन्ध श्रावकों के साथ धर्मदासजी भगवतीसूत्र शतक 20 उद्देशक 8 का स्वाध्याय कर रहे थे, उसमें वर्णन पढ़ा भगवान महावीर का शासन पाँचवें आरे में 21,000 वर्ष तक चलेगा और शासन के अन्त में भी एक श्रमण, एक श्रमणी, एक श्रावक और एक श्राविका रहेगी।

आगम के इस एक कथन ने धर्मदासजी के वैराग्य में निमित्त बनकर उनकी सुप्त चेतना को जाग्रत कर दिया, यह सामर्थ्य आगम-वाणी में ही है। इसलिए स्थानकवासी परम्परा आगमों को प्रमुख स्थान देती है, आगम ज्ञान के समक्ष अन्य ग्रन्थादि गौण हैं।

आगमों से ही आत्मकल्याण हुआ है, हो रहा है और भविष्य में भी होगा। आज अन्य साहित्य पढ़ने में जितनी तत्परता है, उतनी आगम पढ़ने में नहीं हो रही है। आगम पढ़ने की बजाय नई-नई किताबें पढ़ने का शौक बढ़ रहा है।

आज चतुर्विध संघ को इस विषय में विचारने की आवश्यकता है। आगम पढ़ने में उत्साह जगाने की और श्रद्धा बढ़ाने की आवश्यकता है।

धर्मदासजी के मन में चिन्तन चला कि श्रेष्ठ

जीवन बनाने के लिए श्रेष्ठ सद्गुरु की खोज जरूरी है। वे न जाने कितने ही सन्त-मुनिराजों के पास श्रेष्ठ संयम जीवन, शुद्ध संयम चर्या की खोज करने के लिए गए। उन्होंने आचार्य धर्मसिंहजी, आचार्य जीवराजजी जैसे अनेक महापुरुषों से सम्पर्क किया, लेकिन कतिपय मान्यताओं में एकमत न होने की स्थिति में उन्होंने आखिर में तेले के तप के साथ माता-पिता की आज्ञा लेकर अहमदाबाद के बाहर बादशाही बाड़ी में स्वयं ने दीक्षा अंगीकार कर ली।

अगले दिन पारणे के लिए भिक्षार्थ ग्राम में विचरण कर रहे थे और सहज में एक कुम्हार के घर पहुँच गए। संयोग से उस दिन कुम्हार-कुम्हारिन में अच्छी खासी खटपट हो गई थी। कुम्हार आवेश में था। आवेश में व्यक्ति उचित-अनुचित का भान भूल जाता है। क्रोध व्यक्ति को विवेक-विकल कर देता है, यही स्थिति उस कुम्हार की बनी हुई थी। कुम्हार ने सन्त घर में भिक्षार्थ आया हुआ जान पास में पड़ी राख दोनों हाथों में भरकर धर्मदासजी के पात्र में डाल दी। धर्मदासजी ने समत्व के मार्ग का चयन किया था और वे उस उपसर्ग, कष्ट को भी कर्मनिर्जरा में इष्ट मान रहे थे। उन्होंने उस राख में छाछ मिलाकर समभाव से पारणा कर लिया।

एक दिन आचार्य धर्मसिंहजी म.सा. से मिलना हुआ, पारणे के प्रसङ्ग की चर्चा भी हुई। श्री धर्मसिंहजी म.सा. ने फरमाया-''जिस तरह पात्र में राख चारों तरफ फैल गई, उस तरह आपका शिष्य समुदाय चारों दिशाओं में फैलेगा। राख के बिना जैसे कोई घर नहीं होता, उसी प्रकार आपके अनुयायी भी हर गाँव में होंगे।'' बात सच निकली, आचार्यश्री धर्मदासजी म.सा. के 99 शिष्य हुए, जिनमें 22 प्रमुख शिष्यों का पूरे भारत में विचरण हुआ। इस कारण 22 सम्प्रदाय के नाम से आपका समुदाय वर्तमान में जाना जाता है। यह समुदाय पूरे देश में शासन की प्रभावना कर रहा है।

आपने अपने जीवनकाल में शासन की महती प्रभावना की, अनेक राजाओं को प्रतिबोध दिया। एक बार ग्वालियर के राजा को सर्प ने काट लिया, सभी ने राजा को मृत घोषित कर दिया, अन्तिम संस्कार की तैयारी हो गई थी। आपको ज्ञात होने पर आपने भक्तामर स्तोत्र के एक श्लोक से राजा का ज़हर उतार दिया, राजा पूर्ण स्वस्थ हो गया और आपका भक्त बन गया। आपने उसे प्रतिबोध देकर जीवनभर शिकार नहीं करने की प्रतिज्ञा करवाई।

आचार्य पूज्य श्री धर्मदासजी म.सा. के जीवन का एक अन्तिम प्रसङ्ग है-जिसको सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं और आपकी शासननिष्ठा के प्रति जन-जन नतमस्तक हो जाता है।

एक बार राजा भोज की धारानगरी में आपके एक सन्त ने शरीर की नाजुक स्थिति जानकर संथारा कर लिया। संथारे के प्रभाव से सन्त की आँखों में तेजस्विता तो आई ही, शरीर में रोगों की मुक्ति से स्वास्थ्य में एकाएक सुधार हो गया। स्वास्थ्य में सुधार से मुनि का मन चञ्चल हो गया। संथारे से विचलित होने की स्थिति बन गई। यह समाचार आचार्यश्री धर्मदासजी म.सा. के पास पहुँचे, आपने उसी समय कहला दिया कि मैं धारानगरी आ ही रहा हूँ, जब तक मैं वहाँ नहीं आऊँ तब तक संथारे में स्थिर रहना। उग्र विहार करते हुए आचार्यश्री धारानगरी पधारे, सायंकाल का समय था, गोचरी में सूखी बाटियाँ प्राप्त हुईं और निर्दोष धोवन प्राप्त नहीं हुआ। उस आहार को ग्रहण कर आचार्यश्री ने चौविहार के प्रत्याख्यान ग्रहण कर लिए। प्रात:काल होते ही शिष्य के पास पहुँचकर उसे संथारे में स्थिर करने हेतु आत्मकल्याण की हितशिक्षा दी, संथारे से डिगने पर शासनहीलना से अवगत कराया, लेकिन सन्त की स्थिरता नहीं बनने पर आचार्यश्री ने उसे पाट से उतारकर स्वयं शासन गौरव को सुरक्षित रखने के लिए आजीवन चौविहार संथारा ग्रहण कर लिया। एक दिन पहले बाटियों का आहार किया हुआ था। पर्याप्त मात्रा में धोवन पानी भी ग्रहण नहीं हुआ था। संथारा ग्रहण करके आत्मभाव में रमण करने लगे। 9 दिन तक संथारे में रमण

करते हुए समभाव की साधना के साथ देह के ममत्व को त्यागकर मात्र आत्मकल्याण और शासन रक्षा के लक्ष्य से इस देह का त्याग कर दिया।

शासन प्रभावना की दृष्टि से ऐसा उदाहरण अन्यत्र नहीं मिलता। इन महापुरुषों की दृढ़ धर्मश्रद्धा से ही आज भगवान महावीर की शुद्ध श्रमणचर्या पाँचवें आरे में भी देखने को मिल रही है, इन धर्म-उत्तम पुरुषों के जीवन से हम और आप यही प्रेरणा लें कि-'प्राण जाय लेकिन प्रण नहीं जाये।'

हम भी, आप भी शासन प्रभावना और शासन रक्षा में अपने जीवन का सर्वस्व अर्पण कर इस भव में और परभव में आत्मिक आनन्द का अनुभव करें, इसी भावना के साथ ....

■

वाणी-विवेक

संकलनकर्त्ता : श्री राजेन्द्र पारख

- शस्त्र के आक्रमण से होने वाला वैर शायद मौत तक टिके, किन्तु शब्दों के आक्रमण से होने वाला वैर जन्म-जन्म तक चलता है।
- अपनी जबान पर विवेक का फिल्टर एवं अक्वागार्ड फिट हो जाए तो शब्द प्रिय और शुद्ध हुए बिना नहीं रहेंगे।
- वाणी और विवेक की मित्रता सध जाए तो वचन को गुप्त रखना आसान हो जाएगा, वरना वाणी का अणुबम कब विस्फोट कर दे, कहाँ धमाका बोल दे, कितनी तबाही कर दे और कब तबाही के कटघरे में खड़ा कर दे, कहा नहीं जा सकता।

-101, वर्द्धमान स्ट्रीट, पावटा बी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का विवरण

(फार्म 2 नियम 8 देखिए)

1.	**प्रकाशन स्थान**	::	जयपुर
2.	**प्रकाशन अवधि**	::	मासिक
3.	**मुद्रक का नाम**	::	डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर
4.	**प्रकाशक का नाम**	::	अशोक कुमार सेठ
	राष्ट्रीयता	::	भारतीय
	पता	::	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
			दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
5.	**सम्पादक का नाम**	::	डॉ. धर्मचन्द जैन
	राष्ट्रीयता	::	भारतीय
	पता	::	आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान
			ए 9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.)
6.	**उन व्यक्तियों के नाम व पते**	::	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
	जिनका पत्र पर स्वामित्व है		दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

मैं, अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है।

हस्ताक्षर-**अशोक कुमार सेठ**

मार्च 2023 **प्रकाशक**

10 मार्च 2023
जिनवाणी 19
ISSN 2249-2011

प्रवचन

परिणति और प्रवृत्ति

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में 6 जून, 2017 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। -सम्पादक

बन्धुओं!

परिणति और प्रवृत्ति का अन्योन्याश्रय अर्थात् पारस्परिक आश्रय का सम्बन्ध है। जैसे-मुर्गी से अण्डा और अण्डे से मुर्गी का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है वैसे ही द्रव्यकर्म से भावकर्म और भावकर्म से द्रव्यकर्म का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। पहले का बँधा कर्म जिसको हम कृत-दोष या किया हुआ दोष या फिर भूतकाल के संस्कार कह सकते हैं, उसका एक अंश वर्तमान में उदय में आ रहा है। वह ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय आदि-आदि के रूप में प्रभाव दिखा रहा है। ये कर्म बाहर की वस्तु, भीतरी अवस्था, परिस्थिति से विशेष सम्बन्ध रखते हैं। शरीर का हुलिया-डुलिया, आकार-प्रकार मुख्यत: नाम-कर्म से है और इसमें गोत्र का सहकार रहता है।

चार घाती कर्म हैं। एक दूनी दो, दो दूनी चार, चार दूनी आठ अर्थात् पहला, दूसरा, चौथा और आठवाँ कर्म घाती कर्म है। बचे हुए क्रम संख्या तीन, पाँच, छह और सात के चार अघाती कर्म हैं। चार घाती कर्म हैं- ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय कर्म। चार अघाती कर्म हैं-वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र। अघाती कर्म प्रापक होते हैं। ये चारों बाहर से कुछ न कुछ प्राप्त कराने वाले हैं, जबकि घाती कर्म बाहर से कुछ नहीं दिलाते। श्वास ले रहे हैं, बोल रहे हैं यह अघाती कर्म का उदय है। ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय आवरण करते हैं। इसलिए ये दोनों आवारक कर्म हैं। विघ्न करने वाला है अन्तराय। इसलिए यह विघ्नात्मक कहलाता है। विकार उत्पन्न करने वाला होने से मोहनीय कर्म विकारक है। इन कर्मों के कारण आत्मगुणों पर आवरण होता है, आत्मगुणों का विस्मरण होता है और आत्मगुणों का अपहरण होता है। विस्मरण के तीन प्रकार हैं-स्वरूप का विस्मरण, कर्त्तव्य का विस्मरण और प्रभु का विस्मरण। अपने स्वरूप को भूल जाना, अपनी ड्यूटी भूल जाना और प्रभु को भूल जाना। अघाती कर्म तो केवल बाहर की चीज को दिखाता है। भीतरी वृत्ति-प्रवृत्तियों का निर्धारक मोहनीयकर्म होता है। मोहनीयकर्म के कारण ही तीन खण्ड का स्वामी हो या छह खण्ड का अधिपति वह प्राप्त सुख का सदुपयोग या दुरुपयोग करता है। सदुपयोग-दुरुपयोग से लाभ-अलाभ प्राप्त होता है। छह खण्ड का नरेश नरक का मेहमान भी बन सकता है। ये सब मोहनीय-कर्म की विविध छटाएँ हैं।

यक्ष आदि नीच गति के देव उन्माद करते हैं। कभी किसी ने गलत जगह पर पेशाब कर दी, तो यक्ष विचार करता है कि इसने मेरा स्थान अपवित्र कर दिया है और स्थान अपवित्र करने वाला यक्ष के उन्माद का शिकार बन सकता है। साधु-साध्वी प्रतिदिन शक्रेन्द्र महाराज की आज्ञा है, ऐसा बोलते हैं। साधु-साध्वी किसी के मकान में ठहरेंगे, तो भी आज्ञा लेकर ठहरते हैं। उन्हें कहीं परठना भी हो तो शक्रेन्द्र महाराज की आज्ञा अवश्य लेते हैं। आज्ञा लेने में कभी भूल रह जाय तो वहाँ के अधिष्ठाता देव नाराज हो सकते हैं। आज्ञा लेने की भगवान की आज्ञा है और आज्ञा की आराधना नहीं होती है तो कष्ट मिल सकता है, चोरी की बात भी कही जा सकती है। गृहस्वामी है तो उसकी आज्ञा से और कोई

नहीं भी है, तो शक्रेन्द्र महाराज की आज्ञा से साधु जमीन तक का उपयोग करता है।

एक है जिसका नाम है-एक्स, वाई, जेड। उसके साथ उपद्रव हो गया। ठीक करने वाले ने ध्यान नहीं रखा, इसलिए ठीक करने वाला भी उपद्रव की चपेट में आ गया। पचास प्रतिशत से अधिक तो मनोवैज्ञानिक प्रभाव वाले होते हैं। फिर भी अनुभूति के आधार पर कुछ को ऊपर की हवा लग गई, कहने वाले ऐसा कहते हैं। आप-हम तो क्या? शास्त्र में कुछ वर्णन मिलता है, कुछ सुनने-देखने में आता है, ऊपर ही हवा कहो या किसी यक्ष का उपद्रव, ये सारे तो होते ही हैं पर मोह का उन्माद सबसे भयंकर होता है।

अधिकतर संकट भय-संज्ञा के कारण होते हैं। भय है, ऐसा कहने-सुनने वाले भय को बढ़ा लेते हैं। किसी को कभी भी भय या डर लगे तो पूरी ताकत से नमस्कार मन्त्र बोल लें। लोगस्स का पाठ गुनगुना लें। डर है, तो भी रहेगा नहीं। आप इसे आजमा सकते हैं।

सुश्रावक गोविन्दजी के पुत्र नवरत्नजी जैन, बरवाड़ा वाले की शादी हुई। शादी के बाद उनकी पत्नी की आँखों की रोशनी अचानक जाती रही। भजन के माध्यम से इस प्रसङ्ग को कहा भी है-

बरवाड़ा की एक वधू पर, संकट भारी आया।
नेत्र ज्योति चली गई अचानक, सबका मन घबराया।।
मंगलिक देकर गुरुदेव ने, बचा लिया जीवन।।

हमारी मूल बात पाप की चल रही है। गुरु हस्ती महापुरुष थे। मैं उस महापुरुष की अंगुली का एक कण भी बन जाऊँ तो बड़ी बात है। सन् 1974 के चातुर्मास की बात है। सवाईमाधोपुर क्षेत्र में पर्युषण में भादवा बदि चौदस को रोट बनाते थे। वहाँ रोट का त्यौहार बड़ा त्यौहार माना जाता है। आप जैसे लौकिक पर्व दीपावली को प्रमुखता देते हैं, पोरवाल समाज में रोट को भी बहुत महत्त्व दिया जाता था। घर के सारे सदस्य वे चाहे इन्दौर रहते हों या जोधपुर, कहीं भी क्यों न रहते हों, रोट पर सभी घर पर पहुँचते थे। आपके इधर चूँटिये की मौण डाली मोटी रोटी या बटिया बनाते हैं, वैसे ही रोट बनता है। उन लोगों की मान्यता रही कि हम रोट नहीं बनायेंगे तो देवी-देवता नाराज हो जायेंगे। हमारे यहाँ कोई उत्पात भी हो सकता है। किसी का बच्चा मर सकता है तो बड़ा भी जा सकता है।

सन् 1974 में जब गुरु हस्ती का चातुर्मास सवाईमाधोपुर में था, तब वहाँ व्यक्ति-व्यक्ति के मन में यह भावना घर कर गई कि रोट नहीं करने पर उत्पात होगा। आज तो वहाँ भी यह स्थिति नहीं है। हाँ, फिर भी दस प्रतिशत के लगभग लोगों की वैसी ही मान्यता है।

आचार्य भगवन्त के चिन्तन में सामान्य लोगों का भी पूरा खयाल था। चातुर्मास में उस समय दर्शनार्थियों के भोजन हेतु दो रुपये का कूपन रखने के पीछे भावना यही थी कि संघ पर अधिक भार न पड़े। वह कूपन की पद्धति तेरापंथी समाज में और आचार्य विद्यासागरजी महाराज के यहाँ आने वाले दर्शनार्थियों के लिए आज भी है। सन् 74 में आज जैसा स्थानक नहीं था। बंसल भवन किराये पर दिया जाता था, लेकिन आचार्य भगवन्त ने वहाँ चातुर्मास किया तो उन्होंने कह दिया- ''महाराज के चातुर्मास के लिए निःशुल्क दूँगा।'' सवाईमाधोपुर में बंसल भवन में गुरु महाराज चातुर्मासार्थ विराजे, प्रवचन सड़क पर होता था। चौमासे में बड़ी कठिनाई थी। उस समय चौमासा भी पाँच महीने का था। आचार्य भगवन्त ने कहा कि मैं रोट खाने की अन्तराय तो नहीं देता, पर पर्युषण पर्व में यह प्रथा कितनी उचित है? इस पर विचार करना चाहिए।

व्याख्यान के बाद गुरु महाराज ने कहा-''यहाँ के लोगों की मान्यता है कि रोट-प्रथा नहीं की जायेगी तो किसी का बच्चा मर सकता है, घर का कोई सदस्य मर सकता है या कोई उपद्रव हो सकता है।''

आचार्य भगवन्त ने खुले रूप से कह दिया कि- ''आपके भीतर डर बैठा है। आपमें किसी के कुछ नहीं होगा, अगर हो तो हस्तीमल अभी यहीं है।'' ऐसा कब कहा जाता है जब हिम्मत हो।

दक्षिण वाले जानते हैं। खद्दरधारी कर्नाटक केसरी श्री गणेशीलालजी म.सा. के सामने कोई डर या उपद्रव की बात लेकर आता तो सीधा कहते-पचक्ख तेला। तुम्हारे घर में जिन-जिन देवी-देवताओं की फोटो हैं, ले आ। खद्दरधारी श्री गणेशीलालजी महाराज ने दक्षिण के लोगों के मन में जो भी मिथ्या मान्यताएँ थीं, उन्हें दूर किया।

हर साधक केवल आश्वस्त नहीं करता, किन्तु भय मिटाता है। हमारे महापुरुष कैसे-कैसे तेजस्वी हुए, यह तो केवल झाँकी है। गगराना में पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज विराज रहे थे। वहाँ 84 डाकू आ गए। पूरे गाँव में दशहत फैल गई। पूज्य श्री ने कहा-''सब सामायिक करके बैठ जाओ। डाकू आए, गर्दनें नीची की और लौट चले।

भय-संज्ञा से सामायिक करना दोष होता है, पर आपदा है-कष्ट है उसके निवारण के लिए सामायिक करना दोष नहीं है। आचार्य भगवन्त ने कह दिया-मैं अभी चार महीने यहीं हूँ-किसी का बाल भी बाँका हो जाय तो मुझसे कहना। रोट जो पर्युषण में चौदस को होता था, भगवन्त के विश्वास के बल पर समाज ने दशमी को मनाना प्रारम्भ कर दिया। आज भी बहुसंख्यक लोग दशमी को रोट करते हैं।

हाँ, तो हमारी बात उस वधू को लेकर चल रही थी, जिसकी नेत्र ज्योति चली गई। उस बहिन से कहा गया-''बोल पहला ऋषभदेवजी'' उससे बिल्कुल भी यह बोलने में नहीं आया। वह चौबीस तीर्थंकरों के नाम बोल नहीं सकी, यह साक्षात् देखा है। जब उससे कहा कि बिना जीभ हिलाए 24 बार लोगस्स का ध्यान करें। बड़ी मुश्किल से दो-तीन बार ही गिन पाई। शरीर में कम्पन्न शुरू हो जाता, डकारें होने लगती।

पीपाड़ में किसी को साँप ने डस लिया। अस्पताल दिखाया। डॉक्टर ने जवाब दे दिया। किसी ने कहा कि धामणगाँव के उमरावबाईसा ताराचन्दजी कांकरिया के घर पर आए हुए हैं। ताराचन्दजी का घर उपाश्रय के नजदीक है, वहाँ लेकर आने पर उसे भक्तामर का 41वाँ श्लोक सुनाया गया। श्लोक बोलने पर भी कुछ असर नहीं हुआ। इतने में किसी ने कहा-''बाईसा! इसके तो खून निकल रहा है। खून साफ किया, पट्टी बाँधी और फिर श्लोक सुनाना शुरू किया तो साँप का ज़हर उतर गया। साधना की ताकत क्या है और द्रव्य-क्षेत्र-काल देखकर कैसे उपचार हो सकता है, यह बात आप सुन गए हैं।

हमको ऐसा बढ़िया धर्म मिला। उस धर्म की शक्ति अपार है। सबसे बड़ा मन्त्र है-नमस्कार मन्त्र। इसको तो बोलें ही, साथ-ही-साथ इस पर श्रद्धा भी होनी चाहिए। श्रद्धा नहीं तो इसको बोलना, नहीं बोलना समान है। प्रवृत्ति और परिणति दोनों चाहिए। भाव सहित प्रयोग करें तो अवश्य लाभ होगा। चौबीस तीर्थंकरों के नाम वाले लोगस्स के उच्चारण में बाहर की शुद्धि तो हो ही, भीतर की परिणति भी सहायक होनी चाहिए।

हम भाव की बात करें। भाव के साथ किया गया कार्य सफल होता है। बंगारपेट की लड़की आई। हम बैंगलोर में थे, हम चार बजे बाद किसी महिला से बात नहीं करते हैं। लेकिन उस बहिन ने आवश्यक मानकर कहा कि मैं ससुराल का परिचय तो नहीं दूँगी। किन्तु इतना कहूँगी कि मेरा पति खाता भी है, पीता भी है। लेकिन विडम्बना यह है कि वह मुझे भी खाने-पीने के लिए जोर दे रहा है। मैंने ससुरजी की आज्ञा मानकर कई दिनों तक सहन कर लिया, मुझसे जितना हो सका कोशिश भी कर ली, लेकिन सब कुछ वैसा का वैसा ही है। वह बहिन एक दिन आसोज बदी दशमी को आ गई। इतनी रोई कि उस पर करुणा आ गई। उस बहिन से कहा कि तुम नमस्कार महामन्त्र का जाप और आयम्बिल शुरू कर दो।

हम विहार करके दौड़बालापुर पहुँचे, तब तक लड़का बदल गया। लड़के में परिवर्तन क्यों आया? तो कहना होगा कि आयम्बिल के साथ मंगल-मैत्री से किसी का भी मन जीता जा सकता है। भीतर में मोहनीयकर्म का उन्माद बार-बार जीव को खींचता है।

भीतर की परिणति सही नहीं हो तो बाहर की प्रवृत्ति सही नहीं हो सकती। बाहर-भीतर दोनों का जोड़ा है।

बहुसंख्यक वर्ग हो या सामान्य व्यक्ति, प्राय: 'क्यों' का प्रश्न दोष में खड़ा किया जाता है। कोई सत्य बोलता है तो उससे नहीं पूछा जाता कि तुम सत्य क्यों बोल रहे हो? वही अगर झूठ बोलता है तो पूछा जाता है-झूठ क्यों बोल रहे हो? कोई गाली दे तो पूछा जाता है कि गाली क्यों दे रहे हो? गलत व्यवहार कोई भी करे तो पूछा जाता है। चोरी करने का कोई नहीं कहता, किन्तु चोरी कर ली तो पूछा जाता है कि चोरी क्यों की?

एक सामान्य व्यक्ति पाँच सौ पाड़ों को मारकर घर पर आया है। उसका बेटा अपनी बहिन को चाकू मारने के लिए ज्यों ही तत्पर होता है तो पिता कहता है- क्यों मारता है? यहाँ क्यों, विभाव की परिणति है। जिसे ग्रन्थ नहीं आते या जो शास्त्र नहीं पढ़ता उसके पास यह बेरोमीटर तो है ही? क्यों का प्रश्न विभाव में किया जाता है। इसे पाप की परिणति भी कह सकते हैं।

अपनी स्वयं की जागृति बढ़ जायेगी, तब भीतर से आवाज आएगी कि ऐसा क्यों कर रहा है? ऐसा तो नहीं करना चाहिए। किसी ने उपवास का भाव रखा, किन्तु घरवालों ने खाना खाने के लिए कहा और खा लिया, तो तुरन्त आवाज आयेगी कि ऐसा मैंने क्यों किया? जिसने गलती होने पर आलोचना कर ली तो वह हल्का हो गया।

अपने दोषों का प्रकाशन भी सबके सामने नहीं किया जाता है। दोषों की शुद्धि किनके सामने करना? पहला-जो दोष प्रकाशन का महत्त्व जानते हैं, उनके सामने दोष व्यक्त करना। दूसरा-जो हमारे दोषी होने से दु:खी होते हैं अर्थात् हमारे सच्चे हितैषी हैं। उनके समक्ष दोष बताना। किसी की उन्नति देखकर खुश होते हैं ऐसे माता-पिता और सद्गुरु के सामने दोष प्रकट कर देना। मतलब क्या? पाप का प्रकाशन सच्चे हितैषी के सामने करना चाहिए। सच्चा हितैषी दोष-शुद्धि करने में समर्थ होता है। यह कब होगा? जब अहंकार टूटेगा, तो ही किसी के समक्ष दोष कहे जा सकेंगे।

अहं अपने दोष प्रकट नहीं करने देता। सुनने को मिला-हैदराबाद वाले किशोरजी छाजेड़ एवं गजेन्द्रगढ़ के गौतमजी बाघमार से लीम्बड़ी सम्प्रदाय के भावचन्द्रजी महाराज ने भगवान महावीर के 2,600वें जन्म-कल्याणक पर 2,000 वर्षीतप की माँग की। 3,200 वर्षीतप हुए। सौ से ऊपर तो सतियों के वर्षीतप थे। 12 साल की बच्ची है, जो स्कूल जाती है, वह प्रासुक पानी साथ लेकर जाती है। अस्सी साल के बुजुर्ग भी एकान्तर कर रहे हैं। उन भावचन्द्रजी महाराज के लिए बताया गया कि वे एक महीना पूरी मौन रखते हैं। गोचरी लाते समय कभी बोलना पड़ा तो बात अलग है। महीना पूरा होते ही इतने लोग दर्शनार्थ आते कि पूछो मत। वे महाराज सबके सामने अपने द्वारा पाप की आलोचना करते।

दूसरों से सत्कार-पुरस्कार की चाहना रखने वाला आलोचना नहीं कर सकता। आदर की कामना तब तक रहती है जब तक व्यक्ति अपनी दृष्टि में आदर के योग्य नहीं रह जाता। प्रवृत्ति सही हो तो परिणति भी सही होती है। आप इन दृष्टान्तों से सीखने का प्रयास करें।

प्रेरक-वचन

श्री पारस आँचलिया

- जिसके पास जीवन का सौन्दर्य है, उसे कभी भी शरीर का सौन्दर्य नहीं लुभाता।
- जो स्त्रियाँ अपने को सद्गुणों से सजाती हैं, वे बिना आभूषणों के भी सुन्दर लगती हैं।
- प्रभु का भजन आत्मा का सात्त्विक भोजन है।
- मरने का मौका हर जिन्दगी में मिलता है, परन्तु मुक्त होने का मौका इसी (मनुष्य भव) जिन्दगी में मिलता है।
- ताश के पत्ते कर्म ने बाँटे हैं। खेलना उन्हीं से है जो पत्ते हाथ में आ गये। कैसे खेलना यही तुम्हारा विवेक है।

-डी 159, शास्त्री नगर, जोधपुर (राजस्थान)

10 मार्च 2023
जिनवाणी 23
ISSN 2249-2011

जन्म-शती

गुरु सुदर्शन की प्रेरक जीवन-झाँकी

संघ सञ्चालक श्री नरेशमुनिजी म.सा.

हमको करके गए निहाल-गुरुवर श्री सुदर्शन लाल।
जन्म का आया सौवाँ साल-गुरुवर श्री सुदर्शनलाल।
तुमको नमो नमो त्रयकाल-गुरुवर श्री सुदर्शनलाल।

गुरु ही धर्म की राह बताकर भगवान का परिचय करवाते हैं। अतः गुरु भगवन्त कहलाते हैं। आचार्य, आर्य या गुरु एक ही भाव लिए हुए हैं। जो स्वयं में 36 गुणों के धारक हैं, भगवान के शासन को सम्भालते हैं, चलाते हैं, प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारू रूप देकर अनेकानेक शिष्यों, मुनियों, संघ और गण को सम्भालने वाले होते हैं, वे आचार्य या गुरु हैं।

ऐसी ही महानता को स्वयं में समेटे हुए थे हमारे आराध्य संघ-शास्ता, शासन प्रभावक श्रद्धेय गुरुदेव श्री सुदर्शनलालजी म. सा., जिनका जन्म शताब्दी वर्ष गतिमान है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि में गुरुदेव का परिवार मदीना गाँव का था। 300 वर्ष पूर्व उनके पूर्वज रोहतक आकर बस गए। वे धार्मिक, सामाजिक दृष्टि से उपासक थे, परन्तु रोहतक आकर तपस्वी श्री कन्हीरामजी म.सा. की चामत्कारिक प्रभावना से प्रभावित होकर वे जैनधर्म और जैन साधुओं के प्रति आकृष्ट हुए। उनमें गुरुदेव के दादाजी श्री जग्गूमलजी ने संयम सुमेरु श्री मयारामजी म.सा. से जैनधर्म की गहराई को छुआ। श्री मयारामजी म.सा. से गुरु धारणा (समकित) लेने के बाद बाबा जग्गूमलजी सहित उनका सम्पूर्ण परिवार जैनधर्म को समर्पित हो गया। बाबा श्री जग्गूमलजी ने सामायिक, रात्रि चौविहार, शीलपालन, कच्ची-पक्की हरी का त्याग करके गुरु चरणों में अपने श्रमणोपासक धर्म की नींव सुदृढ़ की। धीरे-धीरे दीक्षा की ओर उन्मुख होने लगे। रोहतक नगरी ऐसी ऐतिहासिक नगरी थी, जहाँ भगवान महावीर के भी चरण पड़े थे। मुनिराजों के निरन्तर सान्निध्य का सौभाग्य भी नगरी को मिला था। भावड़ों (ओसवालों) के सैकड़ों घर थे, जिसके कारण एक मोहल्ले का नाम भी 'भावड़ा मौहल्ला' पड़ गया-जिसे कालान्तर में बाबरा मौहल्ला कहा जाने लगा।

बाबाजी ने स्वयं धार्मिक जीवन जिया तथा बच्चों के भीतर भी धार्मिक संस्कार डाले। बाबू श्री चंदगीरामजी जो बाबाजी के बड़े सुपुत्र एवं गुरुदेव के पूज्य पिता थे, उन्होंने उस जमाने में B.A., M.A., L.LB. परीक्षाएँ उत्तीर्ण की और Gold Medal भी प्राप्त किये थे। उनकी धार्मिक रुचि इतनी थी कि अपनी तीव्र बुद्धि के बल पर वाचस्पति गुरुदेव के चरणों में एक महीने में ही सारा उत्तराध्ययनसूत्र कण्ठस्थ कर लिया था। इन्हीं की धर्मपत्नी सुन्दरीदेवीजी ने सूर्य सम तेजस्वी बुद्धि निधान बालक ईश्वर (पूज्य गुरुदेव) को 4 अप्रेल, 1923 के दिन जन्म दिया। इस माता ने अपने नाम के अनुरूप, अपने शालीन स्वभाव से सबके दिल में सुन्दर जगह बनाई, पर 4 साल के अपने बालक ईश्वर को छोड़कर हमेशा के लिए चल बसी। घर में विमाता आ गई, पर अपेक्षित आन्तरिकता नहीं बनी (दोनों में शत-प्रतिशत तालमेल न होने से)। सब तरह की अनुकूलता होते हुए भी गुरुदेव के जीवन में संघर्षों की कहानी शुरू हो गई। पिताजी भी पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाए।

शायद जीवन का निर्माण भी संघर्षों से शुरू होता है तभी तो फसल भी सूर्य, वर्षा और तूफानों के थपेड़े खाकर ही लहलहाती है। पत्थरों में से मूर्ति भी छैनी-हथोड़ों की मार से ही निकलती है। मिट्टी का घड़ा भी कुम्भकार की थाप के साथ-साथ अग्नि की ज्वालाएँ सहकर ही सिर पर शोभा पाता है। पूज्य गुरुदेव के जीवन में संघर्षों के कारण जहाँ सूनापन और निराशा आई, वहीं बाबाजी के प्यार और मुनियों के स्नेह की वर्षा ने जीवन

में हरियाली भी भरे रखी। धर्म का बीज वपन हुआ, साथ ही बाबाजी से लगाव और सन्तों से जुड़ाव स्थायी बन गया।

पिताजी चाहते थे कि अपने बुद्धिमान पुत्र को बुद्धिजीवी ही बनाऊँ। मैं वकील हूँ तो मेरा बेटा जज बने। पर उनकी बौद्धिक सोच के ऊपर बाबाजी की ममता और वात्सल्य ने अधिक जोर दिखाया। जब बाबाजी ने सन् 1937 में अचानक ही दीक्षा ले ली तो उन्होंने भी अपने मन को दीक्षा के लिए पक्का कर लिया। वे वैरागी बनकर गुरु चरणों में आ गए। बाबाजी के साथ-साथ बहुसूत्री दादा गुरुदेव श्री नाथूलालजी म.सा. की शरण और वाचस्पति गुरुदेव श्री मदनलालजी म.सा. के चरण मिले। इस तरह शुरू हो गई पूज्य गुरुदेव की संयम जीवनयात्रा।

उस जमाने में विशेष पढ़े-लिखे सन्त कम ही होते थे। पूज्य गुरुदेव ने ज्ञान में विशिष्टता हासिल करने के लिए बहुत पुरुषार्थ किया। जो पुस्तक हाथ में ली उसका आद्योपान्त सार निकालकर हर विषय पर अधिकार किया। '**अप्पणा सच्चमेसेज्जा**' के सिद्धान्त पर ज्ञानार्जन किया। कालान्तर में स्वयं गुरुदेव ने अपने गुरु भाइयों एवं सुशिष्यों को पढ़ाया। अपने जमाने के धुरन्धर व्याख्यानी होने के साथ-साथ आपने व्यवहार कुशलता भी हासिल करी। सेवा के संस्कार तो गुरुदेव के मन में बचपन से ही जम गए थे। तभी तो चाँदनी चौक में निरन्तर 9 वर्ष तक बाबाजी महाराज की सेवा के साथ-साथ अपने दादा गुरु श्री नाथूलालजी म.सा. एवं गणावच्छेदक श्री बनवारीलालजी महाराज की सेवा की। स्वयं शिखर पुरुष होते हुए भी जहाँ-जहाँ रहे, वहाँ-वहाँ सेवा का भी लाभ लिया। बड़ों के साथ-साथ छोटों की एवं शिष्यों की सेवा में भी तत्परता रखी। सेवा के माध्यम से तीर्थंकर प्रकृति का अर्जन कैसे होता है, यह उनके जीवन से परिलक्षित होता था। पूज्य गुरुदेव गुप्त तपस्वी थे, बड़े-बड़े त्याग प्रत्याख्यानों को जीवन में धारण किया, पर कभी प्रचार-प्रसार नहीं किया।

नये क्षेत्रों के निर्माण में उनका कोई सानी नहीं था। चातुर्मासों में परिश्रम एवं प्रेरणा के द्वारा जान भर देते थे। पठन-पाठन, शिक्षण-शिविरों के माध्यम से क्षेत्रों की फ़िजा बदलने की महारथ हासिल थी।

उनके चार दिन चौमासे जैसे होते थे और चौमासों का तो कहना ही क्या? जो उनके पास आता वह उनका ही हो जाता था। स्वयं की उपलब्धियों पर भी यह कहकर निर्लेप हो जाते थे कि सब गुरुदेवों की कृपा है। उनके जीवन एवं प्रवचन से प्रभावित होकर अनेकानेक कुल सम्पन्न बालकों ने उनकी चरण-शरण ग्रहण की। उन्होंने न किसी सन्त को शिष्य बनाने से रोका एवं न ही अन्य मुनियों के शिष्यों को प्रभावित करके तोड़फोड़ करने की कोशिश की। जिन्होंने भी उनके जीवन एवं संयमी संस्कारों पर दृष्टि रखी, उन्होंने सर्वत्र ही विजय प्राप्त की एवं अपने जीवन का स्तर ऊँचा उठाया।

18 जनवरी, 1942 के दिन पूज्य गुरुदेव की दीक्षा संगरूर शहर में हुई थी। पंजाब परम्परा के वरिष्ठ मुनिराजों के साथ-साथ उत्तरप्रदेश के इलाकों में विचरण करने वाले मनोहर सम्प्रदाय के सन्त भी वहाँ पधारे। दीक्षा की प्रथम रात्रि में दादा गुरुदेव बहुसूत्री श्री नाथूलालजी म.सा. ने उन्हें भविष्य की ऊँचाई का इशारा दिया था। पूज्य गुरुदेव ने अपने अन्तिम समय में भी गुरुदेव को ही याद किया और सारी विरासत सौंप अलविदा कह गए। पूज्य गुरुदेव ने कई वरिष्ठ बुजुर्ग मुनियों की सेवा की जिम्मेदारी हौंसले और श्रद्धा के साथ सम्भाली और आशीर्वादों से अपनी झोली भरी।

गुरुदेव का स्मृतिकोष भी बड़ा मजबूत था-कोई अर्धशतावधानी तो कोई शतावधानी था, पर गुरुदेव तो मानो सहस्रावधानी थे।

पंक्ति में चलने वाले हजारों-हजारों दर्शनार्थियों के नाम उन्हें एक बार पूछने मात्र से हमेशा के लिए याद हो जाते थे। वर्षों बाद आने वाले श्रावक भी गुरुदेव के श्री मुख से अपना नाम सुनकर चमत्कृत हो जाते थे।

सन् 1972 में चण्डीगढ़ में हरियाणा/पंजाब हाई

कोर्ट के चीफ जस्टिस श्री प्रेमचन्द्रजी जैन अचानक आ गए, वे रोहतक के थे और बचपन के साथी थे। गुरुदेव से पूछने लगे-मुझे पहचाना? लगभग 35 साल बाद मिले थे। गुरुदेव ने उसी क्षण फरमाया, मुझे तो नटखट प्रेमचन्द्र लग रहा है, इतने वर्षों बाद मिले और प्रसन्नता से पुरानी यादों में खो गए। गुरुदेव के पिता श्री चन्दगीरामजी की इच्छा गुरुदेव को जज बनाने की थी। गुरुदेव अदालत के जज तो नहीं बने, पर गुरुदेव का जजमेण्ट बड़े-बड़े जजों को भी मार्गदर्शन देता था। श्री प्रेमचन्द्रजी ने पूछा-गुरुदेव! दिगम्बर सही है या श्वेताम्बर? गुरुदेव ने फरमाया-न दिगम्बर सही और न श्वेताम्बर-जिसने अपने राग-द्वेष कम कर लिए, वह सही है। प्रेमचन्द्रजी दिगम्बर परम्परा से थे, पर यह निर्णय सुनकर गुरुदेव के चरणों में नत-प्रणत होकर कहने लगे कि ऐसा फैसला तो हम भी नहीं सुना सकते।

एक बार गुरुदेव से पूछा गया-अगर दो भाई कोर्ट में केस लड़ते हुए आपके पास अपना फैसला करवाने के लिए आ जाए तो आप क्या करेंगे? गुरुदेव फरमाने लगे-सबसे पहले मैं उन्हें कोर्ट से केस वापस लेने के लिए कहूँगा। पूज्य गुरुदेव की विचक्षणता और विलक्षणता ने अपने फैसलों से लाखों घर सँवारे। जबकि कोर्ट की कहावत है-जो जीत गया वह हार गया-जो हार गया वह मर गया। गुरुदेव के निर्णय आज भी मील के पत्थर हैं, सर्च लाइट हैं।

पूज्य गुरुदेव की परख भी बड़ी अद्भुत थी। जिस इलाके में विचरते, जिस क्षेत्र में प्रवास करते वहाँ के श्रावकों और श्रीसंघों की स्थिति परिस्थिति पर पूरी निगाह रखते। कौन कितना धार्मिक, तपस्वी, दानवीर, स्वाध्यायी, सेवाभावी, गम्भीर, ईमानदार, विवेकवान, बुद्धिमान और समर्पित है। कितने ही विषयों में गुरुदेव मात्र ज्ञाताद्रष्टा का भाव रखते थे। विचरणशील मुनियों को भी पूज्य गुरुदेव के दिशा-निर्देश-सन्देश सम्बल प्रदान करते थे। घरों की गणना जो अन्यत्र लिखकर रिकॉर्ड की जाती है वहाँ गुरुदेव को जुबानी-अंगुलियों पर याद रहती थी। वे चलते व्यक्ति की चाल पहचान लेते थे। मानवीय स्वभाव समझकर तटस्थ निर्लेप और गम्भीर रहते थे। व्यर्थ की टीका-टिप्पणी से परहेज रखते थे।

भविष्य द्रष्टा कहो या दूर द्रष्टा, पूज्य गुरुदेव किसी को समझाने के लिए इशारा मात्र ही करते थे। पुण्यवान व्यक्ति गुरुदेव के इशारे को समझ लेते और समस्याओं से बच जाते थे। एक बार गुरुदेव गाँव से विहार कर रहे थे। एक धनी सेठ साथ चल रहा था। गुरुदेव ने उससे पूछा-''सेठ! ब्याज लेते हो?'' बोला-हाँ गुरुदेव!, तत्पश्चात् गुरुदेव ने पूछा-''कितना लेते हो?'' वह बोला-''3 रुपये, दो आने।'' गुरुदेव ने कहा-''सेठ! बहुत ज्यादा है-इतना नहीं लेना चाहिए।'' सेठ समझने को तैयार नहीं हुआ तो गुरुदेव ने कह दिया-''सेठ! इतने ब्याज का असर तीसरी पीढ़ी पर पड़ेगा।'' सेठ फिर भी नहीं समझा। सेठ की तीसरी पीढ़ी ने दिवाला भी निकाला और जेल भी गई।

एक नौजवान की शादी हुई। नई वधू आयी, किन्तु घर का काम नहीं करती। सारा काम माँ को ही करना पड़ता है। नौजवान ने समझाया, पर समझी नहीं। अपनी परेशानी लेकर गुरुदेव के चरणों में आया। गुरुदेव ने फरमाया- ''तू स्वयं अपनी माँ की सेवा कर और ऑफिस से छुट्टी ले।'' नौजवान घर आया। तीन दिन की छुट्टी ली। पहले दिन तो बहूरानी देखती रही। दूसरे दिन बोली-''सर्विस पर नहीं जाना क्या?'' लड़के ने कहा-''माँ की सेवा करूँगा।'' तीसरे दिन हाथ जोड़कर बोली-''आप ऑफिस जाओ, घर का काम मैं कर लूँगी।'' नौजवान खुश होकर गुरुदेव के चरणों में आया और बोला गुरुदेव-''आपकी कृपा से 3 दिन में ही काम बन गया।''

रखी जिसने श्रद्धा, बहुत कुछ उसने पाया।
हुआ तुमसे जो विपरीत, उसने सब गँवाया।।

एक नौजवान गुरुदेव के चरणों में आया और बोला-आज 3 दिन के बाद भरपेट भोजन किया। गुरुदेव

ने पूछा–क्या कारण? युवक बोला–गुरुदेव ! धर्मपत्नी पीहर गई हुई थी, 3 दिन लगाकर आई है। माँ को रोटी बनानी नहीं आती। गुरुदेव ने फरमाया–भाई! दया पाल यहाँ से। जिसे माँ–बाप पर श्रद्धा नहीं, उसे गुरु पर क्या होगी, तू 23–24 साल का हो गया, किसके हाथ की रोटी खाकर बड़ा हुआ? युवक को अपनी गलती का एहसास हुआ, क्षमा माँगी।

सर्वसमावेशी चिन्तन–जिस समय मुनिराजों के विचरण क्षेत्र या चातुर्मासिक क्षेत्र सीमित ही थे या यह कहो–कुछ ही क्षेत्रों के इर्द–गिर्द घूमते, उन्हें ही अपना समझते और अन्य क्षेत्रों में जाने से झिझकते थे। सीधी पाले बन्दी तो नहीं थी, पर कुछ जुबानी और भावनात्मक अधिकार होते थे। गृहस्थियों में ये हमारे सन्त–ये उनके गुरु आदि–आदि भावनाएँ भरी जाती थीं। सब घरों को फ़रसने या नवप्रेरणा देने में भी अड़चनें–सी थी। उस मौके पर भी गुरुदेव ने संकल्प किया–उत्तर भारत के सब क्षेत्रों को फरसना है, हर घर तक पहुँचना है, सभी को प्रेरणा देनी है, धर्मस्थान से जोड़ना है। यह चिन्तन लेकर प्रारम्भ से ही गुरुदेव ने विचरण किया। गाँव और शहर, नगर और महानगर सर्वत्र घूमे। लोगों में आकर्षण के साथ–साथ समर्पण भी बढ़ता चला गया, आग्रह टूटते गए। सभी ने उन्हें अपनाया। पंजाब, उत्तर प्रदेश में तो संगठन और बिरादरियाँ पहले से ही थीं। हरियाणा में मण्डियाँ आबाद हो रही थीं। वहाँ सामाजिक संगठन तैयार किए, क्षेत्रों का निर्माण हुआ। आवश्यकता के अनुसार नई स्थानकों का निर्माण भी हुआ, पर गुरुदेव ने कभी अपना अधिकार नहीं जताया। सभी स्थानक और सभी श्रावक सभी साधु–साध्वियों की सेवा–आराधना के लिए हैं, ऐसा खुला वातावरण दिया। सहजता–सरलता–उदारता के उपदेश ने हरियाणा में धर्म की हरियाली भर दी। भारत के स्थानकवासी मानचित्र में हरियाणा को प्रमुखता से लाकर खड़ा कर दिया। न कटुता, न कट्टरता और न ही कोई कब्जा, न कोई निंदा तथा न कोई खण्डन। मात्र श्रद्धा ही भरी। गुरुदेव की सभाओं में उमड़ता जनसैलाब जिनशासन की ही शोभा का कारण बनता रहा। जहाँ अन्यत्र स्थानकों में केवल बुजुर्ग लोग ही दिखाई देते थे, वहाँ गुरुदेव की सभा में एक ही समय में चार–चार पीढ़ियाँ उपस्थित होती थीं। पूज्य गुरुदेव का आह्वान था– संयमी मुनिराज पधारें, ज्ञान–दर्शन–चारित्र में वृद्धि करें तो सब सेवा करो, धर्म–ध्यान करो एवं कुव्यसनों का त्याग करो। पूज्य गुरुदेव ने ही उत्तर भारत में सामायिक दिवसों के माध्यम से सबको सामायिक की वेशभूषा में सामायिक करवाई। नये अभियान चलाए। कोई भी साधु–साध्वी समाचारी के नाम पर क्षेत्रों में कट्टरता और क्लेश को बढ़ावा न दें, शिथिलाचार घटाएँ, यह ही उनका नज़रिया था। पूज्य गुरुदेव अक्सर फरमाते थे–साधु 10% गिरेगा तो श्रावक 90% गिरेगा और साधु 90% उठेगा तो श्रावक 10% उठेगा।

श्रावकों को धर्म ध्यान के लिए स्वल्प–सा ही समय मिलता है; वह निंदा–चुगली में ही न बीत जाए, व्यर्थ की चर्चाओं में ही न चला जाए, हमारी श्रद्धा स्वार्थों के पीछे छिप कर ही न रह जाए, तन्त्र–मन्त्र ताबीजों के झूठे आश्वासनों से श्रद्धा विहत न की जाए, यह ही पूज्य गुरुदेव की दृष्टि थी।

श्रीसंघ में प्रेम और संगठन मजबूत बना रहे, इसी भावना को ध्यान में रखकर पूज्य गुरुदेव ने अपना स्वतन्त्र न कोई संगठन बनाया और न कोई संघ। संयम की पालना हो– घरों में, क्षेत्रों में और श्रावकों के प्रति भेदभाव की दृष्टि रखकर साधुत्व के सर्वोच्च गुण 'समता' की भावना को नीचे न गिराया जाए। दूसरों के दोष दर्शन की बजाय स्वयं को सुधार करके निःशल्य बनाना ही उनको इष्ट था। एक भाई डायरी लेकर गुरुदेव के चरणों में आया और कहने लगा–गुरुदेव! मेरे पास सब साधु–सतियों का चिट्ठा लिखा हुआ है, आप फरमाओ, किसकी कमियाँ सुनोगे। गुरुदेव ने कहा–भाई! मेरे वाला पन्ना निकाल ले। भाई एक दम सकपका गया। बोला–गुरुदेव! आपका तो मैंने लिखा ही नहीं। उस मौके पर गुरुदेव ने फरमाया–दूसरों की कमियों से

मुझे क्या मिलेगा? प्रतिक्रमण अपने दोष-दर्शन और दोष दूर करने के लिए होता है तथा मेरा कल्याण भी तभी होगा। आगन्तुक भाई अपनी डायरी और अपना-सा मुँह लेकर चला गया। गुरुदेव का जीवन इतना विशाल है कि कुछ लाइनों में समेटना मुश्किल है। घटनाओं और संस्मरणों से भरपूर है।

57 साल गुरुदेव ने संयम आराधना की, पर कभी कोई ऐसा शब्द नहीं कहा जिसे वापस लेना पड़ा हो, किसी ने यह शिकायत नहीं की कि मुझे गुरुदेव ने ऐसे शब्द कह दिए जो कहने नहीं चाहिए थे। यह शिकायत तो हो सकती है कि मुझसे बोले नहीं, पर ये शिकायत नहीं कि गलत भाषा बोली हो, ऐसा उनका भाषा का उत्कृष्ट विवेक था। स्वास्थ्य के संबंध में उनको बड़ी जागरूकता थी। डॉक्टर उनकी राय सुनकर दंग रह जाते थे। सामाजिक व्यवहार में उन्होंने समरसता का जो वातावरण बनाया वह अद्वितीय था। वाचस्पति गुरुदेव का प्रयास था कि सारा स्थानकवासी समाज और मुनि संघ एकसूत्र में बन्धकर जिनशासन की प्रभावना करे, इसी हेतु अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा श्रमण संघ निर्माण में लगाई, पर वह प्रयोग न समाचारी स्तर पर और न ही संगठन के रूप में एक रूप रह सका। वाचस्पति गुरुदेव ने श्रमण संघ की जिम्मेदारी से मुक्त होकर-समाचारी की मशाल गुरुदेव को थमा कर अन्तिम विदा ली, तो गुरुदेव ने भी पूर्वजों की समाचारी को सुरक्षित रखते हुए सभी संघों को एकरूपता दी। जिनशासन की प्रभावना की, शिष्यों का निर्माण किया, उत्तर भारत की स्थानकवासी परम्परा को सुरक्षित रखा। संयम और संयमीय परम्पराओं का आदर-सम्मान किया। कोई सम्प्रदाय नहीं बनाई। अतः सभी उनके बन गए। वह सुदर्शन सूर्य किरणें फैलाकर 25 अप्रैल, 1999 को अस्ताचल की ओर चला गया। अभी उनकी जन्म शताब्दी पूर्ण हो रही है। अतः हम भी भावों के दीप जगाकर अपने आँगन को जगमग जगमग करें, इन्हीं भावों के साथ जय गुरु सुदर्शन.....

■

सद्गुरु

श्री महावीर एम. गुलेच्छा 'अन्तर्मुखी'

(तर्ज :: एक प्यार का नगमा है...)

जो सन्मार्ग दिखाते हैं, जो सद्ज्ञान सिखाते हैं,
वे सद्गुरु स्वयं तिरे और औरों को तिराते हैं।।

जो आगम ज्ञाता हैं, निज भाग्य विधाता हैं,
प्रभु वीर के प्रतिनिधि, जिनवाणी प्रदाता हैं।
निज आतम ज्योति से, अंधकार मिटाते हैं।
वे सद्गुरु, स्वयं तिरे और औरों को तिराते हैं।।1।।

जो पाद विहारी हैं, जो भिक्षा आहारी हैं,
जग मोह-ममता को तज, पंच महाव्रत धारी हैं।
जिनशासन के प्रहरी, धर्म ध्वजा लहराते हैं।
वे सद्गुरु, स्वयं तिरे और औरों को तिराते हैं।।2।।

जो केश लुंचन करते, जो श्वेत वसन धरते,
स्वाध्याय-ध्यान चित्त धर, निज आत्मरमण करते।
षट्काय जीव रक्षक, ओघा-मुँहपत्ती रखते हैं।
वे सद्गुरु, स्वयं तिरे और औरों को तिराते हैं।।3।।

जो भेद विज्ञान ज्ञाता, गूढ़ तत्त्वों के व्याख्याता,
सिद्धत्व लक्ष्य जिनका, कर्म शत्रुओं के हंता।
अप्रमत्त रहे प्रतिक्षण, निज दशा निहारते हैं।
वे सद्गुरु, स्वयं तिरे और औरों को तिराते हैं।।4।।

ऐसे गुरुवर मिलना, पुण्यवानी हमारी है,
'अन्तर्मुखी' चरणों में, हो वन्दना हमारी है।
बिन गुरु न शुरू जीवन, नैय्या पार लगाते हैं।
वे सद्गुरु, स्वयं तिरे और औरों को तिराते हैं।।5।।

-बैंगलोर (कर्नाटक)

10 मार्च 2023
जिनवाणी 28
ISSN 2249-2011

प्रवचन

विनय गुण-धारण : अहंकार-निवारण

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. द्वारा पर्युषण पर्व के प्रथम दिवस 24 अगस्त, 2022 को जैन स्कूल महामन्दिर, जोधपुर में फरमाये गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। -सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं!

आध्यात्मिक पर्व प्रकृति को सुधारने के लिए आते हैं। धर्म करने वालों के लिए बाह्य प्रकृति भी स्वयं सुधर जाती है। आप जरा चिन्तन करें कि पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना करनी है तो कैसे करनी है? आज पर्व का पहला दिन है। विनय-श्रुत उत्तराध्ययनसूत्र का पहला अध्ययन है। धर्म का मूल विनय है। इसके बिना मोक्ष की कोई भी साधना फलीभूत नहीं हो सकती। अत: धर्म का यह प्रवेश-द्वार है। यही कारण है कि उत्तराध्ययनसूत्र में धर्म की शिक्षा देने के लिए सर्वप्रथम विविध पहलुओं से विनयाचार का उपदेश दिया गया है। वास्तव में विनयाचरण साधक को सुख-शान्ति के आंशिक धाम-देवलोक में ले जाता है एवं क्रमश: सुख-शान्ति के शाश्वत परम धाम मोक्ष में पहुँचाता है। विनय से ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा क्षमा, मृदुता, ऋजुता, सेवा, देव-गुरु-धर्म पर श्रद्धा आदि गुणों की पुष्टि, उन्नति तथा अभिवृद्धि होती है। साथ ही विनय से अहंकार, मद, कठोरता, हिंसाभाव, घृणा, द्वेष आदि दोष-दुर्गुण भी हटते हैं। जो विनयवान है या जिसने विनय-श्रुत धारण कर लिया है उसे अहंकार छू भी नहीं सकता। विनयगुण का आगमन होने से अहंकार का निवारण होता है।

आपने बुढ़िया की सुई खो जाने वाला दृष्टान्त सुन रखा है। जब सुई घर में गुम हुई है तो बाहर ढूँढ़ने पर कैसे मिलेगी? इसलिए जो जहाँ है उसकी वहाँ पर ही खोज करनी चाहिए। खोज करने में चाहिए एकाग्रता एवं एकान्त। सुई में धागा पिरोने के लिए भी एकाग्रता चाहिए तो श्रुत का आत्मा में प्रवेश कराने के लिए भी एकाग्रता एवं एकान्त चाहिए।

आपको एकाग्रता और एकान्त दोनों चाहिए, तब कहीं जाकर आप आराम से जिनवाणी सुन सकेंगे। जहाँ पर आप साधना करना चाहते हैं वहाँ यदि एकाग्रता और एकान्त नहीं है तो आप कानों से भले ही सुन लें, वह बात आपके प्राणों तक नहीं पहुँच पायेगी। यहाँ आकर भी आप अपना कीमती समय सार्थक नहीं कर पायेंगे।

ज्ञान टिकता है विनय से और ज्ञान से विनय की प्राप्ति भी होती है। संस्कृत साहित्य में कहा भी है- **'विद्या ददाति विनयं, विनयाद्याति पात्रताम्।'** अर्थात् विद्या से विनय और विनय से पात्रता प्राप्त होती है। यह पात्रता ज्ञान को अवधारण करने की है। विनयवान हर बात को पूरे मनोयोग से सुनेगा। सुनेगा ही नहीं, सुनकर समझेगा भी और उसे आचरित भी करेगा। ज्ञान कौन प्राप्त करता है? जो विनीत होता है उसे ज्ञान प्राप्त होता है और वही ज्ञान आदमी को आगे बढ़ाता है। नहीं, तो ज्ञान का अहंकार आए बिना नहीं रहता। इसलिए किसी ने कहा कि जो ज्ञान का अभिमान करता है वह अज्ञानी है और जिसे अभिमान का ज्ञान हो गया वह ज्ञानी है।

अहंकार क्या? मैं-मैं का भाव और ममकार ही अभिमान है। विनय अहंकार को दूर करता है। आज के दिन का सन्देश है कि आप ज्ञान करें और ज्ञान में आएँ। एक लकड़हारा जंगल में लकड़ी लेने गया। उसे वहाँ एक सज्जन मिले और बोले-"भाई! आगे बढ़ो।" सज्जन का कहा मानकर वह आगे बढ़ा और उसे जंगल में अच्छी लकड़ी मिली। दूसरे दिन वही लकड़हारा फिर

जंगल में पहुँचा। वह दूसरे दिन और आगे बढ़ा। लकड़हारे को पहले से ज्यादा बहुमूल्य लकड़ी मिली। उसे बेचा तो अधिक मुनाफा हुआ।

इसी क्रम में तीसरे दिन उसी लकड़हारे ने और आगे बढ़कर देखा कि आगे तो शीशम के पेड़ हैं और यह शीशम महँगा होता है। उसने शीशम की लकड़ी प्राप्त की और उसे बाजार में बेचकर खूब लाभ कमाया। एक वह लकड़हारा था जो आगे बढ़ता गया और एक हम हैं जो वहीं के वहीं हैं। हर साल सन्त-सती आते हैं, उनसे सीखते हैं और फिर भूल जाते हैं। दूसरे सन्त-सती आते हैं और वही सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल पुनः सीखते हैं थोड़े दिनों के पश्चात् फिर भूल जाते हैं।

आप ज्ञान के विषय में चिन्तन तो करें ही, विनय हमारे जीवन में कितना आया है उसका भी चिन्तन करें। जहाँ हैं वहाँ से आगे बढ़ें। आज माता-पिता अपने बच्चों को कॉन्वेंट स्कूलों में और कॉलेजों में भेजते हैं। वहाँ की शिक्षा कैसी होती है? यह आप सब जानते हैं कि वहाँ संस्कार विहीन शिक्षा प्राप्त होती है।

ज्ञान का सकारात्मक पहलू है कि पाप कम से कम हो। पूर्वजों ने पूरी ज़िन्दगी पाप से दूर रहने का काम किया है।

कॉन्वेंट स्कूल एवं कॉलेज में नॉलेज तो मिलता है, पर संस्कारों का हैरिटेज नहीं मिलता। आज हमारे संस्कारों की विरासत गुम होती जा रही है। आज हम प्राचीन संस्कृति और सभ्यता को भूलते जा रहे हैं। ज्ञान का खज़ाना आत्मा में है। पूर्वाचार्यों ने पूरी ज़िन्दगी ज्ञान-साधना और सेवा धर्म की आराधना में लगा दी। आज कौनसा ज्ञान प्राप्त होता है? पहले कौनसा ज्ञान प्राप्त होता था? आज किताबों का ज्ञान तो है। इस ज्ञान को नॉलेज कह सकते हैं और यह नॉलेज व्यक्ति को गलत दिशा में ले जा रहा है? आज हर व्यक्ति अपना ज्ञान बघारने में रहता है। वह कहता है कि मैं कलेक्टर, अफसर, मन्त्री, प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति सबको जानता हूँ। वह शेखी बघारकर कहता है कि मेरे बड़े लोगों से अच्छे सम्बन्ध हैं और भले ही उसे कोई पार्षद भी न जानता हो। इस प्रकार झूठा अहंकार का भाव रखकर प्रसन्न होता रहता है।

शेखी कोई भी बघार सकता है, पर शेखी बघारना ज्ञान नहीं है। ज्ञान तो अपने आत्मस्वरूप को जानने का है। वह ज्ञान गुरु से मिलता है, अनुभव से आता है। एक युवक बस में सवार हुआ और संयोग से उसकी सीट के पास एक युवती बैठी थी। अब उस युवक से बिना बात किए रहा नहीं गया और उसने पूछा-''आप कहाँ रहती हैं?'' युवती ने कहा-''पावटा।'' युवक प्रसन्नता के साथ कहने लगा-''अरे वाह! मेरी कॉलोनी के पीछे ही है। आपके पिताजी क्या करते हैं?'' युवती-''वे डॉक्टर हैं।'' युवक-''क्या नाम है?'' युवती-''श्री घनश्यामजी।'' युवक-''अरे! अच्छा वे आपके पिताजी हैं, बहुत अच्छे डॉक्टर हैं, क्या हल्का हाथ है। अभी परसों मेरे बुखार आ गया था तो उनसे ही इंजेक्शन लिया। शानदार डॉक्टर हैं।'' युवती-''आपको पक्का याद है।'' युवक-''अरे हाँ-हाँ। अभी परसों की बात है। इतना जल्दी कैसे भूल सकता हूँ।'' युवती-''मेरे पिताजी पशु चिकित्सक हैं।'' अब उस ज्ञान बघारने वाले का सर नीचे था। इसलिए कहा है-''ज्ञान बघारने के लिए नहीं, आत्मा को जगाने के लिए है।''

ज्ञान का मतलब है-आगम वाणी या जिनवाणी। जिनवाणी के प्ररूपक को ज्ञानी कहना चाहिए। ज्ञानी को नमस्कार करना-प्रणाम करना है। ज्ञान एवं ज्ञानी का विनय हमारा ज्ञान बढ़ाता है। जिसने सद् साहित्य लिखा है उसका भी गुरु के जैसा विनय करना चाहिए। भगवान का, गुरुदेव का एवं सद् साहित्य लेखक का विनय होना चाहिए। आज हम पुस्तक का भी सम्मान नहीं करते। किताब की कीमत पाँच रुपये है, पर लोगों को तो मुफ्त की पुस्तक चाहिए। इसलिए वह लाइन में लगकर भी मुफ्त किताब लेना चाहेगा। आज अमीर हो या गरीब, सबको मुफ्त की किताब चाहिए। क्या उस पुस्तक से ज्ञान होगा? आप अगर पुस्तक खरीदकर लेंगे तो उसकी रख-रखाव करेंगे। उसका पूरा उपयोग करेंगे, इधर-उधर नहीं डालेंगे। आज ज्ञान का दिन है। आपको ज्ञान क्या

है? ज्ञान कैसे प्राप्त होता है? ज्ञानी कौन है? इन बातों को समझना होगा।

हम तीन के प्रति विनय, बहुमान एवं आदर भाव रखें। विनय ही विश्वास दिलाता है। विनय से ही विकास होता है। इसलिए हमारा आज का विषय 'विनय गुण का धारण-अहंकार का निवारण' है। तो सबसे पहला विनय है प्रवचन का विनय। यानी प्रभु वचनों का इतना आदर हो, विनय हो कि हमें लगे कि अनन्त पुण्य के उदय से यह आगम वाणी सुनने को मिली है। मेरा अहोभाग्य है कि आज यह जिनवचन सुनकर कान पवित्र होंगे। आगम इतने अनमोल हैं कि हमारे पूर्वजों ने करोड़ों स्वर्ण मुद्रा खर्च कर इन्हें सुरक्षित रखा और जान को हथेली पर रखकर भी इन्हें आँच नहीं आने दी। आज हम ज्ञान की पुस्तक भी मुफ्त में लेना चाहते हैं और घर में रखी पुस्तकें जो फट गई, सड़ गई, खराब हो गई आपकी भाषा में रद्दी (पर मैं तो इसे ऋद्धि कहूँगा) को जब कोई नहीं देखता तब स्थानक में लाकर रख देगें। हम प्रवचन का विनय करें। दूसरा विनय करना है प्रव्रजित का। सन्त-सती का विनय नहीं होगा, उनका बहुमान नहीं होगा तो शासन की शान कौन बढ़ायेंगे। हम उनका सम्मान करें। सन्त की साधना सम्मान के योग्य होती है अत: उनका विनय-बहुमान जरूरी है। उनका सम्मान नहीं करना अविनय है।

तीसरा विनय करना है प्रवृत्ति का। जो-जो प्रभु ने क्रिया बताई है, साधना विधि बताई है उन सबको विनय-बहुमानपूर्वक करना। साधना को यदि विधि से नहीं करते तो फलदायी नहीं होती है। विधि से तो करते नहीं और फिर कहते हैं कि हमारा साधना में मन नहीं लगता। हम साधना को विधि एवं विनय से करें। वन्दना हो या प्रार्थना हो, पौषध हो या प्रतिलेखना हो, सामायिक हो या दान हो, सब विधि एवं विनय से हो। हर प्रवृत्ति में विनय होगा तो हमारी प्रवृत्ति सार्थक होगी। सरल भाषा में ग्रन्थ का, निर्ग्रन्थ का और पंथ का विनय हो। हम आज के दिन इस गुण को धारण कर अपने ज्ञान को बढ़ाएँ एवं पर्व को सार्थक करें।

इन्हीं शुभ भावों के साथ सतत शुभ अध्यवसाय से परमात्म लक्ष्य-प्राप्ति सम्भव है।

संयम के रथ पे... होके सवार

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

(तर्ज :: तहत्ति तहत्ति बोले ये मन)

प्यासे मन की एक ही पुकार,
बिन संयम के जीवन असार!
संयम के रथ पे ..होके सवार ,
जाना है मुझको ..भव भव के पार !
संयम के रथ पे ..होके सवार।।
ये मन सूना सूना है ..बिन संयम के
दर्द समन्दर जितना है ..बिन संयम के
मुझको किनारा ..पाना इस बार
संयम ही नैया ..संयम पतवार !
संयम के रथ पे ..होके सवार।।1।।
कोई सहारा न अच्छा है ..बिन संयम के
कोई रिश्ता न सच्चा है ..बिन संयम के
संयम ही बन्धु ..संयम परिवार
संयम ही साथी ..संयम है प्यार !
संयम के रथ पे ..होके सवार।।2।।
दोषों का काँटा चुभता है ..बिन संयम के
मन मेरा मुरझाता है ..बिन संयम के
संयम का उपवन .. सुख है अपार
संयम ही सावन ..संयम बहार !
संयम के रथ पे ..होके सवार।।3।।
गुरुवर तुमसा जीना है ..इस संयम में
प्रभुवर तुमसे मिलना है ..इस संयम में
संयम ही मंजिल ..का है वो द्वार
' तीरथ' की भक्ति .. मुक्ति उपहार!
संयम के रथ पे ..होके सवार।।4।।

10 मार्च 2023
जिनवाणी 31
ISSN 2249-2011

प्रासङ्गिक

महावीराष्टकं स्तोत्रम्

श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.

श्रीमद् भागेन्दु द्वारा रचित महावीराष्टक स्तोत्र सुप्रसिद्ध है। उसी स्तोत्र के छन्द 'शिखरिणी' में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के संस्कृत-प्राकृत-रचनाभ्यासी सुशिष्य श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. द्वारा प्रस्तुत महावीराष्टक स्तोत्र रचा गया है जो भाव-भाषा में पूर्व स्तोत्र से न्यून नहीं है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग भी इसमें हुआ है। मुनिवर्य द्वारा महामन्दिर, जोधपुर चातुर्मास में इसे प्रभु महावीर निर्वाण कल्याणक (दीपावली) के अवसर पर 25 अक्टूबर, 2022 को प्रवचन सभा में प्रस्तुत किया गया था। प्रसङ्गवश महावीर जयन्ती के सुअवसर पर यह जिनवाणी में प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है यह स्तोत्र भी उसी तरह गाया जायेगा जिस प्रकार श्री भागेन्दु रचित महावीराष्टक गाया जाता है। **-सम्पादक**

यदीये चैतन्ये, स्फुरति युगपद् द्रव्यनिचयः, त्रिकालान्तर्वर्ती, सकलगुणपर्यायसहितः। जगत्सर्वं चक्षुःपथिषु तव हस्तामलकवत्, महावीरो धीरो, वसतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।1।।

जिनके ज्ञान में भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों काल के द्रव्य समूह सकल गुण और पर्यायों के साथ स्फुरित होते हैं और सम्पूर्ण जगत जिनके चक्षुपथों पर हाथ पर रखे आँवले या निर्मल जल के समान प्रत्यक्ष है। ऐसे धीर प्रभु महावीर मेरे चित्त में प्रतिपल बसे रहें।

कृतामर्त्ये मर्त्यैः, समवसरणे प्राप्तशरणः, दुरस्तं दूरस्थं, सहजमतिकुर्वन्नघघनम्। वचो वर्षन् तिर्यङ्-मनुज-सुरभाषा-परिणतम्, महावीरो धीरो, वसतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।2।।

देवों द्वारा निर्मित समवसरण में प्रभु विराजमान हैं और मनुष्यों द्वारा जिनकी शरण ग्रहण की गई है, जो दूर रहे हुए दुर्दमनीय पाप समूह (स्वचक्र-परचक्र आदि) को सहज ही नष्ट कर रहे हैं। जो तिर्यञ्च, मनुष्य और देवों की भाषा में परिणत होने वाली वाणी को बरसा रहे हैं, ऐसे तीर्थंकर प्रभु महावीर मेरे चित्त में सदा बसे रहें।

शुभोदर्कस्तर्को, नयविधियुतोऽनन्यसदृशः, प्रमाणैः सम्मान्यो, वचननिचयस्तेऽद्य जगति। सहायो ह्यस्माकं, भवजलनिधेः पारगमने, महावीरो धीरो, वसतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।3।।

हे प्रभो! आपकी वाणी शुभ परिणाम वाले तर्कों से संगत है, नय विधि से युक्त, समस्त प्रमाणों से सम्मत है तथा अन्य मतवादियों के समान एकान्त कथन वाली नहीं है। ऐसी आपकी ये वाणी ही तो आज इस जगत् में भवसमुद्र से पार करने में हमारी सहायक है। ऐसी वाणी की व्याकरणा करने वाले प्रभो महावीर! आप हर पल मेरे हृदय में बसे रहें।

स्फुरद् दीप्रं शुभ्रं, परमसुभगं शान्तिनिलयं, शरच्चन्द्रज्योत्स्नो-ज्ज्वलममलतेजो विलसति। कनद् देहं गेहं, समगुणगणानां तव शुभं, महावीरो धीरो, वसतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।4।।

हे स्वामिन्! चमकता हुआ आपका यह शरीर देदीप्यमान, शोभायमान, परमसुभग और शान्ति का ही आलय है। शरद् ऋतु के पूर्ण चन्द्र की चन्द्रिका के समान निर्मल तेज को वहन किये हुए है। इतना ही नहीं, समस्त गुणों के समूह का ही मानो घर है। हे प्रभो! आप मेरे चित्त में ही बस जाएँ।

महोद्दामं कामं, दुरितरिपुधामं विघटयन्, अमंदं ह्यानन्दं, दिशि दिशि जगत्यां प्रविकिरन्। किरन् ज्ञानं ध्यानं, परमपदपद्यां प्रकटयन्, महावीरो धीरो, वसतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।5।।

हे नाथ! आपने पापरूपी शत्रुओं का एक मात्र स्थान रूप इस उद्दण्ड कामवासना को विघटित-नष्ट कर

दिया है। अमन्द आनन्द को आपने इस जगत में प्रत्येक दिशा में प्रसृत किया है तथा ज्ञान और ध्यान को सर्वत्र बिखेरते हुए आपने परम पद के मार्ग को प्रकट किया है। हे चरम तीर्थेश! आप मेरे चित्त में ही निवास करें।

फटाटोप: कोप:, कृतवपुरिव क्ष्वेडनयन:,
सदर्प: सर्पोऽसौ, तव करुणया बुद्धहृदय:।
बिलान्ते तुण्डोऽभू-दलभत शुभक्षान्तिमतुलां,
महावीरो धीरो, वसतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।6।।

जो सर्प भयंकर फण फैलाये हुए था, जो दृष्टिपात मात्र से ही लोगों को मारने वाला दृष्टिविष था, क्रोध ने मानो उसके रूप में अपना ही शरीर बना लिया हो, ऐसा सर्प भी आपकी करुणा से बोधि को प्राप्त करने वाला बना और बिल के अन्दर मुँह डाले हुए अतुल क्षमा भाव को धारण करने वाला बन गया। प्रभु आप मेरे चित्त में हमेशा बसे रहें।

भवं भ्रामं भ्रामं, विषयविषपानं च विषमं,
प्रकुर्वन् सन्त्रस्तो, व्यथितहृदयो भीतचकित:।
कथंचित् सम्प्राप्तं, तव वचन-पीयूषमधुना,
महावीर धीरो, वसतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।7।।

इस संसार में भटकते हुए विषय रूपी भयंकर विष का विषपान करते हुए मैं अत्यधिक सन्त्रस्त, व्यथित हृदय और भय से प्रकम्पित हो गया हूँ। अब मुझे जैसे-तैसे (बड़ी कठिनाई से) आपका वचन रूपी अमृत प्राप्त हुआ है। प्रभो! अब आप मेरे हृदय में ही सदा स्थित रहें।

अमावस्या-रात्रौ, तततिमिरवृन्दे प्रतिदिशं,
तथा पावापुर्यां, प्रवचनददद् राजसविध:।
निकन्धन् योगौघं, समधिगतमोक्षो गततनु:,
महावीरो धीरो, वसतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।8।।

अमावस्या की रात्रि में जब अन्धकार प्रत्येक दिशाओं में पूर्णत: फैल गया था, तब पावापुरी में भगवान 18 गणराजाओं के सम्मुख प्रवचन दे रहे थे, तभी भगवान ने अपने योगों का निरोध किया और मोक्ष पधार गये, अशरीरी हो गये। ऐसे महावीर प्रभो! सदा मेरे चित्त में विराजित रहें।

महावीराष्टकं स्तोत्रं, विनम्रव्रतिना कृतम्।
श्रोता वा पठिताऽमुष्य, प्रयाति परमं पदम्।।

विनम्र मुनि द्वारा रचित इस महावीराष्टक स्तोत्र को पढ़ने वाला और सुनने वाला अवश्य ही परम पद को प्राप्त करेगा।

-संकलनकर्त्ता : श्री प्रकाशचन्द सालेचा, जोधपुर

आचार्यश्री हीरा गुणगान

महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा.

(तर्ज :: साजन मेरा उस पार है......)

शासन में तेरे खुशहाल हैं,
तुम जैसा नायक पा निहाल हैं।।टेर।।

ग्रहण आसेवना शिक्षा दी हमको,
उपकृत हैं भगवन हम जीवन भर को।
सारणा वारणा से सम्भाल है,
तुम जैसा नायक पा निहाल हैं।।1।।

निभना निभाना हमको सिखाया है,
सन्तुलन समझौता समझाया है।
उदार दृष्टि दी विशाल है,
तुम जैसा नायक पा निहाल हैं।।2।।

मर्यादा सिद्धान्तों में जीना है,
जिनवाणी का अमृत हर पल पीना है।
संयम-शिक्षा दी क्या कमाल है,
तुम जैसा नायक पा निहाल हैं।।3।।

तुझ में झाँका तो आगम पाया है,
आगम में झाँका तो तू समाया है।
आगम की दी मजबूत ढाल है,
तुम जैसा नायक पा निहाल हैं।।4।।

-संकलनकर्त्ता : श्री धनसुरेश जैन, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

10 मार्च 2023
जिनवाणी 33
ISSN 2249-2011

प्रवचनांश

जैन होने के 10 लक्षण

महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. के द्वारा बीजापुर में 29 जनवरी, 2023 को फरमाए गए इस प्रवचन के अंशों का संकलन श्री नमन के. रूणवाल, बीजापुर ने किया। इनमें जैन होने की 10 विशेषताओं का कथन है। -सम्पादक

1. प्रत्येक जीव को आत्मवत् देखना- जैसे मैं एक चेतन आत्मा हूँ वैसे ही हर एक प्राणी भी चेतन आत्मा है। सभी जीव अपने कर्मों के कर्त्ता एवं भोक्ता हैं। ऐसा चिन्तन जैन होने की विशेषता है।

2. दया-भाव रखना- जितना जैनबन्धु दान-पुण्य करते हैं उतना सम्भवत: अन्य कोई समाज नहीं करता, पर केवल दान करना ही दया नहीं है। यह तो दया का एक भाग है। हमें प्रत्येक जीव को अपने समान मानकर उनका सुख-दु:ख समझना चाहिए और उन्हें पीड़ा नहीं देनी चाहिए। स्थावर जीवों की यतना करनी चाहिए। अपने मतलब के लिए किसी को भी परेशान नहीं करना चाहिए। प्रत्येक जीव पर करुणा और प्रेमभाव रखने का प्रयास करना चाहिए।

3. निर्व्यसनता (Addiction freeness)- एक जैन सप्त व्यसनों से दूर रहता है। वेज-नोनवेज सम्मिलित होटल में भोजन करने हेतु नहीं जाता है। अल्कोहल कम या ज्यादा मात्रा में, एक बार या अनेक बार किञ्चित् भी नहीं लेता है। गुटका, पान, बीड़ी, सिगरेट आदि का सेवन नहीं करता है। बिना पूछे किसी की वस्तु नहीं लेता है। कदाचार-दु:शील का सेवन नहीं करता है। शिकार को वर्जनीय मानता है।

4. देव-गुरु-धर्म पर अटूट श्रद्धा- कैसी भी परिस्थिति हो बस अरिहंत को देव मानना और जिनवचनों पर श्रद्धा रखना। आजकल हम बिना पेंदे के लोटे के समान हो गये हैं और जिधर लाभ दिखता है उधर ही भक्ति करने लगते हैं। गुरु उनको मानना चाहिए जो महाव्रतों का शुद्धता से पालना करते हैं।

5. अनेकान्तवाद का प्रयोग- बस मैं ही सही हूँ, यह मानना ग़लत है। हर एक का अपना दृष्टिकोण है। सबको सम्मान देना जरूरी है। जहाँ तक धर्म की बात है वहाँ तो आगम आज्ञा को मानना ही सही कहा गया है।

6. वस्तुएँ जोड़ने की नहीं, छोड़ने की भावना रखना- जैनी हमेशा परिग्रह को सीमित रखने का प्रयास करता है। वस्तु में ममत्व नहीं रखकर जितना है उसमें सन्तोष करता है।

7. क्षमा देना और क्षमा माँगना- क्षमा माँगने से कोई छोटा नहीं होता और जब ग़लती हो तो क्षमा माँग लेने से हमारा भाव और भव दोनों सुधरते हैं। क्षमा करना वीरों की पहचान है। वैर रखने से नरक का बन्ध होता है।

8. जैन जिनशासन की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहता है और नि:स्वार्थ सेवा करता है।

9. जैन प्रतिपल मोक्ष की अभिलाषा रखता है।

10. जैन मर्यादित और सन्तुलित जीवन जीने का प्रयास करता है। आज अनेक लोग पाश्चात्य कपड़े, अंग्रेजी बोली आदि पर गर्व महसूस करते हैं। आधुनिकता के नाम पर दिखावा बढ़ रहा है और संस्कार, संस्कृति के प्रति सम्मान कम हो रहा है, लेकिन जैन का जीवन सादा और विचार सदा उच्च होते हैं।

जीवन की सबसे बड़ी पदवी जैन होने की पदवी है, इससे बड़ी कोई पदवी नहीं है, क्योंकि यह भगवान के भक्त होने की पदवी है। आशा है सब सच्चे जैन बनने का प्रयास करेंगे और दूसरों के लिए अच्छे विचार रखेंगे तथा संस्कारों का पालन करेंगे।

10 मार्च 2023
जिनवाणी 34
ISSN 2249-2011

प्रासङ्गिक

भगवान महावीर की व्रत-व्यवस्था में अपरिग्रह और अस्तेय

डॉ. दिलीप धींग

आगम युग में अर्थतन्त्र मजबूत था। उसका मुख्य आधार अच्छा पर्यावरण और विपुल प्राकृतिक सम्पदा रही। भगवान महावीर के सिद्धान्त अर्थ तन्त्र को अधिक मजबूत तथा पर्यावरण एवं प्राकृतिक सम्पदा को दीर्घजीवी बना देते हैं। जीवन और जगत् की सारी व्यवस्थाओं के सम्यक् सञ्चालन के लिए आगम आधारित एक त्रिपदी प्रसिद्ध है–आचार में अहिंसा, विचार में अनेकान्त और व्यवहार में अपरिग्रह।

अर्थशास्त्र का मूल व्रत

अपरिग्रह आगमिक अर्थशास्त्र का केन्द्रीय सिद्धान्त है। अहिंसा की साधना के बगैर अपरिग्रह की साधना नहीं हो सकती और अपरिग्रह के बगैर अहिंसा के पथ पर चलना भी दुष्कर है। अपरिग्रह; अहिंसा का सामाजिक और आर्थिक पक्ष है। परिग्रह के लिए व्यक्ति हिंसा करता है, चोरी, असत्य आचरण और अनाचार का सेवन करता है।[1] आचाराङ्गसूत्र 1/2/5 में भगवान महावीर कहते हैं– **बहुंपि लद्धुं न निहे, परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्किज्जा।** अर्थात् अधिक मिलने पर भी संग्रह–वृत्ति का भाव नहीं रखना चाहिये तथा परिग्रह–वृत्ति से अपने को दूर रखना चाहिये। जो संग्रह–वृत्ति में ही दिन–रात व्यस्त रहते हैं, वे संसार में अपने प्रति वैर बढ़ाते हैं।[2] सचमुच संसार में परिग्रह के समान प्राणियों के लिए दूसरा कोई जाल एवं बन्धन नहीं है।[3] अर्थ, अनेक अनर्थों और समस्याओं को पैदा करता है।[4]

प्रश्न उठता है कि क्या सचमुच परिग्रह इतना भयावह है? आगमकार इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं कि **मुच्छा परिग्गहो वुत्तो** अर्थात् वस्तुओं के प्रति ममत्व, मूर्च्छा और आसक्ति ही परिग्रह है।[5] मूर्च्छा का अर्थ है–जागरूकता का अभाव। मूर्च्छा में व्यक्ति हित–अहित और अच्छे–बुरे का भेद नहीं कर पाता है। इसलिए भगवान महावीर ममत्व–विसर्जन और निरासक्ति पर बहुत जोर देते हैं। जैन परम्परा ऐसे साधकों और महर्षियों की परम्परा है, जिन्होंने ममत्व और राग का विसर्जन कर दिया। राग परिग्रह का मूल है। आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि 'स्व' की पकड़ होने पर 'पर' की पकड़ स्वतः छूट जाती है, यह स्थिति अपरिग्रह की है।[6]

संसार के अनेक झगड़ों एवं अपराधों के मूल में परिग्रह संज्ञा काम करती है। परिग्रह होता है तो समस्याएँ पैदा होती हैं और संसार में परिग्रह नहीं होता है तो भी समस्याएँ पैदा होती हैं। वस्तुतः समस्याओं का मूल मूर्च्छा का भाव है। एक गरीब आदमी अपनी छोटी–सी कुटिया में सुख की नींद सो सकता है और ऐसा भी देखा जाता है कि एक अमीर व्यक्ति उसकी अट्टालिका में भी चैन से नहीं जी पाता है। वस्तुओं के बढ़ जाने से गुणात्मक रूप से सुख नहीं बढ़ता है। उत्तराध्ययनसूत्र 4/5 में भगवान महावीर कहते हैं – **वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते। इमम्मि लोए अदुवा परत्थ।** अर्थात् धन व्यक्ति की रक्षा नहीं कर सकता, न ही उसे वह स्थायी सुख और तृप्ति देता है। इसलिए परिग्रह कितना ही क्यों न बढ़ जाए, उससे व्यक्ति दुःख से मुक्त नहीं हो सकता। आधुनिक अर्थशास्त्र के सारे मापदण्ड धन–सम्पत्ति और बाहरी सुख–सुविधाओं पर आधारित हैं। इन मापदण्डों के कारण व्यक्ति में अनावश्यक व्यग्रता, विद्रोह और असन्तोष पैदा होता है। इससे समाज में अवाञ्छनीय होड़ा–होड़ और संघर्ष का जन्म होता है।

अपरिग्रह : जैन परम्परा की देन

भगवान महावीर ने जितना बल अहिंसा पर दिया, किसी सन्दर्भ में उतना ही बल अपरिग्रह पर भी दिया। आचार्य हस्ती–स्मृति सम्मान से सम्मानित मनीषी डॉ.

दयानन्दजी भार्गव के अनुसार जैन परम्परा में अपरिग्रह भगवान महावीर की देन है और भारतीय परम्परा में अपरिग्रह की अवधारणा जैन परम्परा की देन है।[7] अपरिग्रह के विकास के लिए जैन परम्परा में बहुविध विधान किये गये हैं। परिग्रह के परिसीमन के लिए अस्तेय, इच्छा-परिमाण व्रत, लोभ-विसर्जन, त्याग, सन्तोष, दान, अनासक्ति आदि अनेक उपाय बताये गये हैं। जैन परम्परा में परिग्रह-अपरिग्रह पर बहुत सूक्ष्मता से विचार किया गया। इसका भारतीय जन-जीवन, समाज और अर्थव्यवस्था पर हर युग में व्यापक असर हुआ। महात्मा गाँधी का न्यासिता (ट्रस्टीशिप) का सिद्धान्त अपरिग्रह व्रत से अनुप्रेरित एवं उसी का रूप है।

अस्तेय और अपरिग्रह

जैसा कि बताया गया परिग्रह आसक्ति का रूप है। आसक्ति तीन रूपों में प्रकट होती है- अपहरण (शोषण), संग्रह और भोग।[8] अपहरण और शोषण का उपचार अस्तेय व्रत में बताया गया है। प्रश्नव्याकरणसूत्र 1/3/10 के अनुसार परधन की इच्छा, परधन हरण, मूर्च्छा, तृष्णा, गृद्धि, असंयम, कांक्षा, हस्त-लघुता, स्तेनक, कूटतोल-माप और बिना दी हुई वस्तु लेना, ये सब चोरी के ही रूप हैं। अस्तेय व्रत की सूक्ष्मता का बोध कराते हुए भगवान महावीर कहते हैं कि कोई वस्तु सचेतन हो या अचेतन, कम कीमत की हो या अधिक कीमत की, उसे उसके मालिक या धारक की आज्ञा के बगैर नहीं लेना चाहिये। श्रमण को तो दाँत कुरेदने का तिनका तक बिना आज्ञा के ग्रहण नहीं करना चाहिये।[9] महात्मा गाँधी कहते हैं कि अपरिग्रह को अस्तेय व्रत से सम्बन्धित समझना चाहिये। सूक्ष्म दृष्टि से चुराया हुआ न होने के बावजूद अनावश्यक संग्रह चोरी जैसा माल हो जाता है। किसी चीज का बिना आवश्यकता के संग्रह अस्तेय व्रत के अनुरूप नहीं माना जा सकता।[10] सत्यशोधक अहिंसक अपरिग्रह व्रत की साधना करता है तो उसके साथ ही अस्तेय व्रत का अनुपालन भी हो जाता है।

कर्मठता और अस्तेय

खान-पान के सम्बन्ध में भी व्यक्ति अस्तेय व्रत का उल्लंघन करता है। जिस चीज की उसे जरूरत नहीं है, फिर भी उसे वह खाता है। वह अपनी आवश्यकताओं को बढ़ाचढ़ा कर बताता है और अनजाने में चौर्यकर्म का भागी बन जाता है। अस्तेय व्रती को अपनी आवश्यकताएँ निरन्तर घटाते रहना चाहिये। संसार की अधिकतर दरिद्रता अस्तेय व्रत के भंग से हुई है।[11] बिना परिश्रम किये अर्थप्राप्ति की आशा और येन-केन-प्रकारेण अर्थप्राप्ति करना अस्तेयव्रत के अनुरूप नहीं है। दुनिया की कई विषमताएँ और समस्याएँ शरीर-श्रम नहीं करने से पैदा हुई हैं। इसलिए अस्तेय व्रत अपने परिश्रम द्वारा सम्पत्ति-निर्माण पर जोर देता है।[12] यह व्रत सम्पन्न घरानों के व्यक्तियों को भी अच्छे कार्यों में निष्काम भाव से सक्रिय रहने की प्रेरणा देता है। जहाँ श्रम है, वहाँ सम्मान भी है और आत्म-सम्मान भी है।

अप्रमाद और अस्तेय

कितने ही आजीविका के साधन ऐसे हैं जिनमें शारीरिक श्रम अपेक्षाकृत कम होता है। उनमें बौद्धिक और मानसिक श्रम करना पड़ता है। बुद्धि से जीविका चलाने वाले बुद्धिजीवियों को भी शारीरिक श्रम का महत्त्व समझना चाहिये। अस्तेय व्रत निष्ठापूर्वक कर्तव्यपालन पर जोर देता है। कामचोरी की वजह से अनेक कामकाज लम्बित पड़े रहते हैं। सरकारी क्षेत्र से अकर्मण्यता की शिकायतें अधिक मिलती हैं। अस्तेय व्रत की भावनाएँ भर कर सरकारी कार्य-प्रणाली को चुस्त-दुरुस्त किया जा सकता है। अकर्मण्यता पाप है, अपराध है। उत्तराध्ययनसूत्र के दसवें अध्ययन में भगवान महावीर अपने शिष्य गौतम को बार-बार कहते हैं कि क्षणमात्र का प्रमाद भी नहीं करना चाहिये। जो व्यक्ति प्रमत्त और आराम-पसन्द होता है, वह स्वयं को और दूसरों को कष्ट देने वाला होता है।[13] उसे चहुँओर से भय रहता है - **सव्वओ पमत्तस्स भयं**।[14] इसलिए जीवन-पथ पर आगे बढ़ने वाले धैर्यवान व्यक्तियों को आलस्य

और गफ़लत में अपना समय नहीं गँवाना चाहिये।[15] आचाराङ्गसूत्र उद्घोषणा करता है- **'उट्ठिए नो पमायए'** अर्थात् उठो, जागो, प्रमाद मत करो।[16] आगम की इन प्रेरक उद्घोषणाओं को समझने वाला सहज ही अस्तेय और अपरिग्रह की आराधना करता है।

अस्तेय और प्रामाणिकता

किसी भी रूप में चौर्यकर्म अनार्यकर्म है। वह अपकीर्ति को बढ़ाता है। चोरी करने से गुण छिप जाते हैं, विद्या निकम्मी हो जाती है और व्यक्ति का विश्वास एवं यश क्षीण हो जाता है।[17] अचौर्य व्रत की तीन प्रेरणाएँ हैं- आर्थिक पारदर्शिता, सच्चरित्रता और जीवन के हर व्यवहार में प्रामाणिकता। अचौर्य व्रत का बाहरी जीवन-व्यवहार से घनिष्ठ सम्बन्ध है। वह व्यक्ति को परिश्रमी, प्रामाणिक और ईमानदार बनाता है। देश की अर्थव्यवस्था के कुशल सञ्चालन और विकास के लिए अस्तेय व्रत अत्यन्त उपयोगी है। वह भ्रष्टाचार को मिटाने का कारगर माध्यम है। 'काले धन' की समस्या का निराकरण अस्तेय व्रत करता है। बड़े-बड़े आर्थिक घोटाले, कर-चोरी, रिश्वतखोरी, तस्करी आदि का त्याग अस्तेय के ही रूप हैं। इसलिए जो व्यक्ति सावधानीपूर्वक अस्तेय व्रत की आराधना करता है; अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह का पालन भी उसके लिए आसान हो जाता है।

प्रामाणिकता के सुपरिणाम

प्रामाणिकता का अर्थ है अपने प्रति ईमानदार होना और दूसरों के प्रति भी ईमानदार होना। प्रामाणिक होने के लिए मर्यादा करना आवश्यक है। सत्य-पालन का अर्थ यह नहीं है कि गोपनीयता को उजागर किया जाए। इसका आशय यह भी है कि व्यक्ति अपने व्यापार में लाभ-प्रतिशत की मर्यादा करें। मिलावटखोरी नहीं करें। व्यापारिक सीमा के बाहर की वस्तुओं का अनावश्यक संग्रह नहीं करें। इन बातों का ध्यान रखकर व्यापार करने वाले देश के व्यापार को प्रामाणिक बनाते हैं और आवश्यकता एवं सामर्थ्य के अनुरूप समृद्ध भी। अस्तेय व्रत का पालन करने से दुकान या कार्यस्थल एवं धर्मस्थल में अन्तर नहीं रहता है। व्यापार और धर्म एक दूसरे के पूरक हो जाते हैं। प्रामाणिक व्यक्ति अपने व्यापार को चिरस्थायी बनाता है। उसके व्यापारिक उत्पादों की हर जगह माँग होती है। उसका व्यापार धर्म-साधना और देश-सेवा का ही एक रूप होता है।

परिग्रह के भेद-प्रभेद

आगम-साहित्य में संग्रह को प्राणिमात्र की संज्ञा बताई गई है। इस वृत्ति को एकाएक तोड़ना कठिन होता है। भगवान महावीर सद्गृहस्थ के लिए नित्य अपरिग्रह की भावना के स्मरण का विधान करते हैं। श्रावक नित्य यह मनोरथ (सदिच्छा) करें कि वह दिन धन्य होगा जिस दिन वह परिग्रह से निवृत्त होकर अपरिग्रह के जीवन की ओर बढ़ेगा। परिग्रह दो प्रकार के हैं- अन्तरंग और बाहरी।[18] अन्तरंग या आभ्यन्तर परिग्रह चौदह प्रकार के होते हैं- मिथ्यात्व, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, क्रोध, मान, माया और लोभ। बाहरी परिग्रह नव प्रकार का बताया गया है। उन्हें गृहस्थाचार के पाँचवें व्रत में बताये भेदों के अनुसार समझना चाहिये।

परिग्रह के तीस नाम

परिग्रह के इन भेदों से स्पष्ट होता है कि जो व्यक्ति भीतर से रिक्त होता है, वह बाहर से उस रिक्तता को भरने का प्रयास करता है। किन्तु उसका वह प्रयास आत्म-वंचना सिद्ध होता है। यहाँ तक कि भीतरी तौर पर परिग्रही का बाहरी त्याग भी व्यर्थ ही होता है। स्पष्ट है कि अपरिग्रह का व्रत व्यक्ति के आत्म-वैभव, भाव-सम्पदा और वैचारिक-सम्पदा को बढ़ाता है। वह व्यक्ति को आत्मविश्वास से भर देता है। वह धन के पीछे नहीं दौड़ता, अपितु उसके पुरुषार्थी व्यक्तित्व के कारण धन उसका अनुसरण करता है। दूसरी ओर अनियन्त्रित बाहरी परिग्रह व्यक्ति को अंतरंग रूप से दरिद्र भी बना सकता है। परिग्रह अनेकरूप होता है। प्रश्नव्याकरणसूत्र में उसके तीस नाम बताये गये हैं-

परिग्रह, सञ्चय, चय, उवचय, विधान, सम्भार, संकर, आदर, पिण्ड, द्रव्यसार, महेच्छा, प्रतिबन्ध, लोभात्मा, महर्द्धि, उपकरण, संरक्षण, भार, सम्पादोत्पादक, कलिकरण्ड, प्रविस्तर, अनर्थ, अनर्थक, संस्तव, अगुप्ति, आयास, अविवेक, अमुक्ति, तृष्णा, आसक्ति और असन्तोष।[19] इन नामों से पता चलता है कि परिग्रह कितना बहुरूपिया है। वह मानव को सुख से जीने नहीं देता है। आचार्य नानेश[20] के अनुसार परिग्रह भोगवृत्ति की तुष्टि का प्रधान आधार है। होना यह चाहिये कि जो अधिक सद्गुणी हो, वह समाज में अधिक शक्तिशाली हो। किन्तु जहाँ धनलिप्सा अनियन्त्रित छोड़ दी जाती है, वहाँ धन/परिग्रह शक्ति और सम्मान का मापदण्ड बन जाता है। इसी मापदण्ड से विषमता का विषवृक्ष फलता है।

अपरिग्रह और इच्छा-परिमाण

गृहस्थाचार में पाँचवें व्रत अपरिग्रह के बाद छठे दिशा-परिमाण और सातवें उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत पर चर्चा होती है। छठे और सातवें व्रत का सम्बन्ध इच्छा-परिमाण से है, जिससे पाँचवें व्रत की आराधना अधिक गहरे अर्थों में होती है। भगवान महावीर कहते हैं कि इच्छा आकाश के समान असीम है, इसलिए इच्छा-परिमाण करने वाला धर्म से, नीति से धनोपार्जन करता है। आचार्य महाप्रज्ञ[21] के अनुसार इच्छा-परिमाण का निष्कर्ष सात बिन्दुओं में प्रस्तुत किया जा सकता है-

1. न गरीबी, न विलासिता का जीवन।
2. धन साधन है, साध्य नहीं। धन मनुष्य के लिए है, मनुष्य धन के लिए नहीं।
3. आवश्यकता की सन्तुष्टि के लिए धनोपार्जन, किन्तु दूसरों को हानि पहुँचाकर अपनी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि न हो, इसका जागरूक प्रयत्न।
4. आवश्यकताओं, सुख-सुविधाओं और उनकी सन्तुष्टि के साधनभूत धन-संग्रह की सीमा का निर्धारण।
5. धन के प्रति उपयोगिता के दृष्टिकोण का निर्माण कर संगृहीत धन में अनासक्ति का विकास।
6. धन से सन्तुष्टि गुण को स्वीकार करते हुए आध्यात्मिक विकास की दृष्टि से उसकी असारता का चिन्तन।
7. विसर्जन की क्षमता का विकास।

इच्छा-परिमाण के अन्तर्गत क्षेत्र की मर्यादा भी की जाती है। जिसका व्यापारिक, राजनीतिक और सामरिक दृष्टि से बहुत महत्त्व है। इच्छाएँ वस्तु और क्षेत्र तक ही सीमित नहीं होती; अपितु पद, प्रतिष्ठा, सत्ता आदि के रूप में भी होती हैं। वस्तु सम्बन्धी इच्छाएँ फिर भी व्यक्ति पूरी कर लेता है, परन्तु पद और प्रतिष्ठा की इच्छाओं का कोई पार नहीं है। धर्म क्षेत्र भी उससे अछूता नहीं है। समाधान के केन्द्र ही यदि समस्या के कारण बन जाएँ तो आदमी कहाँ जाए? पानी में ही आग लगे तो उसे किससे बुझाएँ? समाज और देश का बेहिसाब धन पद और प्रतिष्ठा के लिए अनावश्यक रूप से खर्च कर दिया जाता है। वस्तुत: इच्छाओं का परिसीमन सभी सन्दर्भों में होना चाहिये।

अपरिग्रह और विकास

अपरिग्रह और सन्तोष का अर्थ यह कतई नहीं है कि व्यक्ति अपने जीवन में आलस्य को प्रोत्साहित करे। अपरिग्रह निरन्तर उद्यमशील रहने की प्रेरणा देता है। वह उत्पादन और अर्जन को बाधित नहीं करता है। वह सम-वितरण और अनासक्ति पर जोर देता है। अपरिग्रही अपने लिए ही नहीं, दूसरों के लिए भी जीता है। उपाध्याय अमरमुनि के अनुसार अपरिग्रह व्रत की चार शर्तें हैं- स्वावलम्बन, श्रमशीलता, अहिंसा और निपुणता (कार्य-कुशलता)।[22] राष्ट्र के विकास में चारों शर्तें सहयोगी बनती हैं। एक तरफ अनाज के भण्डार भरे हों और दूसरी ओर बड़ी संख्या में लोग भूख और कुपोषण से मर जाय; ऐसा एक तरफा विकास के कारण होता है। ऐसे विकास में मानव-श्रम और प्राकृतिक संसाधनों का भारी दुरुपयोग होता है। एक तरफ

गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ, दूसरी तरफ खुले आकाश तले सोते लोग। अपरिग्रह सामाजिक समता, आर्थिक समृद्धि और राष्ट्रीय विकास का मूल हेतु है। वह मानव के भीतर-बाहर की दरिद्रता मिटाता है और समाज की दरिद्रता का निवारण भी करता है। डॉ. दयानन्दजी भार्गव[22] के अनुसार भगवान महावीर के अपरिग्रहवादी चिन्तन की पाँच फलश्रुतियाँ हैं- इच्छाओं का नियमन, समाजोपयोगी साधनों के स्वामित्व का विसर्जन, शोषण-मुक्त समाज की स्थापना, निष्काम बुद्धि से अपने साधनों का जनहित में संविभाग और आध्यात्मिक शुद्धि।

अहिंसा से अपरिग्रह तक

जैसे अहिंसा की साधना के लिए अन्य व्रतों का अनुपालन आवश्यक है, वैसे ही अपरिग्रह के अनुपालन के लिए भी अन्य व्रतों का अनुपालन आवश्यक है। प्रथम व्रत अहिंसा की पूर्णता पञ्चम व्रत अपरिग्रह में होती है। इन पाँच व्रतों के समुचित पालन के लिए आगम साहित्य में और भी विधि-विधान, त्याग-तप और व्रत-नियम बताये हैं। तीर्थंकर महावीर का आचार दर्शन बहुजनहिताय और बहुजनसुखाय तक ही सीमित नहीं है, वह सर्वजनहिताय और सर्वजनसुखाय से भी आगे सर्वजीवहिताय और सर्वजीवसुखाय तक बढ़ता है। उनके आचार दर्शन पर आधारित अर्थ-व्यवस्था और समाज-व्यवस्था संसार की सारी अव्यवस्थाओं को समाप्त करने में पूर्ण सक्षम है।

व्यक्तित्व-रूपान्तरण से व्यवस्था-परिवर्तन

प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों के बीच भी आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से जिस समय मानव दिशाहीन हो गया था; उस समय भगवान महावीर ने व्रतों की व्यवस्था देकर मानव को परिश्रम, स्वाभिमान, ईमानदारी, त्याग और प्रामाणिकता से जीने की कला सिखाई। जो व्यवस्थाएँ भारी-भरकम शासकीय और प्रशासकीय खर्च और ढेर सारे राजकीय कर्मचारियों द्वारा ठीक नहीं हो पा रही थीं, भगवान महावीर की सुदृढ़ व्रत-व्यवस्था से उनमें आमूलचूल परिवर्तन होने लगे थे। उस समय जिन व्यक्तियों और राजसत्ताओं ने व्यवस्थाओं का जिम्मा ले रखा था, उनका व्यक्तित्व भी निष्पक्ष, निर्भ्रान्त, निष्कपट और प्रामाणिक नहीं था। भगवान महावीर ने व्यक्तित्व-रूपान्तरण के माध्यम से व्यवस्था-परिवर्तन का ऐतिहासिक कार्य किया। जिसका प्रभाव उनके अपने समय में हुआ, बाद में हुआ, आज भी हो रहा है और युग-युगान्तर तक देश-देशान्तर में होता रहेगा।

सन्दर्भ

1. भावपाहुड 132, समणसुत्तं गाथा 140
2. परिग्गहनिविट्ठाणं, वेरं तेसिं पवड्ढई-सूत्रकृताङ्ग 1/2/3
3. नत्थि एरिसो पासा पडिबन्धो, सव्वजीवाणं सव्व लोए - प्रश्नव्याकरण 1/5
4. अत्थो मूलं अणत्थाणं-मरणसमाधि 603
5. दशवैकालिकसूत्र 6/21, मूर्च्छा परिग्रहः-तत्त्वार्थसूत्र 7/17, जे ममाइय मतिं जहाति, से जहाति ममाइयं- समणसुत्तं 142
6. को णाम भणिज्ज बुहो पर दव्वं, मम इमं हवदि दव्वं अप्पाणमप्पणो परिगहं तु णियदो वियाणन्तो- समयसार 207
7. भार्गव, दयानन्द (डॉ.) 'अपरिग्रह की आधुनिक सन्दर्भ में प्रासङ्गिकता' पृष्ठ-2. सामान्य तौर पर यही माना जाता है कि भगवान महावीर ने भगवान पार्श्वनाथ के चातुर्याम में ब्रह्मचर्य व्रत जोड़ा।
8. जैन, सागरमल (डॉ.)- जैन, बौद्ध तथा गीता के आचार दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ-235
9. चित्तमंतमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहुं। दंतसोहणमित्तं पि ओग्गहंसि अजाइया। - दशवैकालिकसूत्र 6/14
10. गाँधी, महात्मा, 'अपरिग्रह विचार' जिनवाणी अपरिग्रह विशेषांक, पृष्ठ 123
11. देखें, महात्मा गाँधी की पुस्तक 'मंगल प्रभात'
12. सन्त विनोबा, 'सर्वोदय' दिसम्बर-1952
13. जे पमत्ते गुणट्ठिए से हु दण्डेति पवुच्चइ- आचाराङ्गसूत्र 1/1/4/35
14. आचाराङ्गसूत्र 1/3/4
15. धीरे मुहुत्तमवि णो पमायए- आचाराङ्गसूत्र 1/2/1/10
16. आचाराङ्गसूत्र 1/5/2

17. प्रश्नव्याकरणसूत्र 1/3 एवं ज्ञानार्णव 128
18. मिच्छत्तवेदरागा, तहेव हासादिया य छद्दोसा। चत्तारि तह कसाया चउदस अब्भंतरा गंथा। बाहिरसंगा खेत्तं, वत्थु धणधन्नकुप्पभांडाणि। दुपयचउप्पय जाणाणि चेव सयणासयणे य तहा। - भगवती आराधना 1118-1119
19. 'जिनवाणी' अपरिग्रह विशेषांक पृष्ठ 113 एवं देखें, जिनवाणी (अक्टूबर 2014) में प्रकाशित डॉ. दिलीप धींग का निबन्ध 'चतुर्विध कषायों के विविध नाम।'
20. 'समता दर्शन और व्यवहार' पृष्ठ 14
21. 'महावीर का अर्थशास्त्र' पृष्ठ 110-111
22. 'अपरिग्रह दर्शन' पृष्ठ 175
23. 'अपरिग्रह की आधुनिक सन्दर्भ में प्रासङ्गिकता' पृष्ठ 15

-शोधप्रमुख : जैनविद्या विभाग, शासुन जैन कॉलेज, 3, मैडले रोड, टी.नगर, चेन्नई-600017

धन्य-धन्य है साधु-जीवन

श्री जयदीप ढड्ढा

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार मनुष्य की वैभाविक वृत्तियाँ हैं। अपनी इन वृत्तियों पर नियन्त्रण रखते हुए जो नि:स्वार्थ जीवन जीए, वही साधु है। साधु अपने शरीर का हित नहीं सोचते, अपितु आत्मा के हित के लिए तत्पर रहते हैं। उन्हें भूख-प्यास की भी परवाह नहीं होती। वे सभी जीवों का कल्याण चाहते हैं। पशु-पक्षी, पेड़-पौधे यहाँ तक कि सम्पूर्ण सृष्टि के लिए उनके हृदय में करुणा और क्षमा रहती है।

साधु बनने के लिए व्यक्ति को अपनी इच्छाओं का त्याग करना पड़ता है। साधु विचारों से होता है, सत्कर्मों से होता है। पाते रहने की इच्छा से कोई भी साधु नहीं हो सकता। यह इच्छा तब तक नष्ट नहीं हो सकती जब तक कि उसके पास कुछ भी परिग्रह है। संग्रह की प्रवृत्ति सन्त भाव के बिल्कुल विपरीत है। इसलिए साधु वह है, जो परिग्रह का त्याग करता है। देने का भाव रखता है। ऐसी राह दिखाने के लिए ही सन्त की आवश्यकता होती है। सन्त कबीर गृहस्थ थे, पर उनके हृदय में सही रास्ते पर चलने की लौ निरन्तर जलती रही। वही राह उन्होंने अपने दोहों के माध्यम से दुनिया को दिखाई।

जितना मुश्किल गृहस्थी में साधुता और शुचिता से रहना है, उससे भी कहीं अधिक कठिन है दीक्षित होकर साधु का जीवन जीना। वे अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह रूपी पाँच महाव्रतों की पालना करते हैं। इन सिद्धान्तों पर चलने की दृढ़ इच्छा किसी भी उम्र में हो सकती है। बालपन के भी हमारे सामने ऐसे उदाहरण हैं, जिन्होंने खेलने की उम्र में इन व्रतों का पालन करने का संकल्प लिया और आजीवन निभाया। पहाड़ों पर चढ़ना आसान है, पर साधु बनकर अपनी जिम्मेदारियों को निभाना मुश्किल है। अपना घर छोड़ने, एकाकी रहने, अपनी सभी इच्छाओं को त्यागकर संसार से विरक्त होकर रहने के लिए मन की मजबूती चाहिए। साधु की दिनचर्या बहुत कठिन होती है। वे सर्दी-गर्मी में पैदल नंगे पाँव जिनाज्ञा अनुसार विहार करते हैं। चातुर्मास में जब साधु विहार पर नहीं होते हैं, उनकी जिम्मेदारी और बढ़ जाती हैं। वे साधना और स्वाध्याय करते हैं। अपने अध्ययन और ज्ञान को सत्संग और प्रवचनों के माध्यम से साझा करते हैं। अच्छे-बुरे का भेद समझाते हैं। शुचिता से रहने का महत्त्व बताते हैं। गोचरी मिल गई तो ठीक, वरना भूखे ही रह जाते हैं। फिर भी चेहरे पर कोई शिकन नहीं आती। भयंकर गर्मी में प्यास लगने पर भी रात में पानी की एक बूँद भी ग्रहण नहीं करते। यह उनके संयम की सीख है। धन्य हैं ऐसे सन्त, ऐसे ही सन्तों से यह सृष्टि चल रही है। उन्हें हमारा शत-शत वन्दन।

-ढड्ढा मार्केट, जौहरी बाजार, जयपुर-302003 (राजस्थान)

10 मार्च 2023
जिनवाणी 40
ISSN 2249-2011

प्रासङ्गिक

वर्धमान वर्तमान में भी प्रासंगिक

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

शासनपति प्रभु महावीर का देदीप्यमान जीवन अनन्तगुणों का प्रकाश पुञ्ज था। उनके जीवन में अनेक घटनाएँ और प्रसङ्ग उपस्थित हुए। तीर्थंकर प्रभु ने उन विषम घड़ियों में भी जिस प्रकार का समतापूर्ण जीवन व्यतीत किया, वह आज प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणा का असीम स्रोत है। इन घटनाओं का क्षेत्र वैसे तो काफी विशाल रहा है, पर हमारा जीव भी उनके अनेक गुणों में से किञ्चित् गुण प्राप्त करने का प्रयास करे, इसलिए लघु परिधि में ही सही उनके गुणों की कुछ जानकारी प्राप्त कर हम भी उस दिशा में कुछ पुरुषार्थ करने का प्रयत्न करें। साथ ही अपनी श्रद्धा के सुमन हमारे आसन्न उपकारी वीर प्रभु को समर्पित करें। अपने जीवन को परिवर्तित करने का एक क़दम तो बढ़ाएँ।

1. मातृ-सम्मान-गर्भस्थ प्रभु को अवधिज्ञान से ज्ञात हो गया कि मेरे हिलने-डुलने से माता को कष्टानुभव हो रहा है तो वे निश्चल हो गये। परिणामस्वरूप माँ त्रिशला मन में आर्त्तध्यान करने लगी, किसी अनिष्ट की आशंका से उनका चेहरा मुरझा गया। ऐसा जानकर प्रभु ने फिर से अपने अंगों का स्पन्दन प्रारम्भ किया। प्रभु का चिन्तन चला कि अभी तक तो मेरे माता-पिता ने मुझे देखा भी नहीं है फिर भी कुछ क्षणों का मेरा अंगों का सञ्चालन बन्द करना उनके लिए असीम वेदना का कारण बन गया। इसलिए प्रभु ने प्रतिज्ञा की कि जब तक मेरे माता-पिता जीवित रहेंगे, तब तक मैं अनगार नहीं बनूँगा। यह था वर्धमान प्रभु का मातृस्नेह। इस घटना को जानकर हम अपना अवलोकन करें कि हम अपने माता-पिता को कितना स्नेह और सम्मान देते हैं। उनके दुःख और वेदना को कम करने का कितना प्रयास करते हैं अथवा उनके आँसुओं का कारण बन जाते हैं। हमें न किसी दूसरे के जीवन में झाँकना है और न अन्य किसी का निर्णय करना है, अपितु अपने हृदय को टटोलें और यदि कहीं कुछ गलत लगता है तो उसका परिष्कार कर माता-पिता को सम्मान दे। संकल्प करें कि अब की बार यदि उनकी आँखों में आँसू आयें तो वे खुशी के हों। (त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र)

2. बुद्धिशील, पर गर्वरहितता-सात वर्ष की आयु होने पर कुमार वर्धमान को शाला में भेजा गया। वहाँ शिक्षक महोदय द्वारा गणित, ज्योतिष, सामुद्रिक ज्ञान आदि विषय शुरू करते ही प्रभु ने इन सबका तलस्पर्शी विश्लेषण कर दिया। इतने प्रतिभासम्पन्न, प्रखर बुद्धि के धारक वीर के चेहरे पर सौम्यता, सरलता, निरभिमानता थी। इन्द्र भी वहाँ ब्राह्मण के वेश में आकर कुछ प्रश्नों का समाधान शिक्षक महोदय से चाहने लगा। वर्धमान कुमार ने यह नहीं कहा कि-अरे! ये क्या बतायेंगे, मैं बताता हूँ। उनमें भाषा का इतना विनय था कि वे कह रहे हैं-"गुरुजी को व्यर्थ ही परेशान न करें, इन प्रश्नों का उत्तर तो मैं ही दे सकता हूँ।" तब उन्होंने संज्ञासूत्र, परिभाषासूत्र, विधिसूत्र, नियमसूत्र, प्रतिबन्धसूत्र, अधिकारसूत्र, अतिदेशसूत्र, अनुवादसूत्र, विभाषासूत्र, निपातसूत्र इन दस प्रश्नों का समाधान किया, उन्हीं सूत्रों से व्याकरण की रचना हुई। आज के परिप्रेक्ष्य में हम यदि घटना को देखें तो मुख्य रूप से दो बातें सामने आती हैं। 1. बुद्धि की निरभिमानता और 2. गुरु का आदर। आज की युवा पीढ़ी के विद्यार्थियों में गुरुओं के प्रति पूर्व जैसा सम्मान नहीं दिखाई देता। शिक्षकों की पीठ पीछे उनकी हँसी उड़ाना, नाम से पुकारना आदि सामान्य बात हो गई है। आज के छात्र उन्हें एक वेतनभोगी कर्मचारी से अधिक कुछ नहीं

समझते। प्रभु का यह दृष्टान्त शिक्षक सम्मान की अद्भुत छवि पेश करता है। वहीं दूसरी ओर देखें कि थोड़ा सांसारिक किताबी ज्ञान प्राप्त हो जाए, ऊँची शैक्षणिक विद्या सी.ए., डॉक्टर, इञ्जीनियर का पद मिल जाए अथवा आगम आदि कण्ठस्थ हो जाते हैं तो व्यक्ति फूला नहीं समाता। जबकि यह ज्ञान तो सिन्धु में बिन्दु जितना भी नहीं है। एक ओर प्रभु महावीर को अनन्त ज्ञान के धारक होकर भी तुष जितना भी अभिमान नहीं है। वहीं उनके अनुयायी होकर हम अपने अल्प ज्ञान का भी कितना मद करते हैं। अपनी अनुप्रेक्षा करने की आवश्यकता है। (त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र)

3. अद्वितीय सहिष्णुता–एक ओर प्रभु समृद्धशाली सुकुमार राजकुमार का जीवन जी रहे थे और वहीं दीक्षा लेते ही उपसर्गों का ताँता लग गया। उनमें से कुछ उपसर्गों का अवलोकन करते हैं–

1. कटपूतना व्यन्तरी ने प्रभु पर शीतल पवन का तूफान प्रकट किया और शीतल जल वृष्टि की। पर प्रभु ने किञ्चित् भी द्वेष, क्लेश नहीं किया। परिणामस्वरूप समता रस में आप्लावित प्रभु को उस समय परम अवधिज्ञान प्राप्त हुआ। (त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र)
2. शूलपाणि यक्ष ने पिशाच का रूप धरकर तीक्ष्ण नाखूनों और दाँतों से प्रभु के शरीर में पीड़ा पहुँचाई। सर्प–बिच्छू–अजगर बनकर डंक मारे, परन्तु प्रभु साधना–मार्ग में स्थिर रहे। बाद में यक्ष के क्षमापना माँगने के बाद उसे हिताहित का प्रतिबोध दिया। (महावीर चरियं)
3. चण्डकौशिक के डंक मारने पर विष के बदले मधुर दूध का उपहार दिया। प्रभु के अणु–अणु में से रोष के बदले सन्तोष बरस रहा था। प्रभु ने चण्डकौशिक को भी प्रतिबोध देकर समता रस का पान कराया। (महावीर चरियं)
4. एक ग्वाले ने प्रभु को अपने बैल की जोड़ी का ध्यान रखने को कहा, पर प्रभु तो ध्यानस्थ एवं मौन थे। बैल आगे बढ़ गये थे। ग्वाले ने बैलों के बारे में पूछा और उत्तर न पाकर क्रोध में उसने प्रभु को चोर आदि कहकर लकड़ी से प्रहार किया। तब शक्रेन्द्र ने आकर परिचय दिया कि ये भगवान महावीर हैं। ग्वाला भयातुर हुआ, पर प्रभु ने उसे क्षमा कर दिया। (त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र)
5. दुरात्मा संगम देव ने एक ही रात में प्रभु को भयानक बीस उपसर्ग दिये और ध्यान से विचलित करना चाहा, परन्तु प्रभु मेरु की भाँति अचल, अकम्प रहे। (त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र)
6. बैलों का ध्यान न रखने पर एक ग्वाले ने प्रभु के दोनों कानों में तीखे कीले ठोके। पर भगवान ने उसे किञ्चित् भी दोष नहीं दिया, बल्कि समता–सिन्धु स्वभाव में रमण करते हुए कर्म रूपी कर्ज से मुक्त हो रहे थे। (त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र)
7. गोशालक ने प्रभु पर तेजोलेश्या का प्रयोग किया। प्रभु को यह पहले से ही ज्ञात था, फिर भी प्रभु ने प्रतिरोध करना उचित नहीं समझा। प्रभु शान्त मुद्रा में ध्यान में लवलीन थे। उन्होंने गोशालक के प्रति सद्भावना ही भायी। (भगवतीसूत्र)।

ऐसे अनेक प्रसङ्ग प्रभु के जीवन में आये, पर प्रभु ने हमेशा समता ही नहीं रखी, अपितु अपने हर द्वेषी के प्रति मैत्री भाव एवं सद्भाव रखा। हमेशा कर्म–विपाक को आगे रखकर स्वयं के कर्मों का दोष समझा। अपने हर संकटदाता को भी हित उपदेश देकर अनन्त करुणा का परिचय दिया। भगवान ने तो देहान्तक परिस्थिति आने पर भी तनिक क्रोध नहीं किया।

अब हम अपनी परिस्थिति का अवलोकन करें। हमें शारीरिक यातना, प्रताड़ना, देहान्तक कष्टों का सामना शायद नहीं करना पड़ता है। अधिकतर तो शब्दों की कहासुनी या मन–मुटाव की परिस्थितियों से ही गुजरना पड़ता है। पर हम उन्हें भी सहन नहीं कर पाते। कहाँ हमारे आराध्य प्रभु आधि–व्याधि–उपाधि के कष्ट को समता से सहन कर गए और उन्हीं की सन्तान कहाने

वाले हम लोगों की स्थिति क्या है? प्रभु ने निमित्त को नहीं उपादान को कारण माना, इसलिए ज्ञाता-द्रष्टा भाव में रमण करते रहे। पीड़ा पहुँचाने वाले के प्रति भी उनका आत्मीय भाव था। हमें तो निमित्त ही दोषी लगता है, यह हमारे सोच का परिणाम है। निमित्त के प्रति इतने कषाय के भाव आते हैं कि उन्हें दु:ख पहुँचाने का, अपमान करने का एक भी मौका नहीं चूकते। भगवान के जीवन चरित्र से सहनशीलता की सीख लेकर कुछ अंशों में ही सही समभाव का प्रयास तो करना ही चाहिए।

4. दयालुता–गोशालक प्रभु के साथ विहार में था। वन में वैश्यायन नामक तापस आतापना लेकर अज्ञान तप कर रहा था, पर वह दयालु भी था। वह जूँ आदि छोटे-मोटे जीवों को बचाने के लिए अपनी जटा में स्थान दे देता था। गोशालक ने उसका मजाक उड़ाया। क्रोधित होकर उसने तेजोलेश्या का प्रयोग किया तब प्रभु ने शीतलेश्या से उसे जीवनदान दिया। प्रभु को अपने ज्ञान से यह ज्ञात था कि यही गोशालक मुझ पर एक दिन तेजोलेश्या का प्रयोग करेगा, फिर भी प्रभु की असीम दयालुता थी कि उसे बचाया। क्या हम किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति सद्भाव रख सकते हैं जिसके लिए हमें पता चल जाए कि यह भविष्य में निश्चित रूप से हमें ही हानि पहुँचाने वाला है। प्रभु की सोच में कितनी ऊँचाई थी। चमरेन्द्र के जीव के लिए भी प्रभु के चरण युगल रक्षक बन गए तो सिद्धदत्त नाविक की नाव भी प्रभु की महती कृपा से ही किनारे लगी थी। (आवश्यकनिर्युक्ति एवं भगवतीसूत्र)

5. आत्मनिर्भर स्वापेक्षिता–प्रभु पर जब दीक्षा के प्रारम्भिक काल में उपसर्ग आते तब जो लोग उन्हें जानते थे, वे उपसर्ग मुक्ति में सहायक बन जाते थे। ऐसा सोचकर प्रभु ने अनार्य देश की ओर विहार किया, जहाँ उन्हें लोमहर्षक उपसर्ग आये। साधना के बीच आने वाली कठिनाइयों को देख शक्रेन्द्र ने उपस्थित होकर निवेदन किया कि प्रभो! मैं आपके चारों ओर पहरा देना चाहता हूँ, जिससे आप निर्विघ्नतापूर्वक आराधना कर सकें। प्रभु ने समाधान किया कि तीर्थंकर किसी की सहायता की अपेक्षा नहीं करते, वे अपने अनन्त पुरुषार्थ से निर्वाण प्राप्त करते हैं। वे परापेक्षी नहीं, स्वापेक्षी होते हैं। अपने जीवन का अवलोकन करें, प्रभु ने सोचा कि कर्मों का बोझ जल्दी-जल्दी कम हो, इसलिए आगे होकर स्वयं ने अनार्य देश का मार्ग चुना। हम थोड़ा-सा बुखार आ जाय तो सबसे पहले धार्मिक क्रिया, सामायिक, प्रवचन को ही तिलाञ्जलि दे बैठते हैं। किसी भी औषधि का सेवन बिना सोचे-समझे करने को तैयार रहते हैं। यह भी नहीं देखते कि यह औषधि शाकाहारी भी है या नहीं। भगवान की सहायता के लिए स्वयं शक्रेन्द्र खड़ा है और प्रभु मना कर रहे हैं। हमें यदि बच्चे का प्रवेश कराना है, सरकारी नौकरी लगवानी है, अपना कोई काम निकलवाना है तो किसी मन्त्री, अफसर तक पहुँच निकालकर जाने का प्रयत्न करते हैं, क्योंकि हमें अपने पुरुषार्थ और कौशल पर विश्वास ही नहीं है। प्रभु का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणास्पद है। उसे जानें, पढ़ें, समझें और जीवन को सही दिशा देने का प्रयत्न करेंगे तो वीर के सच्चे अनुयायी कहलायेंगे। वीर का अनुयायी निश्चित तौर से एक न एक दिन अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त करता ही है।

महावीर तेरी हर प्रेरणा, मेरे दिल को है भायी,
तेरे हर एक क़दम में, समता है समायी।
कुछ तो हम भी चलें उस पर, गुण गाथा जो है गायी,
तभी सही अर्थों में बन पायेंगे, हम तेरे सच्चे अनुयायी।।

-एस 149, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302018

卐 भगवान महावीर के अहिंसा-धर्म, संयम-धर्म का पालन करने वाले गृहस्थ ऐसे होते हैं, जिन्हें अपने धन का त्याग करना पड़े तो संकोच नहीं करते।

卐 साधना के मार्ग पर चलने से मनुष्य में निर्भयता आती है। ***-आचार्यश्री हस्ती***

10 मार्च 2023
जिनवाणी 43
ISSN 2249-2011

English-section

ACHARYA SHRI HASTI ON CONTEMPORARY GLOBAL PROBLEMS AND REMEDIAL MEASURES

Prof. S. R. Bhatt

(continue from the last issue)

Environmental Crisis and Remedial Measures

There is a very problematic but highly significant enigma of human life concerning freedom and responsibility in the context of environmental disruption and pollution and consequent ill effects experienced in our concrete day to day living all over the globe due to misuse of freedom and lack of responsibility. The pollution is not just physical in earth, water, air, fire and space. It is at the mental and intellectual levels also. It is all-round at the individual level, at the family level, at the community level, at the social organizational level and at the cosmic level. Since all pollution and perversion is human making there is need to regulate human conduct. This is real deep ecology. Physical ecology is only external and it is controlled by internal ecology which is foundational. We only raise environmental concerns and do not care to cultivate environmental consciousness. Instead of trying to treat the outer symptoms we have to go to the root causes. Then only genuine solution can be brought about.

Unfortunately under the influence of *avidyā* human mind is prone to perversion and susceptible to wrong-doing and evil. The perversity-prone human mind more often then not indulges in law-violation rather than law-abidance in this lawful cosmos. This leads to ecological and environmental disruption and pollutions. . Sometimes this is caused out of ignorance, sometimes by selfishness, sometimes by force of circumstances but more often by weakness of will or perverse habit of mind. It is not unexpected as its seeds are potentially present in human mind because of the past karmas which start fructification before one becomes aware of it or makes an attempt to get rid of it. This is one of the facets of the operation of the law of *karma.* This law has attributive, retributive and distributive facets which need to be understood properly. But it is very difficult to understand this operation and go beyond its labyrinth. Only by *samyak-darśana, samyak-jñāna* and *samyak-caritra* this can be possible.

Since all pollution and perversion is human making there is need to regulate human conduct. There is moral degeneration everywhere. The discipline of ethics is primarily concerned with postulation of norms for good human life and regulation of human conduct in accordance with these norms. On the presumption that human being is a *puruṣa,* ethical consideration, ethical theorizing and ethical judgments are undertaken. As stated earlier rationality as discriminative ability implies freedom to choose but being guided by certain norms. The determination and choice of alternatives requires norm-prescription but human freedom also implies a scope for both norm-adherence and norm-violation. Values to be pursued and disvalues to be shunned are both equally central to moral considerations. Body, senses, breath and mind are governed by the subtle vibrations *(bhāva*). The mind, in turn, leads and shapes the entire cosmic process. If we have *kuśala-citta* (righteous

mind shaped by *samyak-darśana* and *samyak-jñāna*) we perform good deeds and virtues spread. But if we have *akuśala-citta* (vicious mind) we indulge in bad deeds and vices spread. Delusion (*avidyā*) produces infatuation (*moha*) and dereliction (*pramāda*) which in turn give rise to passions (*kaṣāya)* like greed, hatred and all other vices. Moral degeneration results in pollution within and without. The point to be noted is that no event and no phenomenon, good or bad, is self-existent or eternal. The implication to be derived is that all ecological pollutions have a causal origin and all these are caused by human mind and resultant harmful actions. Their annihilation also is to be caused by human mind only. This means that both ecological equilibrium and disequilibrium are causal happenings. They are caused by human conduct. As a most evolved species in the cosmic evolution human has acquired the capacity to preserve Nature or harm Nature. Since we have caused the evils and consequent undesirable suffering, it is our responsibility to eliminate them. This is what can be termed as 'Universal Responsibility'. Since we are the most evolved we are the most responsible being. We therefore carry a universal responsibility not to create ecological imbalance and to rectify whatever imbalance we have caused because of our folly. As stated earlier our entire actions stem from our consciousness. If we have pure consciousness *(kuśala-citta*) our actions will be good and conducive to well-being. If we have impure consciousness our actions will certainly be bad and they will lead to all miseries and sufferings. Through our actions we help or harm others and ourselves. All our thoughts, words and deeds are results of our past actions and shape our experiences of the present and the future. What we shall be depends on what we are at present and how we behave in the present. We have therefore to cultivate *samyak-dṛṣṭi* (right attitude) towards life and Reality. We have only to cater to our needs and not to feed our greed. We have become too much selfish, consumerist and exploitative. We have ceased to respect our authentic existence and also the authentic existence of others. Jainism advocates a balanced view of life. Mere material prosperity with the development of science and technology or mere moral and spiritual preaching cannot mitigate worldly sufferings. For a meaningful solution a symbiosis of the two is needed. Historically right from the times of *Tīrthankara Bhagvāna Ṛṣabhadeva* Jainism has been performing this task. Eradication of egocentricity and cultivation of existential openness and universal sameness based on the principles of interdependent existence and interconnectedness of all phenomena enunciated in the Jain tradition are remarkable and the most distinguishing features of Jain ethics that have great relevance and significance in contemporary times and in the new millennium to bring about universal peace, harmony, prosperity and well being.

Leading an ecologically responsible life is possible by synchronizing five environments surrounding an individual--family, community, society, nation and cosmos. The guiding principles for this are *samyakatva* (rightness) and *parasparao-pagraha* (mutual support). It is an ethical path of enlightened knowledge and conduct. The entire cosmos is a network of mutuality of events characterized by universal interdependence, interpenetration, interconnectedness and interrelationships (*parasparāpekṣā).* In this undivided world everything miraculously supports everything else. It exhibits 'mutual interpenetration and interfusion of all phenomena'. The point is that there is wholeness of life, self–sameness of all

existence and therefore we must cultivate universal love, universal compassion, universal kindness and respect for all lives and all existence.

***Ahimsā* and environment**

The doctrine of *ahimsā* provides a foundation to an environmental perspective to be offered to humanity to meet the present day crises that are endangering and threatening all existences human as well as non-human. It also deals with the cardinal Jain teachings that can help in bringing about an ecological lifestyle. Ecological thinking and ecological living go hand in hand and a symbiosis of the two has been the keynote of the Jain view and way of life. Concern for the well-being of the living beings and the physical world has been an important element throughout the history of Jainism. Human existence and destiny are inextricably linked with environments. Recognition that human beings are essentially dependent upon and interconnected with their environments has given rise to instinctive respect and care for all living beings and Nature. Every existence from elementary particles to plants, animals, birds and human are participatory members of the planetary community having personal dignity, inherent worth and inviolable rights to exist and grow.

Ahimsā is not just non-killing but a positive action in the form of unselfish friendliness and compassion for all existence based on the spirit that all existence is as sacred as our own existence. It therefore preserves life and ensures durable peace. *Ahimsā* further implies giving due opportunities to all existence for self-preservation and self-development. There should be no deprivation or exploitation. *Ahimsā* also means removal of suffering of others, offering joy to them, service to all needy and active involvement for good of all. Jain ecology is based on conservation ethics of mutual care and share, protection and enhancement (*yoga* and *kṣema*). Love, compassion, kindness, friendliness and concern for others should be as natural and instinctive as it is for our own selves. The cardinal principle of Jain eco-ethics is, "In joy and safety let every creature's heart rejoice". It is an enlightened view and way of life. Apart from loving Nature the Jain tradition has always advocated love and respect for all beings. All living beings are creatures of Nature. Nature provides them physical form and sustains them. Nature environs them and provides them nourishment. So the principle of *ahimsā* tells us that one which you want to kill is your own self as your existence depends on that thing. *Bhagavāna Mahāvīra* also said that 'one who denies the existence of others denies his/her own existence'. So earth, water, air, fire and space all have life to be respected and preserved. In order to ensure firm faith in this belief a living tree is associated with all *Tīrthankaras* and insistence in the lap of Nature is highlighted. The insignia of all *Tīrthankars* are also living beings. *The theories of nine nidhis and fourteen ratnas have similar ecological considerations.* Six positive virtues (*śukla leṣyās)* help in preservation of physical and mental ecology. The twelve precepts enumerated in *Uvasagadāsao* are directly or indirectly connected with environment. In fact all *Mahāvratas, Aṇuvratas, Gunavratas* and *Śikṣāvratas* are foundational to Jain view of ecology and are related to *ahimsā* and *aparigraha.*

Peace and Sustainable Development

Peace and sustainable development also go together. The term 'sustainable development' is a fashionable catch word these days and it has acquired popular currency for socio-economic developmental policies and strategies with a concern for

quality of life, inter-generational and intra-generational justice, preservation of eco-systems, forestry, natural capital, etc. The traditional Indian perspective of development represented by the terms *'svasti', 'śivam', 'kalyāṇa', 'maṇgala',* etc. meaning universal well-being has been genuinely sustainable by virtue of its being holistic, integrated, all-comprehensive and futuristic taking into account individual, social and cosmic dimensions of existence in its material as well as spiritual aspects. It envisages no incompatibility or antagonism or conflict among these, as they are all conceived and experienced as inter-related and inter-dependent elements of one and the same whole.

Right from the dawn of human civilization India has always projected the sublime ideal of cosmic unity and universal perfection. Projecting the inspiring ideal of the entire cosmos being one family (*vasudhaiva kuṭumbakam*) the Indian culture has tried to inculcate the attitude of seeing self-sameness everywhere (*sarvatra sama dṛṣṭi*) and of being engaged in the well-being of all existence (*loka samgraha*) without any selfish consideration (*niṣkāma bhāva*). Hatred and malice towards none, friendliness and compassion for all, absence of deprivation and exploitation in all respects, this has been the quintessence of Indian culture at all times in all traditions. The famous '*Śāntipāṭha*' of Indian culture sums up the Indian vision of sustainable development or total development as follows : "May there be peace and prosperity in the outer space and inner space, on earth, in the waters, in the life-giving vegetable kingdom, in plants and trees, in the entire cosmos, in the entire Reality, everywhere and at all times. May there be peace and prosperity peace and prosperity alone (never otherwise). May everyone attain and experience peace and prosperity. (*Aum dyauḥ śāntirantarikṣa śāntiḥ pṛthivī śāntirāpaḥ śāntirauṣadhayaḥ śāntiḥ vanaspatayaḥ śāntiḥrviśvedevāḥ śāntiḥrbrahma śāntiḥ sarva śāntiḥ śāntiḥrevasantiḥ sā mā śāntiredhi)"*

In the history of humankind the need for peace has never been as acute as it is today. The reason is that there has been all-round animosity and such a dangerous increase of weapons of mass destruction that the entire human race can be eliminated. War first starts in the human mind and not elsewhere due to perverted psyche. Our lopsided materialistic approach to development has resulted today in multiplication of disparity and deprivation, injustices and imbalances, subjugation and inequalities leading to disruption of peace. There has been all-round moral degeneration resulting in alarming rise in crime and corruption. There is no denying of the fact that during 19th and 20th centuries there has been rapid and tremendous progress in science, technology and in all walks of material life. But the fruits of all this progress have not only been inequitably distributed but they have also been counter-productive and evanescent. Never there have been such disasters and destructions threatening annihilation of life and existence. Even in a traditional country like India there has been a steep decline and collapse of value-system under the impact of this materialistic onslaught upsetting the geographical and social ecology. The way pollution is increasing and the rate at which crimes and criminals are mushrooming makes us doubt as to whether it is a development sustainable and worthwhile.

Violence and terrorism

The present day world is passing through a period which is beset with value-crisis. This crisis has pervaded all the spheres of value-realization. It is mirrored in the human beings right from childhood to old age in the form of

aimlessness, indiscipline, unrest, strikes, violence, disobedience of authority etc. What is needed is to make a deeper analysis of the problem so as to find out its very roots, and to attempt to visualize whether a reform in human psyche through proper education, which is the most important and foundational sphere of value-realization, can bring about its dissolution. Terrorism and murders, thefts and decoity, deceits and raps are the most glaring instances of spread of vices which has bedeviled human society.

We are painfully aware of the fact that there is all-round spread of vices in human society due to loss of virtues in human nature. A deeper penetration into the problem would reveal the fact that the present day tendency of value-negativism is a resultant phenomenon of the loss of faith in a moral and spiritual order. The inevitable consequence of such circumstances has been the disappearance of moral virtues and the spread of vices. As a matter of fact these two phenomena are the two aspects of the same situation. In order to resolve the value-crisis two ways, to be employed simultaneously, have been suggested by the Jain thinkers. The first is that of prevention, i.e., to diagnose and eradicate the possible causes of the origin of vices. Technically it is known as stoppage of inflow of karmas. The second is that of cure, that is to say, to provide morality a solid spiritual footing. It is known as destroying the accumulated karmas. Jainism is particularly concerned with virtuous life and eradication of vices. Acharyashri has delineated on this problem and has suggested concrete measures which need to be attended to.

Menace of Terrorism

Among the multiplicity of vices the malaise of terrorism is most wide spread. There seem to be two main reasons for this, one is injustice and poverty and the other is religious misinformation. So far as poverty is concerned it is the responsibility of the society and state to provide job-oriented education so that everyone gets suitable livelihood. Education is an important tool not only for survival but also for quality of life in the competitive world. By cultivating life-skills for vocational performance it is a preparation for life, a living with dignity and joy, with economic self-sufficiency and material comforts, with mental peace and contentment. Thus, education is a liberating force from poverty and deprivations, stagnation and decadence. Education for good economic planning is essential. . Present day models of economy have resulted in profiteering, deprivation and injustice. This is one of the reasons for rise of bloodshed and terrorism and even wars for getting control over the natural resources. What is needed is compassionate and sustainable economics which caters to the needs of all. This necessitates moral foundation of economics.

Jain Ethics as a Panacea for Religious Fundamentalism and Violence

The other form of terrorism is in the name of religion and it has acquired global dimension and needs deeper analysis. In fact every religion worth the name has to be true, good and beautiful. It has to be beneficial universally. No religion can be bad or harmful. A true adherence to religion must ensue in respect for others' life and others' ways of living. There are alternative pathways to the goals of life and if we are sincere in our intentions and earnest in our efforts we can realize them in different ways. This is the essence of Indian culture and this is also the message of all religions of the world. Religious pluralism is the hard fact of our existence and we have to accept it. This acceptance is possible only if there is mutual understanding based on proper study of

scriptures of different religions. This alone will entail inter-religious respect and harmony. If we are aware of the basic principles of our own religion as also of others' religions there cannot be conflicts in the name of religions. There is no such thing as religious conflicts in the sense of conflicts among religions. The so-called religious conflicts are conflicts among the misguided votaries of religions. Religions are mutually tolerant but not their misguided votaries. Here again comes the role of education. It is not religious education that is needed but education about religions. It is unfortunate that majority of the people are not only ignorant about others' religions but they are also ignorant about their own religion. It is this ignorance that is at the root of all conflicts. It is therefore an imperative need to undertake study of 'comparative religion' at different levels of education highlighting the essential unity among all religions. According to the Jain doctrine of *naya* every religion is true from a particular perspective and useful under specific circumstances. The same is the case with philosophical theories. Acharyashri has advocated equal value of all. He has made a subtle distinction between " *samabhāv*a" and *"sahiṣṇutā*. He points out that psychologically *samabhāava* is not possible but *sahiṣṇutā* should be practiced. This is a unique view which should be emulated by all. In the present circumstances thoughtful deliberation on this problem from the view point of *anekāntavāda* may be of great help to redeem the situation and to develop firm belief that co-existence and mutual appreciation of all religions are the only way out. Religiosity seems to be ingrained in human nature and because of varied human psyche multiple religions have come to exist. Plurality of religions cannot be eliminated and there cannot be one universal religion. So the only way out is their co-existence with cordiality and harmony. It has to be recognized that there can be multiple ways of conceptions of God and modes of worship. We have to reckon with this fact. Jain theory of *anekāntavāda* is helpful in cultivating such mind set. We need to understand basic tenets of our own religion and also those of other religions. Then we shall come to appreciate that there is fundamental unity in their tenets in spite of differences in practice. Jain thinkers have upheld this point.

Cultural coexistence

In this age of globalization when the world has shrunk with fast means of mobility and communication network there has been interaction among different cultures. There is inevitable cultural pluralism. Multiple cultures have to coexist. This necessitates mutual respect and appreciation. Each culture is true and valuable in itself. Exchanges of ideas among them may enrich all and make them free from dogmatism and bigotry. Encounters among different cultures should not be for subjugation or subordination but for mutual give and take. This alone can ensure peace and prosperity.

The multi-hued tapestry of world culture glitters with numerous shining strands right from the dawn of human civilization. The multiple cultures of the world are quite varied and astonishing. They display some commonalities as well as differences, similarities as well as dissimilarities. Without proper understanding and appreciation of these and without thorough grasp of these one should not undertake generalizations and comparisons otherwise they may not be genuine and helpful. In this enterprise one should take judicious care to avoid false anti-thesis and monolithic comparisons. However, the variety of cultures has broad similarities which may enable us to have mutual understanding and call for a need for co-

existence with mutual reinforcements. They provide richness to human heritage and are valuable in themselves. In the world history there has been ceaseless flow of several thought currents with new tributaries joining them. There is multiplicity embedded in unity and therefore human civilization is comparable to a garland of varied and variegated flowers each contributing to the symbiosis of the mixed fragrance. It is like a symphony of the play of multiple musical instruments in an orchestra each contributing its melodious tune to the totality. Of course there have been some jarring notes but they should be treated as aberrations rather than normal happenings. So the point is that multiculturalism has come to stay. Therefore, it would not be wise to talk in terms of 'clash of civilizations' since all cultures and civilizations are of equal value and utility and complementary in character. All of them have to survive and thrive. The need of the day is cultural dialogues, mutual give and take, harmony and concord. Any talk of cultural superiority or hegemony is harmful to peaceful living and global harmony.

Multi-culturalism is a basic plank of holistic view of Reality and life. It is the view of manifoldness and multifariousness which provides a basis for peaceful co-existence, corporate living, cooperative enterprises, mutual caring and sharing, judicious utilization of natural and human resources, interconnectedness of all existence and their reciprocity. It advocates the sublime ideals of equality, fraternity, justice and non-violence. The philosophy of inclusive pluralism, concomitance, concordance and coordination ensures adaptive flexibility and reconciliation of opposites that is very much needed these days. It is particularly helpful in intercultural dialogues, religious harmony, conflict resolution, social cohesion and peaceful living.

Compassionate economics

It is universally realized that all is not well with the contemporary economic situation all over the world. There is no doubt tremendous material progress but the basic question is that has it been able to usher in the aspired peace and the desired prosperity at the physical, mental and spiritual levels? A large number of people are abject poverty-stricken. Some people do have enormous means of material and mental comforts but do they also not feel the evanescence of all this? The crux of the situation is that the present-day distracted humanity is suffering from exhaustion of spirit and languishing in the narrow and rigid confinements of ego-centralism, parochialism and disastrous materialistic consumerism. So long as one is entangled in the labyrinth of materialism one does not feel the pinch of it. But the moment one gets out of it one feels exhausted and lost. It is a paradoxical feeling of having and not-having, of likes and dislikes, of contentment and discontentment, of seeking and shunning.

Need for Paradigm Shift

Apart from the above stated melancholy situation we are beset with a global economic slowdown and this may result in collapse as well. There are problems arising due to Globalization which are also compelling the thinkers of today to seek for new model of economic planning, financial management, and industrial production, distribution and consumption. In today's shrunk world members of remote clans have now become our immediate neighbors, in both actual and virtual realities. With the emergence of such a global society arises the increasing need for a global industrial and business ethics and multinational dialogue. Traditional financial systems were developed primarily to deal with human relationships within a particular social

group. In this global society, however, we are more and more interacting with people of different nations with variant ideals, ideas, cultures, and customs. There is a need to evolve a new paradigm of economics in the form of Global economy of mutuality and interdependence, of reciprocity and exchange, of mutual care and share which can enable us to deal with such entirely new set of circumstances in an appropriate way. It has therefore become imperative to explore deeper and higher dimensions of human and material resources by means of which we can successfully work for the victory of the ideals and values which have inspired onward march of civilizations.

It is deeply felt that the present day thoughts and practices in the sphere of economics are engulfing the entire world in a severe crisis and therefore this calls for sober thinking as to what ails the prevailing states of affair and how to rectify the root causes of the problems facing the humankind. In view of urgency of the situation apparent symptoms are to be attended, root causes are to be discerned and curative measures are to be adopted. But first it is imperative to go to the root causes and undertake preventive and remedial measures. This necessitates rethinking about economic principles, policies, planning and programs.

There should be no denial of the fact that the inquisitive mind is looking for a redeeming knowledge. The western economic thought seems to have reached a point of saturation resulting in a global economic turmoil. Therefore it calls for a bold initiative for paradigm shift for which some directions can come from the classical Jain thought. The Jain approach is that of a moderate economy based on 'Middle Path' which is sustainable both in production and consumption that are the two aspects of economic planning and development. The Jain way is an economy of balanced development, balancing different pairs like production and consumption, individual and society, nation and universe, physical and spiritual, present and future and so forth. It is holistic and integral approach to economic issues from micro and macro perspectives, which measures development in terms of prosperity, health and happiness of the present and the future generations in terms of intra-generational and inter-generational justice. It provides for a cosmo-friendly economy in which instrumental and intrinsic goods are put in a symmetrical and balanced harmony. It is an economy of compassion and communion, of peace and non-violence.

Jain model of economy is that of caring and sharing. It is caring in the sense of judicious utilization of resources, and equitable sharing of the production with minimal consumption. It is sharing with the present and with the future. This sharing means limitations of wants, desires and possessions, curb on unlimited cravings, unlimited accumulation and unlimited consumption and leaving natural resources for posterity. Acquisition of wealth is not bad, only attachment to it or its misuse is to be avoided. The guiding principle is, "Use that which is needful and give the surplus for future generation". There has to be sustainable production and fair distribution. Everyone has equal right to share the natural resources and therefore there should be no deprivation. This implies intra-generational justice and fair play and also inter-generational justice and fair play. Thus it stands for non-consumerist attitude wherein the policy is, there should be production only if needed and not first production and then arousal of needs as is the practice these days. The present day policy of advertisement and seduction should be stopped. True renunciation is a state of mind of

a human being. It is not only renunciation of unnecessary material goods or consumerist mindset but also evil thoughts and feelings, rigid attitudes and wrong beliefs. Carelessness, selfishness, obstinacy and greed are the causes of violence. Their eradication requires cultivation of pious mind and practice of virtuous conduct.

While summing up the rich and varied messages of Acharyashri a reference should be made to his emphasis on *svādhyāya, sāmayika* and *prāthanā* which should be a part of our daily routine. We should lead a simple and pure life. Acharyashri has laid emphasis on vratas pertaining to *samvara* and *nirjarā* which can solve the present day problems. They are not to be preached but practiced with all sincerity and honesty. This is not easy but not impossible and very much needed. If we can do so to whatever extent possible this will be true homage to Acharyashri.

Chairman, Indian Philosophy Congress, Former Professor & Head, Department of Philosophy, University of Delhi
MP-23, Maurya Enclave, Pitampura, Delhi-110034

धूम्रपान छोड़ने के आसान तरीके

श्री अभय कुमार जैन

1. संकल्प लें कि अब धूम्रपान, सिगरेट, तम्बाकू का सेवन नहीं करूँगा।
2. धूम्रपान आप एक दिन में तो अचानक नहीं छोड़ सकते, इसलिए पहले महीने के हर सप्ताह में दो दिन ऐसे निकालें जिस दिन आप तम्बाकू या धूम्रपान नहीं करें।
3. जब भी आप किसी सिगरेट की दुकान पर जायें तो पूरा पेकेट न खरीद कर 1-2 सिगरेट ही खरीदें। इसके साथ ही पूरी सिगरेट भी न पीयें।
4. जब भी आपको सिगरेट पीने की अधिक तलब हो तब घूमने जायें, अच्छी पुस्तकें पढ़ना शुरू कर दें अर्थात् अपना मन हटा लें। अपने कमरे या कार्यालय में किसी भी प्रकार की कोई ऐसी वस्तु न रखें जो धूम्रपान या सिगरेट की याद दिलाए।
5. आप धूम्रपान छोड़कर एक गुल्लक बना लें तथा प्रतिदिन धूम्रपान पर होने वाला खर्च उस गुल्लक में डालें तथा एक माह बाद खोलें। आपको यह कल्पना भी न होगी कि इतनी रकम जमा हो गई तथा क्या मैं इतनी रकम धुएँ में उड़ा देता था।
6. केफीन युक्त चीजें चाय, चॉकलेट, आईसक्रीम या कॉफी का सेवन न करें। जब भी तलब हो सुपारी, इलायची, सौंफ, लोंग का सेवन करें।
7. आप अपने दोस्तों को बता दें कि मैंने धूम्रपान छोड़ दिया है तथा उन दोस्तों के साथ न रहें जो धूम्रपान के शौकीन हैं। अपने घर, ऑफिस की टेबल में रखी हुई बीड़ी, सिगरेट और एश ट्रे हटा दें।
8. देश के कई किशोर किशोरियाँ धूम्रपान करते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि यह तनाव को कम करता है, जबकि यह धारणा बिल्कुल गलत है।
9. जब भी तम्बाकू की याद आये एक गिलास ठंडा पानी पीयें। शिकंजी, गन्ने का रस, दही की लस्सी, छाछ का सेवन करें, इससे तत्काल ही ताजगी आ जाती है। दूध का सेवन भी धूम्रपान की इच्छा को रोकता है।
10. बहुतेरे लोग प्राय: शौच से पूर्व तम्बाकू सेवन या धूम्रपान करते हैं, उन्हें चाहिए कि प्रात:काल गुनगुना पानी पीयें, कुछ देर खुली हवा में टहलें। ठण्डी हवा से तनाव दूर होता है, मन प्रसन्न हो जाता है तथा धूम्रपान से ध्यान भी हट जाता है।

-तृप्ति वृन्दा, भवानी मण्डी (राजस्थान)

पूज्य कुशलगणी की जय

।। श्री महावीराय नमः ।।

।। जय गुरु हस्ती ।।

श्री कुशलरत्न गजेन्द्रगणिभ्यो नमः

परम श्रद्धेय जैनाचार्य श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के सुशिष्य

आचार्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की जय

श्री श्वे. स्था. जैन चतुर्विध संघ के हितार्थ प्रमुख मुनियों द्वारा स्वीकृत

पाक्षिक पत्र विक्रम सम्वत् 2080

वीर सम्वत् 2549-50 (निर्णय सागर पंचाग से सम्पादित) सन् 2023-2024

क्र. सं.	मास-पक्ष	तिथिवार	पक्खी दिनांक	घड़ी पल	क्षय तिथि	वृद्धि तिथि	रोहिणी नक्षत्र	पुष्य नक्षत्र
1	चैत्र सुदि	14 बुध	05.04.2023	07-06	-	13 मंगल	6 सोम	10 शुक्र
2	वैशाख वदि	14 बुध	19.04.2023	12-53	6 मंगल	-	-	-
3	वैशाख सुदि	14 गुरु	04.05.2023	44-15	-	-	3 रवि	8 शुक्र
4	ज्येष्ठ वदि	30 शुक्र	19.05.2023	38-44	9 शनि	-	-	-
5	ज्येष्ठ सुदि	14 शनि	03.06.2023	13-41	-	7 शनि	2 रवि	6 गुरु
6	आषाढ़ वदि	30 रवि	18.06.2023	10-45	2 सोम	-	14 शनि	-
7	आषाढ़ सुदि	14 रवि	02.07.2023	36-12	-	-	-	3 बुध
8	प्र.श्रावण वदि	30 सोम	17.07.2023	45-06	4 गुरु	-	12 शुक्र	-
9	प्र.श्रावण सुदि	15 मंगल	01.08.2023	44-47	14 सोम	3 शुक्र	-	1 मंगल
10	द्वि.श्रावण वदि	30 बुध	16.08.2023	22-15	6 रवि	11 शनि	10 गुरु	14 मंगल
11	द्वि.श्रावण सुदि	14 बुध	30.08.2023	11-37	-	-	-	-
12	भाद्रपद वदि	प्र.30 गुरु	14.09.2023	60-00	1 गुरु	30 शुक्र	8 गुरु	12 सोम

विशेष विवरण

- आयंबिल ओली प्रारम्भ चैत्र सुदि 8 बुधवार 29.03.2023
- भगवान महावीर जन्म कल्याणक चैत्र सुदि द्वि. 13 मंगलवार 03.04.2023
- आयंबिल ओली पूर्ण चैत्र सुदि 15 गुरुवार 06.04.2023
- अक्षय तृतीया (वर्षीतप पारणा) वैशाख सुदि 3 रविवार 23.04.2023
- आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. की 32वीं पुण्य तिथि वैशाख सुदि 8 शुक्रवार 28.04.2023
- भगवान महावीर केवल कल्याणक वैशाख सुदि 10 रविवार 30.04.2023
- संघ स्थापना दिवस वैशाख सुदि 11 सोमवार 01.05.2023
- आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 33वाँ आचार्य पद दिवस, ज्येष्ठ वदि 5 बुधवार 10.05.2023
- परम्परा के मूल पुरुष श्री कुशलचन्द्रजी म.सा. की 240वीं पुण्य तिथि, ज्येष्ठ वदि 6 गुरुवार 11.05.2023
- क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्री रतनचन्द्रजी म. सा. की 178वीं पुण्य तिथि, ज्येष्ठ सुदि 14 शनिवार 03.06.2023
- 227वाँ क्रियोद्धारक दिवस आषाढ़ वदि 2 सोमवार 05.06.2023
- आद्रा नक्षत्र प्रारम्भ आषाढ़ सुदि 4 गुरुवार 22.06.2023, इसके पश्चात् गाज बीज होने पर सूत्र की असज्झाय नहीं रहेगी
- चातुर्मास प्रारम्भ (चातुर्मासिक पक्खी) आषाढ़ सुदि 14 रविवार 02.07.2023
- पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. की 97वीं पुण्यतिथि प्र.श्रावण वदि 30 सोमवार 17.07.2023
- पर्युषण महापर्व प्रारम्भ द्वितीय श्रावण वदि 13 सोमवार 14.08.2023
- संवत्सरी महापर्व द्वितीय श्रावण सुदि 5 सोमवार 21.08.2023
- आयंबिल ओली प्रारम्भ आश्विन सुदि 6 शुक्रवार 20.10.2023
- पूज्य आचार्य श्री भूधरजी म.सा. की पुण्य तिथि आश्विन सुदि 10 मंगलवार 24.10.2023

13	भाद्रपद सुदि	15 शुक्र	29.09.2023	22-17	11 सोम	-	-	-
14	आश्विन वदि	30 शनि	14.10.2023	41-53	4 सोम	8 शनि	6 बुध	9 रवि
15	आश्विन सुदि	15 शनि	28.10.2023	47-46	14 शुक्र	-	-	-
16	कार्तिक वदि	14 रवि	12.11.2023	19-29	-	10 बुध	3 मंगल	8 रवि
17	कार्तिक सुदि	14 रवि	26.11.2023	21-54	7 रवि	-	-	-
18	मार्गशीर्ष वदि	14 सोम	11.12.2023	57-45	-	-	1 मंगल	5 शनि
19	मार्गशीर्ष सुदि	15 मंगल	26.12.2023	56-30	11 शुक्र	-	14 सोम	-
20	पौष वदि	14 बुध	10.01.2024	31-41	-	2 शुक्र	-	2 शुक्र
21	पौष सुदि	15 गुरु	25.01.2024	39-47	4 रवि	-	11 रवि	-
22	माघ वदि	14 शुक्र	09.02.2024	01-42	30 शुक्र	4 मंगल	-	1 शुक्र
23	माघ सुदि	14 शुक्र	23.02.2024	20-57	-	-	9 रवि	13 गुरु
24	फाल्गुन वदि	14 शनि	09.03.2024	28-23	10 मंगल	6 शनि	-	-
25	फाल्गुन सुदि	14 रवि	24.03.2024	08-07	3 मंगल	13 शनि	7 शनि	11 बुध
26	चैत्र वदि	30 सोम	08.04.2024	43-35	14 रवि	-	-	-

- स्वाति नक्षत्र प्रारम्भ आश्विन सुदि 10 मंगलवार 24.10.2023
- आयंबिल ओली पूर्ण आश्विन सुदि 15 शनिवार 28.10.2023
- खण्ड ग्रास चन्द्र ग्रहण आश्विन सुदि 15 शनिवार 28.10.2023
- भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक कार्तिक वदि 14 रविवार 12.11.2023
- वीर संवत् 2550 प्रारम्भ एवं गौतम प्रतिपदा कार्तिक सुदि 1 मंगलवार 14.11.2023
- ज्ञान पंचमी कार्तिक सुदि 5 शनिवार 18.11.2023
- आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 61वाँ दीक्षा दिवस कार्तिक सुदि 6 रविवार 19.11.2023
- चातुर्मासिक पक्खी (चातुर्मास पूर्ण) कार्तिक सुदि 14 रविवार 26.11.2023
- वीर लोकाशाह जयन्ती कार्तिक सुदि 15 सोमवार 27.11.2023
- आचार्य पूज्य 1008 श्री विनयचन्द्रजी म.सा. की 108वीं पुण्यतिथि, मार्गशीर्ष वदि 12 शनिवार 09.12.2023
- मौन एकादशी मार्गशीर्ष सुदि 11 शुक्रवार 22.12.2023
- भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक पौष वदि 10 शनिवार 06.01.2024
- फाल्गुनी चातुर्मासी पर्व (चातुर्मासिक पक्खी) फाल्गुन सुदि 14 रविवार 24.03.2024
- भगवान आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 86वाँ जन्मदिवस चैत्र वदि 8 मंगलवार 02.04.2024

गुरु हस्ती के दो फरमान-सामायिक स्वाध्याय महान्

गुरु हीरा का यह सन्देश-व्यसन मुक्त हो सारा देश

प्रिय महानुभावों! शुद्ध चित्त से दोनों समय प्रतिक्रमण करने से निर्जरा होती है। उत्कृष्ट रसायन आने से तीर्थंकर गौत्र की उपार्जना होती है। अतः दोनों समय प्रतिक्रमण अवश्य करना चाहिये। यदि प्रमाद वश न हो सके तो पक्खी का तो अवश्य करना चाहिये। पाँचवें आवश्यक के काउसग्ग में देवसिक-रात्रिक को 4, पक्खी को 8, चौमासी को 12 और सम्वत्सरी को 20 लोगस्स का चिन्तन करना अजमेर सम्मेलन का नियम है। सामायिक स्वाध्याय का घर-घर प्रचार करें।

स्व. श्री सम्पतचन्द जी सिंघवी एवं स्व. श्री रिखबचन्द जी सिंघवी की स्मृति में सप्रेम भेंट

प्राप्ति स्थान : श्री चंचलचन्द सिंघवी 507 ए 5-बी रोड, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 फोन : 0291-2431924, मो. 9460767029

10 मार्च 2023
जिनवाणी 54
ISSN 2249-2011

85वाँ जन्म-दिवस

गुणग्राही आचार्यश्री हीरा

श्री त्रिलोकचन्द जैन

कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य ने योगशास्त्र के द्वितीय प्रकाश के 8 वें श्लोक में गुरु का स्वरूप बताते हुए कहा है-

महाव्रतधरा धीराः, भैक्षमात्रोपजीविनः।
सामायिकस्था धर्मोपदेशका गुरवो मताः।।

अर्थात् पंच महाव्रतों को धारण करने वाले, उपसर्ग-परीषहों के आने पर धैर्य धारण करने वाले, भिक्षा से जीवन चलाने वाले, सामायिक प्रधान चारित्री और धर्मोपदेशक गुरु माने गये हैं। समग्र रूप से इन गुणों को आत्मसात् करने वाले हैं आचार्य भगवन्त परम श्रद्धेय श्री हीराचन्द्रजी म.सा.। आप अनेक शिष्यों के श्रद्धास्पद गुरु तो हैं ही, संघरथ के संचालन के गुरुतर दायित्व का निर्वहन करने वाले सारथि भी हैं। रत्नसंघ परम्परा के नायक होने के साथ-साथ आप सम्पूर्ण स्थानकवासी सम्प्रदाय के वरिष्ठ आचार्य हैं। आपके जीवन का 85वाँ वर्ष, संयम-जीवन का 60वाँ वर्ष और आचार्यपद-निर्वहन का 32वाँ वर्ष गतिमान है। आप सद्गुणों के आधार स्थल हैं। आपके अमृत वचन 'गुणग्रहण ही सम्यग्दर्शन है' को आपने अपने में बखूबी स्थान दिया है। आपने अपने पूर्वाचार्यों एवं सन्तों से उनके जीवन के सद्गुणों की शिक्षा ग्रहण की है।

(1) मूल पुरुष कुशलचन्द्रवत् आदि प्रवर्तक-रत्नसंघ परम्परा के मूलपुरुष श्री कुशलचन्द्रजी म.सा. को इस रत्नसंघ परम्परा की नींव डालने के कारण इस परम्परा का आदि प्रवर्तक कहा जाता है। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. भी चारित्र की कठोरता के अनेक आयामों के आदि प्रवर्तक हैं। आपने ही प्रथम बार संघ की भावी सञ्चालन व्यवस्था हेतु अपने मुखारविन्द से संघ के भावी आचार्य की घोषणा करके नवीन इतिहास का सृजन किया। रत्नसंघ परम्परा में बड़ी दीक्षा पर ही नवदीक्षित साधु-साध्वी का संयमी नामकरण किया जाता था, लेकिन आचार्य श्री हीरा ने दीक्षा के प्रथम दिन ही नवदीक्षित साधु-साध्वी को नवीन संयमी नाम देना प्रारम्भ किया। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनका आदि प्रवर्तन आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने किया है।

(2) आचार्य गुमानचन्द्रवत् अद्भुत पारखी-रत्नों की परख जौहरी कर सकता है। रत्नसंघ के प्रथम आचार्य श्री गुमानचन्द्रजी म.सा. मेधावी रत्नचन्द्रजी जैसे रत्न की परख करने वाले महान आचार्य थे। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. भी अद्भुत पारखी हैं। अनेक ऐसे मुमुक्षु रहे जिन्हें अल्प समय अपनी सेवा में रखकर ही आपने दीक्षा प्रदान कर दी तथा अनेक ऐसे भी रहे जिनका आज्ञा पत्र हुए सालों व्यतीत हो गये, परन्तु आपने उन्हें दीक्षा मन्त्र नहीं दिया, प्रव्रजित नहीं किया। आपकी पारखी नज़र में भविष्य का हित-अहित समाहित रहता है और संघ के हित को रखकर ही आप सम्यक् निर्णय लेते हैं।

(3) आचार्य रत्नचन्द्रवत् उद्धारक-आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. के नाम से ही 'रत्नसंघ' परम्परा विख्यात है। उन्होंने साध्वाचार में आई शिथिलता के निराकरण हेतु बडलू-भोपालगढ़ में 21 बोलों की मर्यादा बाँधकर क्रियोद्धार किया। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. भी रत्नसंघ के रत्न हैं। आपने सन्त-सतियों के चारित्रिक उन्नयन हेतु पाँच समिति-तीन गुप्ति के नियमों के पालन का दैनिक प्रपत्र अपने सभी छोटे-बड़े सन्त-सतियों से पालन करवाकर संयम-पर्यायों की उज्ज्वलता में सजगता की प्रेरणा प्रदान की। सामाचारी के नियमों-उपनियमों में भी समय-समय पर

परिमार्जन करके अनेक क्रियोद्धार आचार्य भगवन्त कर चुके हैं।

(4) आचार्य हमीरमलवत् विनयमूर्ति–पद-उपाधि प्राप्त साधक के जीवन में विनय गुण का होना उसके विरल व्यक्तित्व का कारण बनता है। आचार्य श्री हमीरमलजी म.सा. अपने गुरुदेव श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. के विनयशील शिष्य थे। प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी होने के बावजूद भी आपने गुरुदेव से अलग एक भी चातुर्मास नहीं किया। आपने अपनी विनयभक्ति से गुरुदेव के जीवन के अन्तिम समय तक विनयपूर्वक सेवा की। आचार्य श्री हीरा भी उत्तराध्ययनसूत्र के प्रथम अध्ययन में वर्णित विनय के स्वरूप को जीवन्त जीने वाले साधक हैं। आपने भी अपने गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. से अलग (एक नागौर चातुर्मास को छोड़कर) चातुर्मास नहीं किये। आपने अपने सम्पूर्ण अस्तित्व एवं व्यक्तित्व को गुरुदेव को समर्पित कर रखा था, उनकी विनयपूर्वक सेवा ही आपका ध्येय था। आपके प्रवचनों में 'गुरुदेव फरमाते हैं' शब्द आपकी विनयशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

(5) आचार्य कजोड़ीमलवत् प्रत्युत्पन्नमति के धारक–स्थूल शरीर से महान साधना करने वाले आचार्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा. द्वारा पनिहारिन के उपहास उड़ाने पर प्रत्युत्पन्नमति से दिया गया उत्तर कि-'एक पेट रह गया, बाकी खटका मिट गया' विशेष था। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. भी औत्पातिकी बुद्धि से समस्याओं के समाधान के विशेषज्ञ हैं। श्री अभयमुनिजी के स्वास्थ्य प्रसंग पर संघ-पदाधिकारियों को आपके द्वारा दिया गया समाधान कि-'यदि संयम पालने की उनकी भावना है तो उन्हें इसमें पूर्ण सहयोग मिलेगा।' एक अद्वितीय उदाहरण है। संघ में अनेक बार अप्रत्याशित घटनाएँ घटित हो जाती हैं, उन विपरीत परिस्थितियों में भी आप धैर्य और प्रत्युत्पन्नमति से जो समाधान फरमाते हैं, वे संघ के लिए भविष्य में मिसाल बन जाते हैं।

(6) आचार्य विनयचन्द्रवत् श्रुतकेवली–14 पूर्वों के ज्ञाता को श्रुतकेवली कहा जाता है, लेकिन वर्तमान में श्रुत के पारंगत को उपलक्षण से श्रुतकेवली का विरुद प्राप्त हो जाता है। ऐसे ही आचार्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. थे, जो आगमों के मर्मज्ञ होने के साथ-साथ धारणाओं के विशेषज्ञ थे। कौनसे शास्त्र में, कौनसे अध्ययन में, कौनसे उद्देशक में क्या वर्णन आया है, यह उन्हें स्मृति में रहता था। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. भी आगमज्ञ हैं। किसी भी नियम-उपनियम के निर्धारण में आप आगम की धारणा को ही प्रमुखता प्रदान करते हैं। यदि किसी विषय में अनेक मत प्राप्त होते हैं तो स्पष्टता का अभाव होने पर वे किसी भी एक मत पर अपना आग्रह नहीं रखकर, सभी मतों का उल्लेख करना अधिक संगत समझते हैं। आपके श्रुत की सम्पन्नता आपके प्रवचनों, दूरदर्शी निर्णयों, प्रेरणाओं में परिलक्षित होती है।

(7) आचार्य शोभाचन्द्रवत् जीवन-निर्माण के शिल्पकार–लघुवय में दीक्षित बालक हस्ती के जीवन के शिल्पकार आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. थे। आपने लघुवय के मुनि हस्ती की योग्यता को देखकर भविष्य की नेतृत्त्वशीलता और शासनप्रभावना को दृष्टिगत रखकर अभूतपूर्व निर्णय लिया और मुनि हस्ती को आचार्य हस्ती बनाया। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी भी लघुवय में दीक्षित अनेक सन्त-सतीवृन्द के जीवन निर्माण के प्रति सजग हैं। आपके शासन में बाल एवं किशोरावस्था में प्रव्रज्या अंगीकार करने वाले अनेक मुमुक्षुओं के संयम-जीवन में उनके आगम एवं तत्त्वज्ञान के अध्ययन हेतु आध्यात्मिक शिक्षा समिति की प्रकल्पना साकार हुई। नेश्रायवर्ती सन्त-सतियों के संयम पालन एवं अनुकूलता-प्रतिकूलता में आपके द्वारा की गई सारणा-वारणा अद्वितीय है। आपका चिन्तन सभी सन्त-सतियों के साथ-साथ श्रावक-श्राविका वर्ग के जीवन-निर्माण का भी रहता है, इसलिए आपने निर्व्यसनी सामायिक संघ की प्रबल प्रेरणा की है।

(8) आचार्य हस्तीमलवत् सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक-सामायिक और स्वाध्याय आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के दो प्रबल अभियान रहे। ज्ञान-क्रिया रूपी मोक्षमार्ग को क्रमशः स्वाध्याय और सामायिक के रूप में जीवन में उतारने हेतु आपकी प्रबल प्रेरणा रही। आचार्य श्री हीरा भी अपने गुरु के पदचिह्नों पर चलने वाले सुयोग्य शिष्य हैं। आपने अपनी सकल संयम-यात्रा में सामायिक की शुद्धता से आराधना करने हेतु प्रबल सिंहनाद किया है। स्वाध्याय का क्रम नियमित बने, इस हेतु संघ ने आपके प्रवचनों से प्रभावित होकर शिक्षण बोर्ड के माध्यम से परीक्षाओं का संचालन प्रारम्भ किया। आज भी गुरुदेव हस्ती-हीरा के श्रावकों की पहचान सामायिक गणवेश में सामायिक-साधना करने वाले वर्ग से है।

(9) उपाध्याय मानचन्द्रवत् आत्मार्थी-उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा. का जीवन चौथे आरे की बानगी, आत्मार्थिता एवं सरलता-सौम्यता की प्रतिमूर्ति था। आचार्य श्री हीरा का दैहिक दर्शन तो विशेष प्रभावित करता ही है, उनकी साधना-आराधना का बल भी अलौकिक प्रभाव छोड़ता है। इस पंचम काल में भी आचार्य श्री जैसे शुद्धाचार प्रतिपालक एवं आत्माराधना में संलग्न साधक का गुरु के रूप में प्राप्त होना, हम जैसे पामरों के लिए अखूट पुण्य का उदय है।

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने पूर्वाचार्यों के गुणों में से एक-एक गुण ही नहीं अपनाया है, यह तो लेखनशैली मात्र है, आपने तो उनके समग्र जीवन के सभी गुणों को आत्मसात् किया है। गुणग्रहण में आपकी तत्परता आपके सम्यग्दर्शन की उच्चता प्रदर्शित करती है। आपके 85 वें जन्मदिवस पर शुभकामना करते हैं कि आप शतायु हों। भगवन्! आप गुणों के आकर तो हैं ही, आप शीघ्र ही इन गुणों की पूर्णता प्राप्त कर अपना लक्ष्य साधें।

-सह सम्पादक, जिनवाणी, 37/67, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

आओ खेलें होली

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

(तर्ज :: आँख है भरी-भरी.....)

जिनवर की भक्ति के लेकर रंग,
आओ खेलें होली एक-दूजे के संग।।
हटे मिथ्यात्व जब उस पर, ज्ञान का लाल रंग चढ़ता।
है दर्शन में बसी देखो,
वो शुद्ध समकित की धवलता।
रंग केसरिया सुहाना तप का है,
निखरे जिससे आत्मा का हर एक अंग।।1।।
श्रद्धा के मोल से मिलती,
चारित्र की सुन्दर पिचकारी।
कषायों की कालिमा पर,
जो पड़ती है बहुत भारी।
निर्जरा का शुद्ध लेकर जल,
आओ जीते कर्मों से अपनी हर जंग।।2।।
तप, संवर के उपलों से,
कर्मों की होलिका जलती।
हटाकर आवरण सारे,
फिर मुक्ति गले मिलती।
केवलज्ञान की थाप ढोल पर,
केवलदर्शन के फिर बजते हैं चंग।।3।।
प्रेम पनपे हृदय में,
मुख से निकले मीठी ही बोली।
पराया न रहे कोई,
ऐसे खेलें अब की होली।
शाश्वत सुख को पाए हर एक आत्मा,
शुद्ध भावों की बहे ऐसी तरंग...।।4।।

-एस 149, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302018 (राजस्थान)

10 मार्च 2023
जिनवाणी 57
ISSN 2249-2011

श्रावकाचार

बारह व्रत : श्रावक के लिए परम आवश्यक

श्री राकेश कोचर

मर्यादा और अनुशासन एक सफल जीवन की सबसे बड़ी पहचान और विशेषता होती है। क्षेत्र चाहे जो भी हो–व्यावसायिक, शैक्षणिक, राजनैतिक या आध्यात्मिक, हर जगह मर्यादा और अनुशासन से ही सफलता मिलती है। अमर्यादित और अनुशासनहीन जीवन तो उस पतवारहीन नाव की तरह है जिसका डूबना निश्चित है। नदी जैसे ही अपनी मर्यादा का उल्लंघन करती है, वह बाढ़ का रूप ले लेती है। वायु जब अमर्यादित हो जाय तो वह तूफान बनकर लोगों के दु:ख का कारण बन जाती है। बस यही बात हमारे लिए भी लागू होती है; बिना नियमों के हमारा जीवन भी दिशाविहीन रहता है। अत: हमारे जीवन में भी अनुशासन और मर्यादाओं का होना अत्यन्त आवश्यक है। श्रावक के 12 व्रत के माध्यम से हम अपने जीवन को अनुशासित, मर्यादित, सुखी, शान्तिमय और सफल बना सकते हैं।

विकराल हो जाती नदी जब बाढ़ आती है,
वायु तूफान बन जाय तो सबको रुलाती है।
मर्यादा और अनुशासन को भूले मानव,
तो ज़िन्दगी बर्बाद हो जाती है।।

हाँ, यह सही है कि वास्तव में संयम ही जीवन की सबसे श्रेष्ठ उपलब्धि है। संयम के बिना जीवन अनियन्त्रित, अमर्यादित, नीरस और अधूरा ही है। चार गतियों के भयानक दु:खों से मुक्ति पाने का यदि सबसे प्रभावशाली कोई उपाय है तो वह संयम ही है। लेकिन दुर्भाग्यवश हम सभी किसी न किसी कारणवश साधु का संयम नहीं ले सके हैं, परन्तु फिर भी श्रावक के 12 व्रत के रूप में अनन्त उपकारी भगवान महावीर के द्वारा दिया हुआ वह कोहिनूर से भी कीमती रत्न हमारे हाथों में है जो संयम के बाद जीवन की दूसरी सबसे बड़ी उपलब्धि है। यदि हमने आज दिन तक ये 12 व्रत धारण नहीं किये हैं तो आज ही हमें ये धारण करके अपने अतीत की इस बड़ी गलती को सुधारना है।

नहीं लिये 12 व्रत हमने आज तक
तो रहा जीवन में अमर्यादा का अन्धेरा।
अब आज ही लेना है इन्हें हमको,
जब जागे तभी सवेरा।।

यह बात तो आप सब भलीभाँति जानते हैं कि जो विद्यार्थी मेरिट में नहीं आ सकता, वह भी कम से कम उत्तीर्ण तो होना चाहता ही है। फुटपाथ पर दुकान लगाने वाला छोटा सा व्यापारी लाखों रुपया नहीं कमा सकता, पर वह भी इतना तो कमाना चाहता ही है कि उसका घर खर्च चल जाय। उसी प्रकार हम भी संयम भले ही न ले पाये हों, लेकिन कम से कम इतनी धर्म–आराधना करने का लक्ष्य तो रख ही सकते हैं कि सद्गति निश्चित हो जाय। श्रावक के ये 12 व्रत सद्गति का पासपोर्ट ही है।

यहाँ एक बात विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि आगम में वर्णित आनन्द जैसे श्रेष्ठ श्रावक भी 12 व्रतधारी ही थे, क्योंकि उनके जीवन में भी कुछ ऐसी बाधाएँ थीं जिनके कारण वे संयम लेने में असमर्थ थे। हमें भी उन श्रेष्ठ श्रावकों का अनुसरण अवश्य करना चाहिए। हाँ, भविष्य में यदि हम दीक्षा ले सकें तो वह सोने में सुहागा होगा।

जीवन को सुखी बनाने के लिए हम क्या–क्या नहीं करते। धन के पीछे भागते रहते हैं। बैंक खाते में पैसा रखते हैं, फिक्स्ड डिपोजिट करते हैं, शेयर खरीदते हैं, निवेश करते हैं और न जाने क्या–क्या करते हैं। लेकिन क्या इस निवेश का कोई भरोसा है? ब्याज की छोड़िये,

कभी-कभी तो मूल रकम भी वापस नहीं मिलती। लेकिन 12 व्रत के रूप में जिन धर्म की आराधना एक ऐसा निवेश है जो कभी निष्फल नहीं जाता। इस भव और पर भव में यह अपूर्व सुख और शान्ति देता ही है।

संसार में निवेश का क्या भरोसा,
पैसा मिले या न मिल पाये।
12 व्रत को समझो असली बीमा,
जो दुर्गति की जोखिम मिटाये।।

आयुष्य का कोई भरोसा नहीं, पता नहीं साँसों का धागा कब टूट जाय। मनुष्य भव, जैनधर्म, उत्तम कुल, जिनवाणी-श्रवण जैसे श्रेष्ठ एवं दुर्लभ बोलों को पाकर हमें संकल्पपूर्वक इस भव को सफल बनाना ही है। श्रावक के 12 व्रतों की निर्दोष आराधना इस लक्ष्य को पूरा करने का एक अत्यन्त ही सशक्त माध्यम है। यदि मुझे अन्तिम समय में पुण्यवानी की कमी से संथारा नहीं आ सका तो भी 12 व्रत मेरी आत्मा की रक्षा करने में पूर्णत: समर्थ हैं। यदि हम अन्तिम क्षण तक अपने व्रतों के प्रति सजग और निष्ठावान बने रहें तो हमें भविष्य की चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि ये 12 व्रत एक न एक दिन हमें अनन्त सुख के स्वामी बनाने में अवश्य ही सहायक बनेंगे।

जैनधर्म को पाकर भी बिना व्रतों के दुनिया से जाना ठीक वैसा ही है जैसा कि हीरे-जवाहरात की खदान के मालिक होकर भी अत्यन्त निर्धन रहना।

जैनधर्म मिला है हमको,
बिना व्रत के रहकर हम जीवन अपना नहीं गँवायें।
कहीं ऐसा न हो कि अपार धन के मालिक होकर भी
हम फक्कड़ ही रह जायें।।

12 व्रत के माध्यम से हमें धर्म की आराधना का एक सुहावना अवसर प्राप्त हुआ है, जिसके माध्यम से हमें धर्म को आंशिक रूप से ही सही, समझने का भी मौका अवश्य मिला है।

समय की एक विलक्षण विशेषता यह है कि उससे बड़ा कोई दोस्त नहीं होता और उससे बड़ा कोई दुश्मन भी नहीं होता। आज समय हमारा मित्र बनकर, हितैषी बनकर, शुभचिन्तक बनकर हमसे कह रहा है-भाई, शुभ कर्मों का, पुण्यवानी का सञ्चय कर लो, अभी मैं तुम्हारे लिए अनुकूल हूँ, लेकिन कल की कोई गारण्टी नहीं है, यदि मैं बदल गया यानी प्रतिकूल हो गया तो सिर्फ आँसू बहाते नजर आओगे। इसलिए व्रतों के धारण में जरा भी देरी न करें।

स्थिति कभी भी बदल जाती,
अशुभ कर्म बन्ध से सदा डरो।
समय की पुकार सुनो,
व्रत लेने में जरा भी देरी न करो।।

जिस प्रकार हवा, पानी, भोजन और श्वासोच्छ्वास सभी के जीवन के लिए जरूरी हैं; इसमें जाति, कुल, क्षेत्र आदि का कोई भेद नहीं है। उसी प्रकार व्रतों के माध्यम से मर्यादा में रहना भी सभी के लिए अत्यन्त अनिवार्य है। स्थानकवासी, तेरापंथी, श्वेताम्बर मूर्तिपूजक इत्यादि सभी पंथ के अनुयायियों को अपने भविष्य के हित में ये व्रत अवश्य ही लेने चाहिए।

व्रतों के बिना जीवन कभी सुरक्षित होता नहीं।
स्वच्छन्दता में है नुकसान भारी, तीर्थंकरों ने ये बात कही।।

इस सन्दर्भ में एक विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि 12 व्रतों से आपके जीवन में किसी भी प्रकार की कोई भी रुकावट नहीं आयेगी। इन्हें जीवनपर्यन्त के लिए लेना अत्यन्त लाभदायक होता है। लेकिन यदि आप इन्हें यावज्जीवन के लिए नहीं ले सकते तो इसे आप 1 वर्ष, 2 वर्ष, 5 वर्ष या अपनी इच्छा से एक निश्चित समय के लिए भी ले सकते हैं। किसी व्रत में आप आगार रखना चाहें तो रख सकते हैं। व्रतों की अवधि पूर्ण होने पर आप उन्हें उसी रूप में या आगार में कम या ज्यादा करके भी ले सकते हैं। लेकिन व्रतों को पूर्ण सजगता से 100 प्रतिशत शुद्ध रूप से निभाना अत्यन्त ही आवश्यक है। सप्ताह में या 15 दिन में एक बार इन व्रतों की समीक्षा करते रहें और देखते रहें कि आप उनमें कोई दोष तो नहीं लगा रहे हैं, क्योंकि 12 व्रतों को शुद्ध रूप से निभाने में

ही श्रावक जीवन की सफलता है।
देह तो नष्ट हो जाती है, कर्म जाते साथ में।
आज ही लीजिये 12 व्रत, मौका आया हाथ में।।

सबसे पहले बस इतना ही है मुझको कहना।
सदा रहना व्रतों में आप, बिना व्रत के कभी न रहना।।

-प्लॉट नं. 29 बी, डागोबा सदन रोड़, गीता भवन के पास, हीवाड़ी नगर, नागपुर (महाराष्ट्र)

समय आखिर बीत ही जाता है...!

श्री राजेन्द्र जैन 'राजा'

समय... जो बीत जाता है, अतीत बनकर
स्मृति पटल पर, अंकित हो जाता है।
अनेकों स्वप्नों को साकार करने में,
समय रेत सा, हाथों से फिसल जाता है।
कुछ सफलताओं और विफलताओं की,
सौगात देकर, न जाने कब वर्तमान भी बीत जाता है।
क्या करना था, क्या किया,
और क्या करना शेष है यही सोचने में।
धीरे-धीरे समय रूपी घट रीत जाता है,
अच्छा हो या बुरा मित्रों!
समय आखिर बीत ही जाता है।।
कीमत जिसने समझी, उसे बेशकीमती बना देता है,
कद्र न करने वालों को नाकारा बना देता है।
यह समय है, जो किसी के लिए रुकता नहीं,
बस... हर हाल में बीत ही जाता है।।
माना कि समय कम है, पर अभी भी समय है,
ये क्या कम है। चिन्तन बदल, मंथन कर,
बाहें फैला और वक्त को थाम ले।
कर गुजर, कुछ कर्म ऐसे
जिससे दुनिया फक्र से तेरा नाम ले।।
गत की धरोहर लेकर, नवसृजन की ओर क़दम बढ़ा।
वरना जिम्मेदारियों के बोझ तले,
जाने कब समय बीत जायेगा।
कोरा कागज जैसा जीवन तेरा, कोरा ही रह जायेगा।
लौटकर फिर कभी नहीं आयेगा
तेरा समय जो बीत जायेगा।।

-44/221, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राजस्थान)

परिवर्तन

श्री विजेन्द्र जैन

(तर्ज :: एक हवा का झोंका आया....)

समय यह कैसा आया, कर रहा तू भूल
कुछ तो डर तू अपने रब से,
कब गिर जाए डाली से फूल।
ना करुणा, ना दया है, ना कोई अपनापन
मार्ग धर्म का छोड़कर, कर रहे पाप करम
धर्म की हानि हो रही, बढ़ रहा अत्याचार
लूट रहा मानव को मानव, बढ़ रहा व्यभिचार
नहीं रहा अब डर किसी का, समय नहीं अनुकूल
कुछ तो डर तू अपने रब से,
कब गिर जाए डाली से फूल।
जन्म लेने से पहले, उजड़ जाती है कोख
ज़रा सोच तू मानव पगले, क्या हो गई तेरी सोच
पाप कर रहा अपने हाथों, वह भी है तेरा ही फूल
कुछ तो डर तू अपने रब से,
कब गिर जाए डाली से फूल।
दुश्मन हो रहा भाई भाई का, मन में नही सन्तोष
लालच इतना बढ़ गया है, नहीं किसी का दोष
खून हो रहा अब रिश्तों का, नहीं रहा सांसों का मोल
कुछ तो डर तू अपने रब से,
कब गिर जाए डाली से फूल।
मद में हो गए इतने अन्धे, स्वार्थ इतने बढ़ गए
जन्म दिया था जिसने, उनको भी तुम भूल गए
समय आया सेवा का, तब घर से निकाल दिया
कहाँ रहेंगे कैसे जीयेंगे, हर रिश्ते को रहे हैं तौल
कुछ तो डर तू अपने रब से,
कब गिर जाए डाली से फूल।

-77/235, अग्रवाल फार्म मानसरोवर, जयपुर

10 मार्च 2023
जिनवाणी 60
ISSN 2249-2011

तत्त्वबोध

स्थानकवासी जैनधर्म की विशेषताएँ

श्री हेमन्त डागा

जैनधर्म के अनुयायियों के मुख्यतया चार वर्ग हैं-1. श्वेताम्बर स्थानकवासी, 2. श्वेताम्बर मूर्तिपूजक, 3. श्वेताम्बर तेरापन्थ और 4. दिगम्बर।

तीर्थंकर भगवन्तों द्वारा प्ररूपित धर्म में काल के प्रभाव से आई हुई विकृतियों का निवारण करके शुद्ध धर्म का आगमानुसार पालन करने को चेष्टाशील वर्ग स्थानकवासी कहलाया।

स्थानकवासी जैनधर्म की निम्नानुसार कुछ विशेषताएँ हैं-

1. आगमानुसारिता-इस वर्ग के लिए 32 आगम ही प्रमाणभूत हैं। निर्युक्ति, भाष्य, टीका, चूर्णि या ग्रन्थों की मात्र आगम से मेल खाती बातें ही मान्यता प्राप्त हैं।

2. शास्त्राभ्यास-स्थानकवासी सम्प्रदाय शास्त्रों के अभ्यास पर विशेष ध्यान देते हैं तथा श्रावक-श्राविकाओं को भी शास्त्राभ्यास करने का अधिकारी मानते हैं। सम्प्रदाय में अनेक ऐसे विशेष अभ्यासी सन्त-सती हैं जिन्हें 32 ही आगम कण्ठस्थ हैं। श्रावक-श्राविका वर्ग में भी शास्त्रों को कण्ठस्थ करने का भाव रहता है। उत्तराध्ययनसूत्र के 22वें अध्ययन में वर्णित राजीमती को 'बहुश्रुता' इसी आधार से कहा गया है कि दीक्षा पूर्व ही वह बहुत से शास्त्रों की ज्ञाता थी।

क्रियोद्धारक श्री लोंकाशाहजी का शास्त्रों के संरक्षण में बहुत बड़ा योगदान रहा है, जिसे हम कभी भूल नहीं सकते।

3. अहिंसा प्रधानता-केवली प्ररूपित धर्म की अहिंसा अति सूक्ष्म है, यहाँ प्राणों के अतिपात को ही नहीं, किसी जीव के दिल को दु:खाने को भी हिंसा माना गया है। धर्म के नाम पर की जाने वाली किञ्चित् हिंसा भी यहाँ स्वीकार्य नहीं है। सिद्धान्त है कि ''जहाँ हिंसा है वहाँ धर्म नहीं हो सकता।''

समस्त तीर्थंकरों का फरमाना है कि किसी भी प्रकार के जीव की हिंसा नहीं करनी चाहिए। सामान्यत: हिंसा का अर्थ किसी जीव के प्राणों का हनन ही समझा जाता है, लेकिन आचारांगसूत्र (4-1) में अहिंसा के पाँच भेद फरमाये हैं-**1. न हंतव्वा**-दण्ड, चाबुक आदि साधनों से जीव का हनन नहीं करना। **2. न अज्जावेयव्वा**-बलात् काम लेना, जबरन आदेश पालन करवाना, शासित करना आदि नहीं करना। **3. न परिघेत्तव्वा**-बन्धक या गुलाम बनाकर अपने अधिकार में नहीं रखना। **4. न परियावेयव्वा**-परिताप नहीं देना, हैरान नहीं करना और पीड़ा नहीं देना। **5. न उद्दवेयव्वा**-प्राण वियोजन नहीं करना।

इस अहिंसा प्रधान धर्म की पालना से साधक आत्मा पापकर्म से बचती हुई स्व-पर प्राणों की रक्षा करती है। भगवान ने इस अहिंसा धर्म को शुद्ध एवं न्याययुक्त बतलाया है। जैन धर्म का प्राण अहिंसा है तो जिनशासन की इमारत अहिंसा की नींव पर ही खड़ी है। तभी हम कहते हैं-'अहिंसा परमो धर्म:।'

4. यतनाप्रधान-छह काय के जीवों की विराधना से बचने के लिए भगवान ने उपदेश दिया-यतनावान रहो। दशवैकालिकसूत्र अध्ययन 4 गाथा 7 में पृच्छा की गई-

कहं चरे कहं चिट्ठे, कहमासे कहं सए।
कहं भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं न बंधइ।।

कैसे चले खड़ा हो कैसे? कैसे बैठे और शयन करे। कैसे खाते भाषण करते, ना पापकर्म का बन्ध करे।।

जवाब में आगमकार फरमाते हैं (गाथा 8)

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं न बंधइ।।

यतना से चले, खड़ा हो, यतना से बैठे और शयन करे। यतना से खाये, बोले तो, न पाप कर्म का बन्ध करे।।

उपर्युक्त आगमिक आख्यान से स्पष्ट है कि यतना धर्म का प्राण है, अत: जैन साधु किसी निर्माण में भाग नहीं लेते। चँवर डुलाने एवं फलादि सचित्त वस्तुओं का त्याग रखते हैं एवं वायुकाय के जीवों की हिंसा से बचने के लिए मुँहपत्ती का उपयोग करते हैं।

5. अमूर्ति पूजकता–मूर्तिपूजा धर्म का अंग नहीं है। स्थानकवासी 32 ही आगमों में मूर्तिपूजा का कोई उल्लेख नहीं है। मूर्तिपूजा निषेध का सबसे बड़ा प्रमाण है कि किसी भी जैन सम्प्रदाय के साधु-साध्वी मूर्तिपूजा नहीं करते हैं।

6. धर्म के नाम पर आडम्बर नहीं–स्थानकवासी धर्म में आडम्बरों को कोई महत्त्व नहीं दिया गया, बल्कि धर्म के नाम पर किये जाने वाले समस्त हिंसा प्रधान कार्यों का निषेध किया जाता है। तपस्या का वरघोड़ा निकालना, बाजे बजाना, नृत्य करना, ध्वज-पताका लगाना आदि सभी में हिंसा होती है, अत: ऐसे सभी पापकार्यों का वर्जन किया गया है।

7. सीमित उपकरण–भगवान ने सन्तों के लिए 72 हाथ एवं साध्वियों के लिए 96 हाथ वस्त्र की सीमा बाँधी है। इसी प्रकार पात्र के प्रकार एवं संख्या भी निश्चित की है। स्वावलम्बी जीवन जीने का तरीका बताया है। सिर्फ उतने ही उपकरण एवं उपधि रखना, जिससे प्रतिदिन दो बार प्रतिलेखन करने में अधिक समय व्यतीत न हो।

8. व्यक्ति एवं स्थान से मोह नहीं–स्थानकवासी सन्त-सती श्रावकों से विशेष परिचय नहीं बढ़ाते, क्योंकि यह रागादि भाव के बढ़ने का कारण हो सकता है। इसी प्रकार चातुमार्स के अतिरिक्त साधु को 29 रात्रि एवं साध्वीजी को 58 रात्रि से अधिक एक स्थान पर रुकने की भगवान की आज्ञा नहीं है। स्वास्थ्य आदि की प्रतिकूलता होने पर उक्त अवधि को लांघा जा सकता है। इसी प्रकार चातुर्मास करने के पश्चात् उस स्थान पर अगले 2 वर्ष चातुर्मास भी नहीं कर सकते हैं।

9. दान का विवेक–सुपात्रदान एवं अभयदान के साथ जैन साधु जीवदया एवं निर्दोष दान की प्रेरणा भी करते हैं। सुपात्रदान देकर कई भव्य जीव तिर गये हैं (सुखविपाकसूत्र)। श्रावक का लक्षण अनुकम्पा भाव है। इसका ध्यान रखकर श्रावक अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करता है।

इस प्रकार कुछ विशेषताएँ इस दयामय केवली प्ररूपित धर्म की ध्यान में आई हैं। जो इस शुद्ध धर्म को अपनायेगा, वह अपने लक्ष्य में निश्चित ही सफल होगा।

-302, सी-224, ज्ञान मार्ग, तिलक नगर, जयपुर

जिनवाणी पर अभिमत

श्री महावीर प्रसाद जैन

अभी हाल में जिनवाणी जनवरी, 2023 का अंक पढ़ा, जिसमें आपके द्वारा लिखा गया सम्पादकीय 'सशक्तीकरण का अभिप्राय' वर्तमान समय में अत्यन्त प्रासंगिक और उपयोगी है। सम्पादकीय के माध्यम से आपने बताया कि यह नारी के सशक्तीकरण का युग है। भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात् इस क्षेत्र में भारी प्रगति हुई है। इसका सबसे बड़ा साधन शिक्षा-प्राप्ति है। सशक्तीकरण के लिए आध्यात्मिक शक्ति का संवर्द्धन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है।

भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनिजी म.सा. के 'वैराग्य का रंग श्रावक को दृढ़धर्मी बनाता है' प्रवचन के माध्यम से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि जिस प्रकार से समुद्र के पानी में नाव रहती है, लेकिन नाव में पानी भर जाय तो वह नाव डूब जाती है। उसी प्रकार विरक्ति आने पर वह जीव संसार की सभी नाशवान् वस्तुओं को पराया मानकर उनमें रचता-पचता नहीं है। जिनवाणी स्वयं के लिए एक उत्तम साहित्य से कम नहीं है।

-ग्राम पोस्ट-कुण्डेरा, जिला-सवाईमाधोपुर

10 मार्च 2023
जिनवाणी 62
ISSN 2249-2011

अध्यात्म-विज्ञान

रोग के क्षणों में समाधि कैसे रखें?

श्रीमती रतन चोरड़िया

जब-जब रोग में बेचैनी महसूस हो, संकल्प-विकल्पों से मन घिर जाये, शरीर की आसक्ति मन को बेचैन करें, ऐसे रोग के क्षणों में शुभ भावपूर्वक से प्रभु का नाम स्मरण करने से आत्मा का भव-रोग दूर हो जाता है। उस समय प्रभु का नाम हर क्षण अन्तर में गूँजता रहे। हर क्षण यह याद रहे कि मेरा स्वरूप एवं प्रभु का स्वरूप एक समान है। मैं सिद्धों के जैसी आत्मा हूँ। शरीर रोगों का घर है-'शरीरं व्याधिमन्दिरम्।' इस शरीर के रोम-रोम में रोग छिपे हैं। जरा सी असावधानी हुई कि शरीर में छिपे रोग बाहर आ जाते हैं। तू चाहता है तेरा शरीर सदा नीरोग एवं हृष्ट-पुष्ट बना रहे। इसमें किसी प्रकार का रोग न आये, किन्तु यह नहीं हो सकता है। फिर तू क्यों इससे इतनी ममता, आसक्ति एवं मूर्च्छा करता है। यह नश्वर है, सदा रहने वाला नहीं है।

यह शरीर रोग एवं बीमारियों का घर है, मिट्टी का कच्चा घड़ा है। कच्चे घड़े में पानी कब तक टिकेगा। शरीर बनने में भले ही पूरे नौ महीने लगते हैं, पर मिटने में एक क्षण भी नहीं लगता। इसलिए अचानक किसी असाध्य रोग के होने पर आश्चर्य मत करना। अचानक ब्रेन हेमरेज हो जाये, कैन्सर या हार्टअटैक हो जाये, लीवर या किड़नी खराब हो जाये या अचानक श्वास रुक जाये, शरीर पर कैसा भी कष्ट आ जाये, उसे समभाव से सहन करने का अभ्यास करना है। शरीर की आसक्ति कम हो, ऐसा पुरुषार्थ करना है। पीड़ा एवं वेदना के क्षणों में मुँह से कभी आह न निकले। आँखों में आँसू न आयें। दुःखों से, रोग से जल्दी छुटकारा मिले, ऐसी चाह भी न जगे। बल्कि ऐसा सोचें कि पूर्व में मैंने जिन-जिन कर्मों का बन्ध किया है, उनका भुगतान मुझे करना ही होगा। फिर रोते-रोते क्यों, हँसते-हँसते ही समभावों से उन्हें सहन करूँ, जिससे नये कर्मों का बन्ध तो नहीं होगा। कर्म रूपी ऋण से मुझे जल्दी से जल्दी छुटकारा मिलेगा।

यदि शरीर में बीमारी आई है तो यह न सोचें कि यह कब जायेगी? या नहीं जायेगी। कभी जुकाम हो गया तो व्यक्ति सोचता है कि ज्वर न आ जाये। यदि ज्वर आ गया तो सोचता है कि डेंगू या चिकनगुनिया न हो जाये। यदि पेट दुःखता है तो सोचता है कि अपेन्डिक्स तो नहीं हो गया। यदि सीने में जरा सा दर्द हो गया तो विचार करता है कि 'हार्ट अटैक' न हो जाये। ऐसी सोच एवं विचार दुःख को अधिक बढ़ाते हैं। जीवन में कभी ऐसे दुःख आ जायें तो दुःख से दुःखी मत बनो। अभी किसी को थोड़ी-सी खाँसी या श्वास की तकलीफ शुरू हुई और बुखार आ गया तो 'कोरोना' का भय सताने लगा। इस तरह रोग होने पर चिन्ता को मन पर सवार न होने दो। बल्कि सोचो कि अशुभ कर्म के उदय से रोग हुआ है। इस रोग को बदलने की शक्ति मुझ में नहीं है, पर मैं अपने विचारों को मोड़कर शान्ति एवं समाधि रख सकता/सकती हूँ। यदि मौत सचमुच आ ही गई है तो भागकर जाऊँगा/जाऊँगी कहाँ? उसको भी समभाव से स्वीकार कर मृत्यु को महोत्सव बनाऊँ। जब विचारों में मोड़ आता है, सोच सकारात्मक होती है तो दुःख में से सुख, विषमता में समता का स्रोत फूट पड़ता है। वास्तव में सुख एवं दुःख हमारे मन के ही प्रतिबिम्ब हैं। हम जो चाहते हैं वही सुख है और जिससे नफ़रत करते हैं वही दुःख है। सुख हमारे मन की कल्पना है और आनन्द आत्मा का स्वभाव है। मन एवं विचारों के प्रवाह को मोड़कर अन्तर के पट खोलो और उस आनन्द को प्राप्त करो।

माँ के गर्भ में सवा नौ महीने गर्भावास की पीड़ा भुगत कर मेरा यह जीव यहाँ आया है। वहाँ कैसी दुर्गन्ध से भरी एवं संकड़ी काली कोठरी थी। नौ महीने औंधा लटककर वहाँ मैंने वेदना सही। वहाँ न खिड़की थी, न पंखा, न ए.सी., न कूलर। किन्तु आज इस छोटे से रोग ने मुझे बेचैन कर दिया और उसकी वेदना को मैं सहन नहीं कर पायी। अस्पताल में जाने पर पता चलता है बेचारे दर्दी दर्द से कैसे कराहते हैं। किसी का पैर कटा है तो किसी का हाथ। कोई कैंसर से पीड़ित है तो कोई हृदय रोग से तड़फता दिखाई देता है। कोई जल गया है तो किसी के अंग-भंग हो गये हैं। इस तरह संसार में जितने भी रोग, दु:ख एवं पीड़ाएँ हैं, उन सबको मेरी आत्मा ने इच्छा-अनिच्छा से, परवशता में अनेक बार सहन किया है। इस आत्मा ने इस प्रकार के अनन्त दु:ख नरक, तिर्यञ्च आदि गतियों में सहन किये हैं, इनके सामने यह दु:ख कुछ भी नहीं है। चार गति रूप दु:खों के सागर इस संसार में सुख कहाँ है। जिन्हें हम सुखी समझते हैं, वे भी दु:खी ही हैं।

अभी यह शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ दिख रहा है, पर अगले क्षण इस शरीर में सैंकड़ों व्याधियाँ हो सकती हैं, जिनकी कल्पना भी हम नहीं कर सकते। इस प्रकार यह शरीर रोग एवं दु:ख का घर है। हजारों व्याधियों के उत्पन्न होने की भूमि है। यह शरीर हाड़ रूपी काठ के आधार पर टिका हुआ है। नाड़ियों और नसों से जकड़ा हुआ है। मिट्टी के कच्चे बर्तन की तरह कमजोर है। अशुचिमय पदार्थों से भरा है। जन्म-जरा-रोग-मृत्यु का टूटा-फूटा झोंपड़ा है। सड़ना, गलना और नष्ट होना इसका स्वभाव है। मल-मूत्र, कृमि आदि का यह कारखाना है। ये ही कारण हैं कि अच्छी से अच्छी कीमती वस्तु डालने पर भी यह उसे दुर्गन्धमय बना देता है।

रोग के आने पर सोचो कि इस समय मेरे अशुभ कर्मों का उदय हुआ है। इसलिए मेरे शरीर में असहनीय पीड़ा हो रही है। यह पीड़ा कर्मजन्य है। शरीर में हो रही पीड़ा का मैं तो मात्र वेदन कर रहा/रही हूँ। जैसे-जैसे कर्म मेरी आत्मा ने बाँधे हैं उनका फल तो वैसे-वैसे मुझे भुगतना ही होगा। जो कर्मों का कर्जा मैंने लिया है, उसे चुकाना ही होगा। फिर रो-रोकर क्यों? शान्तभाव से समभाव रखकर उन कर्मों के कर्जों को चुकाना है तभी मैं कर्मों से मुक्त बन सकती हूँ।

हे आत्मन्! चिन्तन-मनन करके अशुभ कर्म के उदय से जो रोग शरीर में आया है, हाय-हाय करने से क्या वह रोग चला जायेगा या तेरा दु:ख दूर हो जायेगा? नहीं, हाय-हाय करने से दु:ख कम नहीं होगा, बल्कि बढ़ जायेगा। अत: कैसा भी कष्ट या रोग शरीर में आये, मुझे समभावों से सहन करना है।

यह रोग तो मेरी साधना को उज्ज्वल बनाने के लिए आया है। दु:ख, रोग एवं असाता मुझे मजबूत बनाने के लिए आते हैं। ये दर्द, पीड़ा मेरी सहनशीलता की परीक्षा लेने आते हैं। मुझे सजग एवं जाग्रत बनाने के लिए आते हैं। मेरे जीवन को सुन्दर और श्रेष्ठ बनाने के लिए आते हैं। मुझे शरीर और रोगों की चिन्ता करके दु:खी नहीं होना है। बल्कि आत्मा में लीन बनने का पुरुषार्थ करना है। दु:ख के समय धैर्य रखने से कर्म का फल भोगते हुए भी नये कर्मों का बन्ध नहीं होता। ज्ञानी भगवन्त कहते हैं कि अशुचि से भरे इस तन का सार यही है। तू चाहे तो इसी शरीर से मोक्ष प्राप्त कर सकता है। हमें जो यह देह मिली है, वह व्यर्थ न जाए। इस स्वर्णिम अवसर को पाकर समभावी एवं सहनशील बनकर शुद्ध भावों से मुक्ति की साधना करनी चाहिए। **यह देह भले ही अपवित्र है, बीभत्स है, अशुचि का भण्डार है, मल-मूत्र की खान है, रोगों का घर है, पर मुक्ति नगर में पहुँचाने वाली है, अत: दुर्लभ है।** इस देह के द्वारा सर्वविरति धर्म की आराधना करके अपने समस्त कर्म बन्धनों को काटकर मुझे सिद्ध, बुद्ध और मुक्त बनना है।

जब शरीर रोगों से घिर जाता है, तब स्वयं को ही पीड़ा भोगनी पड़ती है, उस समय उस दर्दी के दर्द को कौन बाँट सकता है। सुख में भले ही सब भागीदार बनते हैं, पर दु:ख में कोई साथ नहीं निभाता है।

कहना बहुत सरल है, पर जब काया में तीव्र वेदना हो रही हो, उस समय मन में अच्छे विचारों का आना मुश्किल है। बीमारी भले ही थोड़ी देर की हो, पर वह हमारे विचारों में हलचल करके मन को हिला देती है। ऐसी स्थिति में हम क्या चिन्तन करें-

युद्ध के मैदान में एक सैनिक घायल पड़ा है, शरीर गोलियों से छलनी-छलनी हो गया है, उस समय भी उसके मुख पर हास्य की लकीरें देखी जा सकती हैं। कारण उसके शुभ विचार हैं-'अब भले ही मेरी मृत्यु हो जाये, लेकिन मातृभूमि की रक्षा तो हो रही है।' पूर्व कर्म के उदय के कारण जीवन में दु:ख एवं विपत्ति आती है। जो भी बीमारी या दु:ख आया है, वह मेरे ही पूर्वभव के पाप का फल है। मैं इस समय धर्म में स्थिर बनकर समभाव रखकर इसको सहन करूँ। दु:ख में धैर्य रखने से एवं रोग को स्वीकार करने से रोग आधा हो जाता है।

शरीर जब-जब अस्वस्थ बने, मन जब शिथिल होने लगे, तब हम शालिभद्र जी को याद करें कि सुकुमाल होते हुए भी उन्होंने धधकती हुई गर्म शिला पर लेटकर संथारा कर लिया। उस समय वे कौनसा विचार करते थे-''गर्म ताप मेरे शरीर को जला सकता है, पर मेरी आत्मा को नहीं। यह ताप मेरी कर्म-निर्जरा में सहायक बन रहा है।''

धन्य है गजसुकुमाल मुनि को। जिनके सिर पर धधकते अंगारे रख दिये, खोपड़ी खिचड़ी की तरह सीझ रही है, पर वे आत्मचिन्तन में लीन हैं कि ऐसा ताप मैंने नरक में कितनी बार सहन किया, उन दु:खों के सामने यह दु:ख कुछ भी नहीं है।

खंदक मुनिजी के शरीर से चमड़ी उतारी जा रही है एवं खंदकऋषि के 500 शिष्य घाणी में पीले जा रहे हैं, पर वे विचार कर रहे हैं कि ये उपसर्ग तो मुझे मोक्ष में ले जाने के लिये ही आये हैं।

धन्य है मेतार्य मुनि को। गीला चमड़ा सिर पर सुनार द्वारा लपेटा जा रहा है। धूप में खड़े हैं, चमड़ा सूखने के कारण असीम वेदना हो रही है, आँख के डोले बाहर निकल आये, फिर भी सुनार के प्रति कोई रोष नहीं है।

धन्य है चण्डकौशिक सर्प को दूध की मिठास के कारण चींटियों ने शरीर को छलनी-छलनी कर दिया, पर समभाव रखकर, मुँह बिल में डाल दिया एवं शान्त बन गया।

धन्य है परदेशी राजा को। पत्नी ने भोजन में ज़हर मिला कर प्राण-हरण कर दिया, पर रानी पर जरा भी क्रोध नहीं। इन सब महापुरुषों ने किसी का भी प्रतिकार नहीं किया। धैर्य से सभी वेदनाओं को सहन किया। मुझे भी जब वेदना और बेचैनी महसूस हो, मन संकल्प-विकल्प से घिर जाये, शरीर की आसक्ति मन को बेचैन करे, उस समय प्रभु महावीर को याद करना है कि कैसे उन्होंने घोर कष्टों को सहन किया, पर मुँह से उफ़ तक न किया।

दु:खों के इस संसार-सागर में सुखों का नामोनिशान नहीं है। अपने स्वार्थ में बाधक बनने पर कोणिक अपने ही पिता को जेल में बन्दकर पाँच सौ कोड़े रोज मारते थे। इस संसार की यही वास्तविकता है। यहाँ हर कोई किसी न किसी कारण से दु:खी है। कोई तन से दु:खी है, कोई मन से दु:खी है तो कोई धन से दु:खी है। चारों ही गतियों में जन्म-जरा-मरण, आधि-व्याधि-उपाधि के दु:ख भरे पड़े हैं। सुख में हर कोई भागीदार बन सकता है, पर दु:ख तो मुझे मुक्ति के नजदीक ले जाने के लिए आया है। प्रभु महावीर के जीवन में कितने दु:ख, कष्ट एवं उपसर्ग आये। समभाव से सहन करने के कारण ही वे जन्म-मरण से मुक्त हुए। मुझे भी समभाव में रहकर, ज्ञाता-द्रष्टा बनकर इस वेदना को सहन करना है, यही मेरे लिये हितकर है।

इन महापुरुषों के शरीर में वेदना हो रही थी, पर मन शान्त एवं विचार शान्त थे। वेदना रोग की दासी है। रोग शरीर के अधीन है। शरीर कर्म के अधीन है एवं कर्म भूतकाल के शुभ-अशुभ भावों के अधीन है। मुझे दु:खी बनाने वाला कोई दूसरा नहीं है, ये सब निमित्त हैं। कर्म

शरीर को माध्यम बनाकर वेदना उत्पन्न करता है। जो अज्ञानी होते हैं वे रोग, कर्म, शरीर एवं निमित्तों को दोष देते हैं। निमित्त तो सदा निर्दोष होते हैं। जब तक मैं स्वयं दु:खी नहीं होऊँ, मुझे कोई दु:खी नहीं कर सकता। सुखी-दु:खी होना मेरे स्वयं के हाथ में है। जो दिखाई देता है, मन उसी को दोष देता है यह मन का स्वभाव है। यही आगे जाकर आर्त्तध्यान का कारण बनता है।

मेरे शरीर को रोग ने घेर लिया है, मुझे पीड़ा हो रही है। ऐसे विचार असमाधि के कारण बन जाते हैं। रोग शरीर में हैं, पर असमाधि मन में है। मेरे भूतकाल की असमाधि ही मेरे वर्तमान की पीड़ा का कारण है। आज यही असमाधि भविष्य की पीड़ाओं को जन्म देने का कारण बनेगी। यह रोग तो मेरी साधना को उज्ज्वल बनाने के लिए आया है, मुझे कर्म के कर्ज से मुक्त बनाने के लिये आया है। दु:ख-असाता मुझे मजबूत बनाने के लिए आती है। ये दर्द, पीड़ाएँ मेरी सहनशीलता की परीक्षा लेने आते हैं, मुझे सजग बनाने के लिए आते हैं। दु:ख मेरे जीवन को सुन्दर एवं श्रेष्ठ बनाने के लिए आते हैं और मुझे जाग्रत करने के लिये आते हैं। दु:ख में ही भगवान अधिक याद आते हैं, सुख में भगवान कहाँ याद आते हैं।

मैं अजर, अमर, शाश्वत आत्मा हूँ, मेरा जन्म भी नहीं होता एवं मृत्यु भी नहीं होती। आत्मा को रोग घेर नहीं सकता। जन्म-जरा-मरण-रोग ये सब शरीर के स्वभाव से जुड़े हैं। जब तक शरीर है तब तक ये सब दु:ख बने रहेंगे। मुझे शरीर की चिन्ता करके दु:खी नहीं होना है, बल्कि आत्मा में लीन होना है। जब हम शरीर की चिन्ता करते हैं तब आत्मा का सुख भूल जाते हैं। इसी प्रकार जब हम आत्मा की चिन्ता करेंगे तब शरीर के दु:ख अपने आप कम हो जायेंगे। मुझे शरीर मिला है अपने कर्मों के कारण। कर्म हमारी जन्म-जन्म की अतृप्त इच्छाओं के कारण बँधते हैं। जहाँ इच्छाएँ कभी पूरी नहीं होती। बीमारियाँ हमारी इच्छाओं के कारण पैदा होती हैं। इच्छा जैसा कोई रोग नहीं। इच्छाएँ हैं वहाँ दु:ख है। पूरा संसार इच्छाओं पर खड़ा है। आत्म-विचार, आत्मा का चिन्तन, आत्मा का उपचार ये सब बातें शुभ भावनाओं से ही सम्भव हैं और सकारात्मक सोच पर निर्भर है। इच्छा-मुक्ति का भाव ही शुभ भाव को जन्म देता है।

हे आत्मन्! असार दु:खों के सागर रूप इस संसार में सुख पाना है तो निम्नानुसार सम्यक् चिन्तन करके दु:ख को हल्का कर सकते हैं-

1. जो भी दु:ख आया है वह मुझे कर्मों के कर्ज से मुक्त करने के लिए आया है। इस दु:ख को समता से सहन करने से मेरे नये कर्मों का बन्ध नहीं होगा। मुझे कर्म-ऋण से मुक्ति मिल जायेगी।
2. दु:ख में दु:खी होने से अर्थात् आर्त्त-रौद्रध्यान करने से मेरे नये कर्मों का बन्ध हो जायेगा। यदि मुझे भव- परम्परा को समाप्त करना है तो सहनशील बनकर, समभाव रखकर इस दु:ख को झेल लूँ।
3. इस संसार में बहुत से दु:खी एवं रोगी व्यक्ति हैं, उनके दु:ख के सामने मेरा दु:ख कुछ भी नहीं है।
4. इस असाता वेदनीय के उदय को हँसते-हँसते सहन करूँ, चाहे रोते-रोते करूँ, सहन तो मुझे करना ही होगा। जब सहना ही है तो फिर रोते-रोते क्यों, हँसते-हँसते ही सहन करूँ।
5. पूर्व भव में मैंने ही भूलें कीं, उन भूलों की सजा मुझे असाता के रूप में मिल रही है।
6. अपने किये हुए पापों का फल मुझे भोगना ही होगा, इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं है।
7. असाता वेदनीय के उदय में हाय-हाय करने से मेरा दु:ख कम नहीं होगा, बल्कि वह और बढ़ जायेगा, फिर इसे समतापूर्वक सहन करने में ही समझदारी है।
8. संसार की विचित्रताओं का, सुख-दु:ख की स्थितियों का चित्र अपनी आँखों से देखकर, अपने मन को जाग्रत करें। इस संसार-भ्रमण से मुझे कब एवं कैसे छुटकारा मिलेगा। संसार असार है, जिधर देखो वहाँ दु:ख-कष्ट-विपत्तियाँ एवं चिन्ताएँ

दिखाई देती हैं। इस असार संसार से मुझे सार निकालना है।

9. संसार की कोई भी वस्तु, धन, सम्पत्ति, प्रेम, स्नेह, ममता, मुझे रोग, पीड़ा, वेदना एवं मृत्यु से नहीं बचा सकते, चाहे मेरा कितना ही बड़ा परिवार हो, चाहे बलवान शरीर हो, चाहे अखूट धन-सम्पदा हो। रोग, बुढ़ापा, मृत्यु पर किसी का जोर नहीं चलता। समय आने पर सबको यहाँ से जाना ही पड़ता है। मैं सब बन्धनों से मुक्त होकर इस संसार से विदा होना चाहता/चाहती हूँ, परन्तु मेरी अपनी देहासक्ति के कारण मुझे बार-बार संसार रूपी जेल में फँसना पड़ता है।

जन्म-मरण का रोग है मिटाने को।
दे दो नाथ औषध सत्संग की।।टेर।।
अब तक खोटे वैद्य मिले, उल्टा रोग बढ़ाया है।
मिथ्या संगत छूटी ज्यों, रोग समझ में आया है।
जन्म-मरण ....।। 1।।
रोग असाध्य नहीं दाता, निश्चय रोग पुराना है।
ज्ञानी गुरुवर वैद्य मिले, रोग मुक्त हो जाना है।।
जन्म-मरण....।। 2।।

हे जीव! तू रोग जन्य दुःख से क्यों घबराता है। सचमुच यदि यह रोग तुझे अप्रिय लगता है और तू रोगों से मुक्त होना चाहता है तो अब समस्त बाह्य उपचारों का त्याग कर दे, क्योंकि ये रोग कर्माधीन हैं। इन रोगों को मिटाने की शक्ति बाह्य उपचारों में नहीं है। कदाचित् कभी एकाध रोग कम हो जायेगा तो उससे कोई विशेष लाभ नहीं होगा। हमेशा के लिए तो तू रोगमुक्त हो नहीं सकता। फिर से उसका या दूसरे रोग का उदय हो जायेगा। यदि तू समस्त रोगों की चिकित्सा कराना चाहता है तो सनत्कुमार मुनि (चक्रवर्ती) की तरह जिनेन्द्र भगवान रूप अलौकिक वैद्य द्वारा कही गई औषधि का सेवन करके अपने समस्त रोगों को मिटा दे। इस संयम औषधि का सेवन करने वाला अनन्त, अक्षय, असीम और अव्याबाध आनन्द को प्राप्त कर लेता है।

-फ्लेट नं. 301, रिद्धि टॉवर, रतन नगर, एम्स रोड़,

तलहटी से शिखर तक

डॉ. रमेश 'मंयक'

गुरु की महिमा को हर युग में गाया है,
गुरु का गौरव अनादि काल से पूज्य पाया है।
गुरु है तो ज्ञान-सम्मान है
धर्म-परम्परा का प्राण है,
गुरु तत्त्व की परम्परा में
उदार-उदात्त विचारधारा
सतत प्रवाहमान रही है,
आध्यात्मिक नीति-नियम
मर्यादा-प्रामाणिकता
सेवा-त्याग-वैराग्य की ज्ञान गंगा निर्बाध बही है।
बिन गुरु-कृपा कीचड़ से कमल नहीं खिलता
मोक्ष का मार्ग नहीं मिलता
गुरु ही दर्शाते हैं भक्ति का आधार
वे ही मुक्ति के मन्त्रदाता
साधक के तारणहार
जिनकी महिमा अपरम्पार।
मेरी विनम्र सम्मति में
गुरु-देव तुल्य चेतना के सारथि
संस्कारों के संवाहक
और
समस्याओं के निदान हेतु
सूत्रधार हैं,
मैं प्रेम का प्रतिनिधि मानता हूँ
तलहटी से शिखर तक
पहुँचाने वाले संरक्षक जानता हूँ।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

10 मार्च 2023
जिनवाणी 67
ISSN 2249-2011

तत्त्व-चर्चा

आओ मिलकर कर्मों को समझें (26)

(मोहनीय कर्म-अनन्तानुबन्धी कषाय)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– अनन्तानुबन्धी कषाय की विसंयोजना कौनसे जीव कर सकते हैं?

समाधान–जो जीव क्षयोपशम समकित वाले हैं, वे ही अनन्तानुबन्धी कषाय की विसंयोजना कर सकते हैं। उनमें से चतुर्थ गुणस्थानवर्ती तो चारों गति के जीव विसंयोजना कर सकते हैं तथा पाँचवें गुणस्थान वाले तिर्यंच और मनुष्य गति के जीव विसंयोजना कर सकते हैं, क्योंकि पाँचवाँ देशविरति गुणस्थान इन दो गतियों में ही मिलता है। छठे-सातवें गुणस्थान वाले क्षयोपशम समकिती साधु-साध्वी भी विशुद्धि के बल से अनन्तानुबन्धी की विसंयोजना कर सकते हैं।

दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि नरक तथा देवगति में चतुर्थ गुणस्थानवर्ती, तिर्यञ्चगति में चतुर्थ एवं पञ्चम गुणस्थानवर्ती तथा मनुष्यगति में चतुर्थ, पञ्चम, षष्ठ और सप्तम गुणस्थानवर्ती क्षयोपशम समकिती जीव अनन्तानुबन्धी कषाय चतुष्क की विसंयोजना कर सकते हैं।

जिज्ञासा– अनन्तानुबन्धी कषाय की विसंयोजना कितनी बार हो सकती है?

समाधान–पंचसंग्रह भाग-7 तथा कम्मपयडी के संक्रमण अधिकार में उल्लेख है कि जो जीव क्षपित कर्मांश बन चुका है, वह आठ भवों में अनन्तानुबन्धी कषाय की विसंयोजना कर सकता है। क्षपित कर्मांश से तात्पर्य ऐसे जीव से है जो जीव कर्मों की निर्जरा अधिक करता है तथा नवीन बन्ध बहुत कम करता है। ऐसा जीव अधिकतम 70 कोटाकोटि सागरोपम में मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

दिगम्बर ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है कि जो जीव क्षपित कर्मांश नहीं बना है, वह भी क्षयोपशम समकित के रहते असंख्य बार भी अनन्तानुबन्धी कषाय चतुष्क की विसंयोजना कर सकता है।

जिज्ञासा– अनन्तानुबन्धी कषाय की विसंयोजना वाला जीव क्या नीचे गिरकर सीधा सास्वादन गुणस्थान में जा सकता है?

समाधान–कर्म-साहित्य में इस बारे में अलग-अलग उल्लेख प्राप्त होता है। कर्मग्रन्थ भाग-6 के विवेचन के अनुसार तो अनन्तानुबन्धी कषाय की विसंयोजना किया हुआ जीव सीधा सास्वादन गुणस्थान में नहीं जा सकता, क्योंकि सास्वादन गुणस्थान में अनन्तानुबन्धी कषाय के उदय की नियमा है, जबकि अनन्तानुबन्धी की विसंयोजना वाले जीव के तो अनन्तानुबन्धी कषाय सत्ता में भी नहीं होती, तो फिर सास्वादन गुणस्थान में आने पर उसका उदय कैसे हो सकता है? अर्थात् उदय नहीं हो सकता। इसलिए अनन्तानुबन्धी कषाय की विसंयोजना वाले जीव को सीधा पहले मिथ्यात्व गुणस्थान में जाना ही मानते हैं।

शिवशर्मसूरि विरचित कम्मपयडी के संक्रमकरण की गाथा 13 के विवेचन के अनुसार किन्हीं-किन्हीं आचार्यों ने अनन्तानुबन्धी कषाय की विसंयोजना किये हुए जीव को भी सास्वादन गुणस्थान को प्राप्त करना माना है।

कषायपाहुड की चूर्णि के अनुसार अनन्तानुबन्धी चतुष्क की विसंयोजना किया हुआ जीव उपशम समकित को प्राप्त कर ले और जब उपशम समकित का काल एक समय शेष रहे तब सास्वादन गुणस्थान में आ जाये तो उसके अनन्तानुबन्धी चतुष्क में से किसी एक

कषाय की सत्ता एवं उदय हो जाते हैं। मिथ्यात्व गुणस्थान में आने पर उस जीव के अनन्तानुबन्धी के चारों कषाय की सत्ता प्राप्त हो जाती है।

यदि सास्वादन गुणस्थान में 1 समय से अधिक रहना पड़े तो उस जीव के वहाँ 1 समय के बाद ही अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, इन चारों की सत्ता प्राप्त हो जाती है।

सास्वादन गुणस्थान में आने पर अनन्तानुबन्धी कषाय की सत्ता प्राप्त होने का कारण बताते हुए कषायपाहुड की चूर्णि में लिखा है कि सम्यक्त्व रत्न रूप पर्वत से गिराने वाले परिणामों के कारण अप्रत्याख्यानादि शेष कषाय रूप कर्म दलिक तत्काल ही अनन्तानुबन्धी कषाय रूप में परिणत होकर उदय में आ जाते हैं।

जिज्ञासा– अनन्तानुबन्धी कषाय चतुष्क का विसंयोजक जब मिथ्यात्व गुणस्थान में आता है तो उसके प्रथम समय से ही अनन्तानुबन्धी कषाय का बन्ध तथा एक आवलिका के बाद उदय प्रारम्भ कैसे हो जाता है?

समाधान–यह बात सही है कि अनन्तानुबन्धी कषाय के विसंयोजक जीव के अनन्तानुबन्धी कषाय की सत्ता नहीं रहती। फिर भी मिथ्यात्व गुणस्थान में आते ही अनन्तानुबन्धी कषाय का बन्ध प्रथम समय से ही शुरू हो जाता है। इसका कारण यह है कि मिथ्यात्व गुणस्थान में आते ही उस जीव के मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का बन्ध तथा उदय दोनों प्रारम्भ हो जाते हैं। इस मिथ्यात्व के बन्ध-उदय के प्रभाव से उस जीव के अनन्तानुबन्धी कषाय चतुष्क का भी बन्ध प्रारम्भ हो जाता है, किन्तु उदय एक आवलिका के बाद प्रारम्भ होता है। इसका कारण यह है कि अनन्तानुबन्धी कषाय की विसंयोजना करते समय अनन्तानुबन्धी कषाय के दलिक अप्रत्याख्यानी-प्रत्याख्यानावरण आदि कषाय के रूप में संक्रमित करता है और जब जीव मिथ्यात्व गुणस्थान में आता है तो पुन: अनन्तानुबन्धी के रूप में संक्रमित करना प्रारम्भ कर देता है, वे संक्रमित दलिक प्रथम समय से ही अनन्तानुबन्धी के रूप में सत्ता में पुन: आ जाते हैं।

अनन्तानुबन्धी के रूप में संक्रमित दलिक एक आवलिका के बाद उदय में आने योग्य बन जाते हैं, इसलिए मिथ्यात्व गुणस्थान में एक आवलिका के बाद अनन्तानुबन्धी कषाय का उदय भी प्रारम्भ हो जाता है। इस एक आवलिका को छोड़कर मिथ्यात्व गुणस्थान में अनन्तानुबन्धी कषाय का उदय नियम से रहता है।

जिज्ञासा– अनन्तानुबन्धी कषाय चतुष्क के दलिकों का अन्तरकरण कब होता है?

समाधान–जब कोई जीव प्रथमोपशम समकित प्राप्त करता है, तब अनन्तानुबन्धी का क्षयोपशम होता है। क्षयोपशम करने में अन्तरकरण नहीं होता है। जब अनन्तानुबन्धी कषाय का उपशम अथवा क्षय करना होता है, तब उसकी प्रथम स्थिति, द्वितीय स्थिति बनाकर अन्तरकरण किया जाता है। दूसरे शब्दों में जब क्षयोपशम समकित से द्वितीयोपशम प्राप्ति की प्रक्रिया की जाती है, तब अनन्तानुबन्धी कषाय के दलिकों का अन्तरकरण किया जाता है तथा जब क्षायिक समकित प्राप्ति की प्रक्रिया होती है, तब भी अनन्तानुबन्धी कषाय के दलिकों का अन्तरकरण किया जाता है।

जिज्ञासा– अनन्तानुबन्धी कषाय के दलिकों में रस-स्पर्धक कब-कौनसे होते हैं?

समाधान– अनन्तानुबन्धी कषाय चतुष्क का बन्ध-उदय मुख्य रूप से मिथ्यात्व गुणस्थान में होता है। मिथ्यात्व गुणस्थान में यह नियम है कि अनन्तानुबन्धी कषाय का जिस स्तर का उदय चल रहा है, उस समय प्राय: वैसा अथवा उससे आगे के स्तर का अनुभाग बन्ध होता है। जैसे यदि अनन्तानुबन्धी कषाय का उदय द्विस्थानिक चल रहा है तो उस समय के परिणामों के अनुसार बन्ध- द्वि, त्रि तथा चतु:स्थानिक में से किसी भी स्तर का हो सकता है। यदि उदय त्रिस्थानिक है तो बन्ध त्रि अथवा चतु:स्थानिक हो सकता है। यदि उदय चतु:स्थानिक है तो बन्ध भी चतु:स्थानिक स्तर का होता है।

जिज्ञासा– अनन्तानुबन्धी कषाय का क्षयोपशम तथा उपशम कितनी बार हो सकता है?

समाधान– क्षयोपशम समकित की प्राप्ति के समय तथा प्रथमोपशम समकित प्राप्ति के समय अनन्तानुबन्धी कषाय का क्षयोपशम होता ही है। क्षयोपशम समकित की अपेक्षा एक भव में उत्कृष्ट पृथक्त्व हजार बार तथा अनेक भवों में उत्कृष्ट असंख्यात बार अनन्तानुबन्धी का क्षयोपशम हो सकता है। प्रथमोपशम की अपेक्षा एक भव में उत्कृष्ट 2 बार तथा अनेक भवों में उत्कृष्ट 5 बार अनन्तानुबन्धी कषाय का क्षयोपशम हो सकता है। अनन्तानुबन्धी कषाय का उपशम द्वितीयोपशम प्राप्ति की प्रक्रिया में होता है। द्वितीयोपशम एक भव में दो बार तथा अनेक भव (2 भव) में उत्कृष्ट 4 बार हो सकता है। अत: अनन्तानुबन्धी कषाय का उपशम भी एक भव में उत्कृष्ट 2 बार तथा अनेक भव में उत्कृष्ट 4 बार हो सकता है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)

समाज के समक्ष चुनौतियाँ : शराब एवं जैनेतर परिवारों में विवाह

आज जैन समाज के सामने अनेक चुनौतियाँ गम्भीर रूप से मुखर हैं। आज जैन समाज में शराब का और अप्रत्यक्ष रूप से अण्डे का प्रयोग बढ़ रहा है। जैन द्वारा आयोजित विवाह समारोहों में कुछ शहरों में खुलकर शराब परोसी जाने लगी है। जैन संस्थाओं के बड़े-बड़े पदाधिकारियों के जीवन में शराब धड़ल्ले से चल रही है। एक ओर पूरे विश्व में 'जैन भोजन' की प्रामाणिकता है और दूसरी ओर हमारा एक वर्ग जैनत्व और जैन जीवनशैली की धज्जियाँ उड़ा रहा है। हमें इस ओर सचेत ही नहीं अपितु कड़ा होना पड़ेगा और इसे रोकने के लिए कुछ सख्त क़दम उठाने पड़ेंगे। समाज को दिशा निर्देशित करने, सम्भालने और प्रेरणा देने का दायित्व हमारे पूज्य धर्म गुरुदेवों का है और हमारे समाज नायकों का है। हमें मिलकर, दृढ़ संकल्प के साथ जैनों में शराब सेवन के विरुद्ध अभियान चलाना पड़ेगा।

दूसरी बड़ी चुनौती है जैन युवा-युवतियाँ की जैनेतर युवा-युवतियों से हो रहे विवाहों में बढ़ती संख्या। आज विवाह समारोह के जितने निमन्त्रण मिल रहे हैं, उनमें दस में से तीन निमन्त्रण ऐसे हैं, जिनमें या तो वधू या वर जैनेतर परिवार से है। एक ओर तो हम अपनी कम जनसंख्या के कारण वैसे ही राजनैतिक पटल पर अप्रभावी हैं और दूसरी ओर यह पलायन आने वाले समय में और ज्यादा गम्भीर चुनौतियाँ खड़ी करेगा। इससे जैनत्व के संस्कारों पर भी प्रहार हो रहा है। विवाह के बाद जितनी विवश लड़की होती है, उतना ही विवश लड़का हो जाता है। परिवेश बदलने से अपने मूल संस्कार बचाना कठिन कार्य है। हमें इस ओर गम्भीर चिन्तन कर इस चुनौती का सामना करने के लिए प्रभावी योजना बनानी पड़ेगी। इसमें भी हमारे पूज्य धर्म गुरुओं और समाज नेताओं की प्रभावी और प्रमुख भूमिका होनी चाहिए।

-प्रो. रतन जैन, महासचिव

जड़ की पकड़

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

जिसके भीतर है जड़ की पकड़, वही रहा संसार में रगड़।
जिसने की चैतन्य की पकड़, उसका संसार गया उखड़।।

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

श्री गौत्तमचन्द जैन

सिद्धान्त दिवाकरनां तेजकिरणो (भाग 1-2)-शुभाशीष- प्रशान्तमूर्ति सुविशालगच्छाधिपति पू. आचार्यदेव श्री विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज। सम्पादक-आचार्य विजय जयसुन्दरसूरि और आचार्य विजय मुक्तिवल्लभसूरि। **प्रकाशक**-दिव्यदर्शन ट्रस्ट, 39, कलिकुंड सोसायटी, मु. धोलका-382225, जिला-अहमदाबाद (गुजरात) 9898326244, **अन्य प्राप्ति स्थल**-(2) कल्पेशभाई वी. शाह, अहमदाबाद 9898280077, (3) डॉ. संजयभाई बी. शाह, सूरत 9825121455 **प्रकाशन**-2022, **पृष्ठ**-254

प्रस्तुत ग्रन्थ सिद्धान्त दिवाकर पूज्य आचार्य श्री जयघोषसूरीश्वरजी महाराज की स्मृति में प्रकाशित किया गया है। इसके दो भाग हैं। प्रथम भाग के प्रारम्भ में सम्पादकद्वय मुनिराज ने 'अस्तित्व नो उत्कर्ष व्यक्ति, नो प्रकर्ष' शीर्षक से आचार्यश्री जयघोषसूरीश्वरजी महाराज का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके उत्कृष्ट गुणों का वर्णन किया है। तत्पश्चात् विषयानुक्रमणिका (सुगंधनुं सरनामुं) को 8 अध्यायों (उद्यानों) में विभाजित किया है। प्रत्येक अध्याय (उद्यान) में आचार्यश्री के जीवन से सम्बन्धित विभिन्न गुणों, कृतियों, बाल्यकाल, विरक्तावस्था और समाज-हित के कार्यों का विस्तार से वर्णन किया गया है। विषय की समानता के आधार पर लेखों का उद्यानों में वर्गीकरण किया गया है। अनेक गणमान्य आचार्यों एवं सन्त-मुनिराजों ने आचार्यश्री के सम्बन्ध में अपने आलेख प्रस्तुत किये हैं, जो इस ग्रन्थ की शोभा बढ़ा रहे हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ के 8 उद्यानों में कुल 38 आलेख प्रस्तुत किये गये हैं, जो सभी महत्त्वपूर्ण हैं और आचार्यश्री जयघोषसूरीश्वरजी के जीवन की विभिन्न विशेषताओं से परिचय कराने वाले हैं।

द्वितीय भाग में भी कुल 38 अध्याय (उद्यान) हैं, जो क्रमांक 9 से प्रारम्भ होकर क्रमांक 16 तक हैं। इस प्रकार से दोनों भागों में कुल मिलाकर 16 उद्यान हैं। उद्यानों के नाम उत्तराध्ययनसूत्र के 11वें अध्ययन में बहुश्रुत को दी गई उपमाओं के आधार पर रखे गये हैं। द्वितीय भाग में विभिन्न सन्त-मुनिराजों के कुल 42 आलेख प्रस्तुत किये गये हैं। ग्रन्थों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि पूज्य आचार्यश्री का बचपन का नाम 'जवाहर' था और माता का स्वर्गवास होने के पश्चात् उन्होंने मात्र 14 वर्ष की उम्र में अपने पिता के साथ में दीक्षा ले ली। गुरुजनों की सेवा करके तथा उनकी कृपा प्राप्त करके अनेक आगमों का स्वाध्याय करके जैन सिद्धान्तों एवं आगमों का विशद ज्ञान प्राप्त किया और सिद्धान्त दिवाकर तथा गच्छाधिपति आचार्य श्री की पदवी प्राप्त की। उनके जीवन की अनेक उल्लेखनीय घटनाओं, कार्यों एवं प्रसङ्गों का इसमें उल्लेख किया गया है।

ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही पूज्य आचार्यश्री एवं गुरुतीर्थ का भव्य एवं आकर्षक चित्र है। आलेखों के प्रारम्भ में सम्बन्धित मुनिराज का भव्य चित्र प्रस्तुत है। सुन्दर, मनोहर एवं आकर्षक शैली में ग्रन्थ का मुद्रण कार्य किया गया है। पुस्तक का कागज एवं जिल्द भी मजबूत एवं स्थायी है।

गुजराती भाषा के साथ-साथ हिन्दी भाषी पाठक भी इसे आसानी से पढ़कर और समझकर लाभान्वित हो सकते हैं।

गुरु माँ अर्चना (संस्मरणों के आईने में)-लेखक-आर्या डॉ. हेमप्रभा 'हिमांशु'। सम्पादक-महावीर एम. गुलेच्छा 'अन्तर्मुखी'। **प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थल**-मुनि श्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन, ब्यावर-305901, जिला-अजमेर (राज.), **मूल्य**-100 सामायिक वर्ष भर में, **प्रथम संस्करण**-2022, **पृष्ठ**-242 + 26 = 268

प्रस्तुत पुस्तक में लेखिका ने राजगुरुमाता श्री उमरावकुँवरजी म.सा. 'अर्चना' के जन्म-शताब्दी महोत्सव के शुभ अवसर पर उनके जीवन से सम्बन्धित एक सौ संस्मरणों का गुलदस्ता तैयार कर पाठकों के

समक्ष प्रस्तुत किया है। पुस्तक के प्रारम्भ में आस्था भरी अञ्जलि का समर्पण प्रस्तुत करते हुए लेखिका ने अपने अन्तर् के उद्गार प्रकट किये हैं। सम्पादकीय के अनन्तर महापुरुषों के शुभाशीष और मंगलकामनाएँ प्रस्तुत की हैं।

महासती श्री उमरावकुँवरजी 'अर्चना' के जीवन-परिचय को लेखिका ने सात-खण्डों में विभक्त किया है। प्रथम-खण्ड 'अलोल का बाल्य कलोल' में उमरावकुँवरजी के बचपन का रोचक, करुणापूर्ण एवं हृदयविदारक वर्णन संस्मरणों के माध्यम से किया है। उमरावकुँवरजी का बचपन का नाम अलोल था। द्वितीय-खण्ड में 'राग से विराग की ओर' शीर्षक में अलोल की अन्तर्वेदना, भविष्यवाणी और उसकी दृढ़ता के साथ संयमपथ पर अग्रसर होने का वर्णन है। तृतीय-खण्ड में 'साधना के शिखर पर' शीर्षक के अन्तर्गत साध्वी उमरावकुँवरजी की साधना, अध्ययन, प्रवचनपटुता, गुणग्राहकता और विनम्रता से सम्बन्धित रोचक संस्मरण हैं। चतुर्थ-खण्ड 'मरुधरा मुकुटमणि द्वारा हिन्दु मुकुट का स्पर्श' खण्ड में साध्वीजी की कश्मीर यात्रा का रोमाञ्चकारी आकर्षक वर्णन किया गया है। पञ्चम-खण्ड में 'परमार्थ प्रेरणा एवं पदालंकार' से सम्बन्धित संस्मरण हैं। षष्ठ-खण्ड में महासतीजी के बहुमुखी व्यक्तित्व के विविध आयामों का सुन्दर, आकर्षक एवं प्रभावक वर्णन किया गया है। सप्तम-खण्ड में जीवन के सन्ध्याकाल का मनोरम चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

पुस्तक के सभी संस्मरण प्रभावकारी प्रेरणा देने वाले एवं रोचक शैली में प्रस्तुत किये गये हैं। भाषा सरल एवं हृदयग्राही है। प्रत्येक संस्मरण के नीचे प्रेरक 'अर्चना बोधि कण' दिये गये हैं और संस्मरण से सम्बन्धित आकर्षक एवं सुन्दर चित्र भी प्रस्तुत किये गये हैं, जो घटना/प्रसङ्ग को सजीव बना देते हैं। संस्मरणों के प्रारम्भ में घटना से सम्बन्धित कविता/ पद्य प्रस्तुत किये हैं एवं यथाप्रसङ्ग संस्मरणों के मध्य में भी कविताएँ प्रस्तुत की गयी हैं।

पुस्तक में प्रयुक्त कागज एवं मुद्रण भी आकर्षक एवं उच्चकोटि का है। पुस्तक सभी सामान्य और प्रबुद्ध जनों के लिए पठनीय एवं प्रेरणादायिनी है।

क्या भारत ऐसा भी था?-लेखक डॉ. सूरजमल बोबरा। **प्रकाशक**-ज्ञानोदय फाउण्डेशन, 9/2, स्नेहलता गंज, इन्दौर-452007 (मध्यप्रदेश) दूरभाष-0731-2532261, 2532050, Email: sales@mendwellagencies.com, mendwell.indore@gmail.com, **पृष्ठ**-172

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के 'प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार मासिक पत्रिका' में प्रकाशित 26 आलेखों को सम्पादित रूप में प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक के अध्ययन से प्राचीन भारत, जैन इतिहास तथा मूर्तियों के बारे में एवं अन्य महत्त्वपूर्ण विषयों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। लेखक के गहन चिन्तन-मनन एवं अनुभव से प्राप्त ज्ञान का इसमें नवनीत उपलब्ध है। पुस्तक में ऐतिहासिक जानकारी के साथ-साथ सम्बन्धित चित्र भी प्रस्तुत किये गये हैं। कतिपय स्थानों पर विशिष्ट शब्दों का विस्तृत विवेचन भी किया है जैसे कि प्रारम्भ में ही 'नमन' शब्द का समीचीन अर्थ प्रस्तुत किया गया है। दिगम्बरत्व के संकेत, मूर्ति-शिल्प, अतुलनीय अयोध्या, 9,000 वर्षों का जैन इतिहास समेटे खाण्डव वन, अलक्षित पाताला-सिन्धु सौवीर, जैन मौर्यवंश-धार्मिक समरसता का सूत्रधार आदि शीर्षक के आलेख महत्त्वपूर्ण एवं दुर्लभ जानकारी से सम्बद्ध हैं। माध्यमिका एवं धारानगरी के बारे में भी विशेष जानकारी पुस्तक के आलेखों में उपलब्ध है। पुस्तक में यथास्थान कोष्ठकों के माध्यम से ज्ञातव्य अंश प्रस्तुत किये गये हैं, जो चिन्तनीय हैं। अन्त में आचार्य समन्तभद्र के बारे में महत्त्वपूर्ण आलेख दिया गया है।

यह पुस्तक भारत एवं जैनधर्म के बारे में दुर्लभ एवं विशेष जानकारी उपलब्ध कराने वाली है।

-पूर्व संयुक्त खाद्य आयुक्त, 70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महारानी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

10 मार्च 2023
जिनवाणी 72
ISSN 2249-2011

समाचार विविधा

जोधपुर में पूज्य आचार्य भगवन्त, भावी आचार्यप्रवर सहित सन्त-सतियों की विशाल सन्निधि में तीन मुमुक्षुओं की अत्यन्त सादगी से प्रेरक दीक्षाएँ

पूज्य आचार्यप्रवर का स्वर्णाक्षरों में टंकण योग्य उद्‌बोधन

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, प्रवचन प्रभाकर, आगमज्ञ, जिनशासन गौरव, **आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.,** आदि ठाणा सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा में एवं **व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.** आदि ठाणा जोधपुर के उपनगरों में सुखे-समाधौ विराजित हैं। जोधपुर संघ के श्रावक-श्राविका एवं युवासाथी गुरुकृपा से निरन्तर लाभान्वित हो रहे हैं।

इस मास में पूर्ववत् धर्मध्यान, ज्ञान-क्रिया, साधना-आराधना, व्रत-प्रत्याख्यानों एवं तप-त्याग की चल रही अनवरत शृङ्खला के साथ, कुछ अपूर्व होने की झलक तो सबको आभासित-अनुमानित होने लगी, लेकिन कब होगा? क्या होगा? कैसे होगा? इसकी जानकारी किसी को नहीं थी। जैसे-जैसे सन्त-सतीवृन्दों के संघाटक चहुँओर से चलकर गुरुचरणों में आने लगे वैसे-वैसे सभी में जिज्ञासा एवं कुतूहल बढ़ने लगे। जनवरी मासान्त में **विरक्त भाई श्री प्रकाशजी गेलड़ा, विरक्ता बहिन श्रीमती मधुजी गेलड़ा, विरक्ता बहिन सुश्री ऋद्धिजी गेलड़ा,** जो तीनों तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा की सेवा में संयमाभिलाषी होकर प्रव्रज्या ग्रहण करने की अभीप्सा से पूरित थे, का गुरुचरणों में आना और पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शन-वन्दन-आज्ञा पाकर अन्तिम बार पूर्णरूपेण निवृत्ति हेतु घर जाना। पुनः लौटकर सादगीपूर्ण गुप्त दीक्षित होने की भावना होना, रत्नसंघ के इतिहास में इस प्रकार सपरिवार प्रव्रजित होने का प्रथम प्रसङ्ग साकार होगा, लेकिन अघोषित एवं सम्भावित होने से सभी जिज्ञासा से भरे रहे। यथास्थान सन्त-भगवन्तों की वाणी में इसका वर्णन है।

शासन सेवा समिति, दीक्षा समिति, मुमुक्षु समिति, राष्ट्रीय पदाधिकारी, स्थानीय पदाधिकारी जिज्ञासु होकर गुरुचरणों में आते रहे एवं संकेत पाने की अभिलाषा से भरे रहे। साथ ही सन्त-सतीवृन्दों के संघाटक भी कुछ तो जानकारी मिले, इस भाव एवं जिज्ञासा से पृच्छा भी करते तो पूज्य आचार्य द्वय का एक ही जवाब होता कि जो होगा, आपके सामने ही होगा। कब, क्या और कैसे होगा, यह गुप्त ही रहा। मुमुक्षुओं के परिवाजन, रिश्तेदार आदि का भी आवागमन होने लगा, जिनको परिवार द्वारा करने योग्य शुभ कार्यों के संकेत तो दिये, लेकिन दीक्षा कब होगी, यह पूर्णरूपेण गुप्त रखा गया। सब कुछ एक परिसीमा में करने की स्वीकृति, बिना बाहर जानकारी दिये चलता रहा।

ज्ञानार्थी सुश्री ऋद्धिजी बाफना, भोपालगढ़ एवं ज्ञानार्थी सुश्री नेहाजी जैन, गंगापुरसिटी के आज्ञापत्र परिवाजन ने प्रदान किये। पूर्व चीफ जस्टिस ऑफ इण्डिया एवं संघ-संरक्षक सुश्रावक श्री आर.एम. लोढ़ा साहब दर्शनार्थ पधारे। प्रार्थना, प्रवचन, वाचनी नियमित यथासमय गतिशील है एवं प्रतिदिन 10 आयम्बिल सतत पूरे जोधपुर में गतिशील हैं।

सन्त-सतीवृन्द की तपस्या की कड़ी में महासती श्री शशिकलाजी म.सा. के 26 फरवरी को 22 की तपस्या चल रही थी एवं महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. ने 8 की तपस्या की। अनेक सतियाँजी ने भी तेले आदि की तपस्याएँ कीं। श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. ने पचौले की तपस्या की।

विशेष-9 फरवरी को पावटा में 3.00 बजे आगम-वाचनी पूर्ण होते ही **धर्मसभा (वाचना-परिषद्)** में **उपस्थित 63 सन्त-सतियों** की उपस्थिति में **पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** द्वारा मंगलमय, शिक्षाप्रद उद्बोधन में फरमाये भाव बिन्दुवार अग्रांकित हैं-

1. **संघ की सामाचारी की पालना दृढ़ता से होनी चाहिए। सामाचारी की पालना में ही संयम की निर्मलता है।**
2. **संघ एक परिवार है, परिवार प्रेम और सहयोग से ही आगे बढ़ता है। हम इस चतुर्विध संघ रूपी परिवार में परस्पर आत्मीयभाव से रहें।**
3. **साधु विचरणशील होता है। आत्मोन्नति के आत्मीय-भाव के साथ संघ-समाज को जीवन-निर्माण की सम्यक् दिशा देने का परम दायित्व होता है। वह जहाँ-जहाँ विचरण करता है, वहाँ-वहाँ धर्मचेतना जगाता है, धर्म चेतना जगाने पर ही श्रावक संघ उनके चातुर्मास की विनति करता है। इसलिए मेरी भावना है कि प्रत्येक सिंघाड़े में एक सन्त/सती संघ के प्रत्येक सदस्य को धर्मप्रेरणा करने की जिम्मेदारी सम्भालें। इससे आप जहाँ विचरण करोगे, वहाँ रत्नत्रय की खुशबू फैलेगी और लोग भी कहेंगे कि महाराज! हमें चातुर्मास कराना है।**
4. **अपने साथ अपने सहवर्ती सन्त/सतियों को आगे बढ़ाएँ। हर सिंघाड़े में परस्पर अध्ययन करने का लक्ष्य बनायें, शिक्षक या विद्वानों के भरोसे न रहें। आप यदि स्वयं उन्हें अध्ययन करायेंगे तो उनके मन में आपके प्रति उपकार दृष्टि बढ़ेगी, अन्यथा शिक्षकों का ही ज्ञानवृद्धि में उपकार मानेंगे।**
5. **आप सभी ने मुझे संघ-सञ्चालन में अत्यन्त सहयोग दिया है, ठीक इसी प्रकार भावी आचार्यश्री को देना है।**

10 फरवरी की प्रवचन सभा की पूर्णाहुति पर, 11 फरवरी को प्रवचन समय में परिवर्तन की घोषणा से चहुँओर से लोग 11 फरवरी को दीक्षा होगी, समझकर उमड़ पड़े, लेकिन लोगों का अनुमान सिर्फ अंदाजा ही साबित हुआ एवं सभी को लौट जाना पड़ा, क्योंकि दीक्षा कब होगी, यह अभी भी गुप्त बना रहा।

बिना अभिनन्दन, बिना शोभायात्रा के 12 फरवरी को तीन मुमुक्षु हुए प्रव्रजित, संयम की महिमा हुई उजागर

12 फरवरी को तीनों मुमुक्षु मुण्डन करवाकर परिवारजन, रिश्तेदार एवं श्रावक-श्राविकाओं की अत्यल्प उपस्थिति में प्रातः 8.45 बजे पैदल-पैदल स्थानक में आये तथा दर्शन-वन्दन करने के पश्चात् उन्हें प्रवचन सभा में सबसे आगे बैठाया गया, तदुपरान्त परमाराध्य आचार्य भगवन्त, भावी आचार्यश्री सहित सभी सन्त-सतीवृन्दों का आगमन एवं ज्ञानगच्छीय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ठाणा-2 का भी आगमन हुआ। लगभग इसी समय राष्ट्रीय पदाधिकारीगण, शासन सेवा समिति, दीक्षा समिति, मुमुक्षु समिति, स्थानीय पदाधिकारियों सहित वीर परिवारजन, श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति बढ़ने लगी। **63 रत्नसंघीय एवं 2 ज्ञानगच्छीय चारित्रात्माओं की समुपस्थिति में,** संघ एवं परिवारजन की आज्ञा पाकर, परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से सविधि

जैन भागवती दीक्षा को लुंचन सहित कराया। प्रवचन सभा में इस प्रव्रज्या प्रसङ्ग पर चारित्रात्माओं के व्यक्त भाव अग्रांकित हैं

आचार्य भगवन्त परम श्रद्धेय श्री हीराचन्द्रजी म.सा.–संयम कठिन (भारी) नहीं है, अत्यन्त सरल है। अभवी जीव भी संयम पथ को स्वीकार कर लेता है। जिस अभवी को शास्त्रों में कोरडू (नहीं सीजने वाला, नहीं उगने वाला मूँग का दाना) की उपमा दी गई है, वह अभवी भी इस संयम को स्वीकार करके नव गैवेयक में जाने की करणी कर लेता है, गणधर भगवन्त जैसी दृढ़क्रिया का पालन कर लेता है। अत: **संयम लेना भारी नहीं है। भारी है स्वयं की प्रकृति को मोड़ना। जो व्यक्ति अपनी प्रकृति में परिवर्तन कर लेता है, वह इस संयम–मार्ग पर सहजता से आगे बढ़ जाता है। इसलिए प्रकृति–परिवर्तन ही दीक्षा है। जो अपनी प्रकृति को बदल लेता है, जो सबके साथ आत्मीय भाव से रहना सीख जाता है, निभने और निभाने की कला को जानता है, वह चाहे घर में हो, संघ–समाज में हो या आज इस संयम मार्ग पर चरण बढ़ाने वाला हो, वह जहाँ रहेगा वहाँ उस पर आनन्द की धारा बरसती रहेगी। इसलिए घर छोड़ना ही नहीं, प्रकृति को मोड़ना ही संयम है।** छोड़ना सरल है, मोड़ना मुश्किल है। **प्रकृति को मोड़ने वाला संयमी ही आराधक बनकर अपनी भव–परम्परा को सीमित कर सकता है,** अन्यथा तो आज तक हमारा यह जीव अनेक बार वेश बदल चुका है, सैकड़ों बार ओघे पातरे ले चुका है, फिर भी मोक्ष–अवस्था को प्राप्त नहीं कर सका। सब कुछ वश में कर लिया चाहे वह सुख–सुविधा हो, परिवार का मोह हो, लेकिन अपने स्वभाव को वश में नहीं कर पाया। प्रयास करें, प्रयास करने वाले के लिए सब कुछ सम्भव है। शान्ति एवं आनन्द की अनुभूति इसी में है। फिर आप कहीं भी रहो, संसार में या संयम में, आप खुद भी शान्ति में रहोगे और आपके साथ रहने वाले भी शान्ति और आनन्द में रहेंगे। लोग कहते हैं–बाबजी! आदत छूटती नहीं है। भाई आदत छूटती नहीं क्या? हम छोड़ते नहीं हैं, ऐसे कहो। छोड़ने का संकल्प चाहिए, संकल्प करने पर ही परिवर्तन सम्भव है। आज परिवर्तन के संकल्प के साथ ही ये मुमुक्षु आत्माएँ संयम में अपने चरण बढ़ा रही हैं। आप भी इनसे प्रेरणा प्राप्त कर आगे बढ़ें। व्यक्ति में 100 गुण हैं, लेकिन प्रकृति का तालमेल नहीं होने से उसके 100 ही गुण बेकार हो जाते हैं। आज के दिन से आप सभी लगन के साथ अपने स्वभाव को अच्छा बनाने में लग जाइये, जिससे आपको इस भव और परभव में आनन्द ही आनन्द होगा।

भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.–संयम अभिव्यक्ति का विषय नहीं, अनुभूति का विषय है। संयम कथनी नहीं, करणी का विषय है। संयम वागरणीय नहीं, आचरणीय है, हालाँकि गुणगान के साथ संयम का सन्धान करते–करते जीव में संयम के प्रति अहोभाव बढ़ता है। जो सीखा है, पढ़ा–सुना है उसे आचरण में लाना संयम है। सभी पूछते हैं कि–बाबजी! दीक्षा कब होगी इसके स्थान पर ये चिन्तन करो कि मेरी दीक्षा कब होगी? जो संयम लेकर गुरु आज्ञा में समर्पित हो जाय, उसे चिन्ता नहीं कि अब मेरा क्या होगा? **अगर गुरु आज्ञा में है तो निश्चित मोक्ष होगा। मोक्ष हेतु 14 पूर्वों का ज्ञान जरूरी नहीं, प्रवचन देना जरूरी नहीं, संयम एवं समता में जीना आ जाय तो मोक्ष सामने है, दूर नहीं।** इन मुमुक्षुओं की एवं परिवार की भावना थी कि गुरुदेव के मुखारविन्द से सादगी से दीक्षा हो। गुरुदेव को ऊपर घूमने में भी कष्ट का अनुभव होता है, फिर भी प्रतिक्षण आत्मभावों में, संयम की सजगता में तल्लीन रहते हुए इनकी भावनाओं को ध्यान में रख कल तक घोषणा नहीं की। आज दीक्षा दान हेतु प्रवचन सभा में पधार गये हैं। 40 साल पहले जब पूज्य गुरु हस्ती औरंगाबाद में थे, तब भाई प्रकाशजी, अनिलजी,

सुनीलजी गुरुचरणों में रहे, तीनों की भावना थी, मगर दादाजी श्री बिरदीचन्दजी मोहवश वापस लेकर गये। उस समय सुयोग नहीं था, अब पिताजी श्री कान्तिलालजी परिवार के साथ आ गये। उनके अनुकूल-सहकार से पीपाड़ में 4 एवं अभी 3 सदस्यों ने संयम ले लिया। संयम श्रेष्ठ है, लेने लायक है, आचरण लायक है। जिन्होंने लिया है उनके लिए दो शिक्षा है-(1) देवे जिको खावणो और (2) केवे जिको कर लेवणो।

ज्ञानगच्छाधिपति श्रुतधर श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. के सन्त पधारे हैं, विराज रहे हैं। हमारे जिनशासन में संघ-सौहार्द-स्नेह-प्रेम है। लोग भ्रान्तियाँ फैलाते हैं कि परस्पर सन्त बोलते नहीं हैं। यह आप भ्रान्ति निवारण कर लें, सन्तों के परस्पर सौहार्द के बिना यह दृश्य देखने में नहीं आता।

रत्नसंघ में पहले बड़ी दीक्षा पर नामकरण होता था, मगर पीपाड़ में 13 दीक्षाओं के प्रसङ्ग से संयम ग्रहण करने के दिन नाम की घोषणा करने लगे हैं। उसी के अनुरूप गुरु आज्ञा से भाई प्रकाशजी, जिनका पहले से नाम अच्छा है। संसार के अन्धकार से निकलकर संयम के प्रकाश में बढ़े एवं आगे भी सच्चा प्रकाश-केवलज्ञान प्राप्त करे, अत: आज से ये **'प्रकाशमुनिजी'** बन गये। धर्मसहायिकाजी एवं दोनों पुत्री (एक ने पहले दीक्षा ले ली) अभी दोनों माँ-बेटी की दीक्षा हुई। बहिन मधुजी, गुरु-गुरुणी चरणों में आगे बढ़ीं, संयम में आगे बढ़ने के साथ संयम साधना की सफलता हेतु व्यवहार में मृदुता और भावों में ऋजुता (सरलता) आवश्यक है। अत: मधुजी का नाम **'मृदुताश्रीजी'** और ऋद्धिजी का नाम **'ऋजुताश्रीजी'** होगा। गुरुदेव यहीं विराज रहे हैं, गुरुदेव के सान्निध्य में सुखे-समाधौ फागण वदि त्रयोदशी शनिवार **18 फरवरी को प्रवचन में बड़ी दीक्षा करवाने के भाव हैं।** आप भी संयम की अनुमोदना कर आगे बढ़े।

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेयश्री गौतममुनिजी म.सा.-

एक सच्चा मार्ग संयम का, जहाँ दु:खों से मुक्ति मिले।
सुनो चेतन, सुनो मनवा...।।

आज हम जिस मुकाम पर बैठे हैं, हमें ऐसा उच्च जिनशासन मिला, ऊँचे गुरु मिले और गुरु का मार्गदर्शन मिल रहा है। हमें अनुकूल परिस्थितियाँ मिलीं, सुन्दर मानव जन्म, आर्यक्षेत्र, उत्तम कुल इत्यादि, इन सबको प्राप्त करने में सबसे बड़ा योगदान संयम का ही रहा है। पूर्वभवों में संयम नहीं रखते तो इस स्थिति में नहीं पहुँच पाते। आज बच्चे-बच्चियों में संयम के संस्कार नहीं हैं, आज परिवारों में न सामूहिक प्रार्थना है, न सामायिक-स्वाध्याय का माहौल है। आप अगर प्रवचन में जायें, रात को नहीं खायें, सुबह नाश्ता नहीं करें तो बालक पूछेंगे कि आप ऐसा क्यों कर रहे हैं? तो आप प्रवचन एवं रात्रिभोजन-त्याग, नवकारसी-पौरसी आदि के विषय में बतायेंगे। मगर **याद रखना ये संस्कार देने से नहीं जीने से आते हैं।** जीवनशैली में मात्र एक ही धुन लगी है, पैसा और लाभ कमाना। यहाँ तक कि **बच्चे-बच्चियों का पहनावा भी नज़रें नीची कर देने वाला है।** आज नवदीक्षितों पर जिम्मेदारी आई है-**''मात्र वेश से मुक्ति नहीं, सच्चे आन्तरिक वैराग्य से मुक्ति होती है।''** साधकों का वैराग्य जीवन्त रहना चाहिये, यह हमारी सब (चतुर्विध संघ) की जिम्मेदारी है। जिस उल्लास-उमङ्ग से आज संयम मार्ग पर बढ़ रहे हैं वह उल्लास-उमङ्ग बना रहे, विपुल कर्म-निर्जरा करें, अपने भव को सीमित करें, सिद्धत्व की श्रेणि में आगे बढ़ें।

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.-तीन शब्द हैं-संयम की बहुलता, संवर की बहुलता और समाधि की बहुलता। अभी महापुरुषों ने बहुत चर्चा की है। संयम 'समाहिवरमुत्तमं दिंतु' है। इसमें संवर की साधना होती है। **संयमी का अभिप्राय समाधि में रहना है।** इसी कड़ी में अभी समकित के पहले लक्षण समभाव तथा चारित्र में पहले सामायिक चारित्र की महिमा गुरुदेव एवं भावी आचार्यश्री ने विश्लेषणसहित बतायी।

दीक्षा तो साधक-जीवन की शुरुआत है, अन्त नहीं। आगे बढ़ने की शुरुआत है। अजीव में परायेपन का दर्शन है। जीव-अजीव के सदुपयोग के बिना जीव द्वारा आगे नहीं बढ़ा जा सकता। पाप में मन, वचन, काया नहीं है, बल्कि पुण्य में मन, वचन, काया तीनों हैं अर्थात् योग गलत नहीं करें। **प्रवृत्ति गलत-सही नहीं होती है, अपितु अभिप्राय गलत-सही होता है। अभिप्राय शुद्धि हेतु प्रवृत्ति शुद्ध करें।** प्रवृत्ति की विपरीतता से बचाव कर सकते हैं।

बड़ी बहिन ने सी.ए. करने के बाद चारित्रात्माओं से एक वाक्य सुना, क्या करोगी ऑडिट करके? पहले खुद की ऑडिट की है क्या? **एक वाक्य से जीवन बदल गया।** अब पूरा परिवार आगे बढ़ रहा है। मोक्ष में जाने का उपाय है-जीव के आहार-आचार और विचार की शुद्धि। सबसे पहले आहार की शुद्धि। आज जैनों की संख्या जितनी है, उनमें भी जैनत्व है क्या? जैनत्व के संस्कार खत्म हो रहे हैं। हम जिम्मेदार हैं। दूसरी ओर आठ साल की बच्ची की दीक्षा हो जाती है। अति सम्पन्न परिवार से है, जन्म से स्कूल नहीं भेजा, टी.वी.-मोबाइल का उपयोग नहीं किया। ये संस्कार कहाँ से आये? अनेक दीक्षाएँ हो रही हैं। **नारों से-भाषणों से धर्म नहीं चलते, स्वाध्याय के नन्दीघोष से धर्म चलते हैं।** जीवन क्षणभंगुर है, संस्कार दें। सेवा समर्पण के भाव से गुरुचरणों में बच्चों को रखो और स्वयं भी स्वाध्याय में पुरुषार्थ करते रहें।

विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.-मुझे शब्दों का जाल नहीं गूँथना, पर संयम के पथ पर चलने वालों का जोश हमने देखा है। यह सारा श्रेय गुरु-भगवन्तों को तो है ही, पर हमारे महासती श्री पद्मप्रभाजी को भी जाता है। **पीपाड़ में 13 दीक्षाएँ एवं आज ये तीन गुप्त सादगीपूर्ण दीक्षाएँ हो रही हैं। रत्नसंघ इतिहास में पहली बार ऐसा नज़ारा देखा है।** आप सभी उपस्थित हैं, इस समूह में भी कई मुमुक्षु हो सकते हैं। कोई न कोई जागे, यही भावना है।

महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.-आज सौभाग्य का दिवस है, क्योंकि गुरु को पाना, प्राप्त करना प्रथम सौभाग्य है। दूसरा सौभाग्य है-श्रद्धा करके, मन्थन करके जीवन को प्रयोगशाला में उतारना। **तीसरा सौभाग्य होता है गुरु से मार्गदर्शन प्राप्त करके उनके चरणों में जीवन को समर्पित कर देना।** परम सौभाग्य है कि गुरु जीवन का सत्य एवं विधाता का अनुभव कराने वाले आचार्य भगवन्त, भावी आचार्यश्री के चरणों में अभी-अभी तीनों मुमुक्षुओं ने संयम स्वीकार किया। साधनों का सुख, सफलता का सुख वास्तव में सुख नहीं सुखाभास है, क्षणिक है। साधना का सुख सच्चा है एवं इससे बढ़कर कोई सुख है तो वह है समाधि का। अनुकूलता-प्रतिकूलता में समभावों में रहते हुए, समाधि में रहें हम भी यही शुभभावना भायें, आगे बढ़ें।

ज्ञानगच्छीय श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने काव्यात्मक अभिव्यक्ति को स्तुत्यभाव से प्रकट किया तथा बालों का **लोच करवाना, पैदल नंगे पैर चलना, 22 परीषह सहन आदि बाहरी क्रियाओं को वैराग्य का मूलगुण नहीं बताते हुए, भीतर में समता, समभाव, समाधि में रमण करते हुए गुरुआज्ञा में रहना तथा आचरण के सूत्रों को अपनाना**-कहाँ जाना-जहाँ भेजोगे, क्या खाओगे? जो देओगे।

ये है संयम पावणो, जैसे पेड़ खजूर।
चढ़े तो रस मिले, पड़े तो चकनाचूर।।

दोहे के माध्यम से संयम के आचार एवं परिणामों की ओर इंगित किया गया।

सभा विसर्जन एवं दीक्षा सम्पन्न होने के पश्चात् अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के उपस्थित सभी पदाधिकारीगण ने दीक्षार्थियों के वयोवृद्ध बुजुर्ग **श्री कान्तिलालजी गेलड़ा** सहित उपस्थित सभी वीर परिवारजन का अभिनन्दन करते हुए,रजत पट्टिका प्रदान की। सभा का सञ्चालन श्री प्रकाशचन्दजी सालेचा ने किया।

18 फरवरी शनिवार फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी को नवदीक्षित तीनों संयमियों को आराध्य पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त की आज्ञा से भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरोहण कराया, जिसमें दशवैकालिक के चार अध्ययनों का मूल पाठ उच्चारण के साथ, अर्थ-भावार्थ पर सक्षम प्रवचन करते हुए-ज्ञानार्थी, नवदीक्षितों तथा पूर्व महाव्रतियों को आत्मोत्थान जीवन-निर्माण के अनेक सूत्रों के माध्यम से सन्देश फरमाया, जिसका सारांश निम्नांकित है-

साधक के जीवन में सबसे पहली शिक्षा होती है, शिक्षा के पश्चात् परीक्षा होती है। परीक्षा लेने वाले दो होते हैं, एक तो परिवार वाले एवं दूसरे गुरु, फिर दीक्षा होती है। दीक्षा के पश्चात् साधुचर्या की समीक्षा होती है फिर छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरोहण होता है। जैसे-जैसे आपकी संयम पर्याय बढ़े, वैसे-वैसे विनय-व्यवहार और समर्पण बढ़ता रहे। संयम-जीवन में ज्ञान कम हो तो भी चल जायेगा। तप कम होगा तब भी चल जायेगा, पर भगवान की आज्ञा में, गुरु आज्ञा में समर्पण बिना नहीं चलेगा। **गुरु की प्रतिकूल आज्ञा भी खुशी-खुशी पालन होती दिखे तो समझना सच्चा समर्पण।** अनाचार चाहे छोटा हो या बड़ा संयम-जीवन के लिए घातक होता है। जमाना कितना भी नया आ जाये, पर भगवान के सिद्धान्तों की पालना वैसी ही होनी चाहिए। सत्यमहाव्रत की विवेचना करते हुए फरमाया-सच बोलेंगे तो हमारी इज्जत खराब हो जाएगी, ऐसा नहीं है। झूठ बोलोगे तो इज्जत ही क्या तुम्हारा संयम-जीवन भी खराब हो जायेगा।

छज्जीवनी का अध्ययन संयमी-जीवन का प्रारम्भ है, तो साथ ही षड्जीवनिकाय रूपी संसार से मुक्त होना अन्तिम लक्ष्य है। देश-विदेश चहुँओर से श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं, श्रीसंघों, स्थानीय पदाधिकारियों तथा वीर-परिवारों का दर्शन-वन्दन, मांगलिक श्रवण एवं विनति हेतु अनवरत आगमन पूर्ववत् बना हुआ है एवं जोधपुर श्रीसंघ की रीति-नीति अनुसार पावटा में सेवा-सम्भाल, आवास-निवास, भोजन व्यवस्था भी पूर्ववत् सुन्दर सुव्यवस्थित गतिशील है। विचरण कर रहे सन्त-सतीवृन्द की विहारसेवा भी सुन्दर सुव्यवस्थित चल रही है। प्रवचनांश के संकलन में श्री सुमतिचन्दजी मेहता, पीपाड़सिटी एवं श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर का सहकार प्राप्त हुआ है। *-गिरराज जैन*

सन्त-सतीवृन्द का विचरण विहार

आगोलाई-जोधपुर-आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 के यहाँ पधारने से प्रवचन आदि सभी धार्मिक गतिविधियों में युवक, युवती, प्रौढ़, बुजुर्ग सभी उत्साह से बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। मुनिश्री के प्रवचनों के प्रभाव से कई प्रकार के व्रत-प्रत्याख्यान भी लोगों ने स्वीकार किये हैं। इससे पूर्व मुनिश्री ने सहवर्ती सन्तों के साथ आचार्य भगवन्त के निर्देशानुसार जोधपुर के प्रमुख उपनगरों में भ्रमण कर अलख जगाई है। अभी सन्तत्रय यहाँ से विहार कर आगे बालेसर, बालोतरा की तरफ बढ़ें, ऐसी सम्भावना है। *-भोपालचन्द गोगड़*

अक्षय तृतीया पर एकान्तर तप-साधकों से निवेदन

आगामी वैशाख शुक्ला तृतीया, 23 अप्रेल, 2023 को तप और दान का विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया समुपस्थित हो रहा है। इस पावन अवसर पर तप-साधक आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्यप्रवरश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में उपस्थित होकर जो भी तपस्वी भाई-बहिन दान एवं तप के माहात्म्य को श्रवण कर नवीन त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण करना चाहते हैं, वे सभी साधक अपने पधारने की स्वीकृति नाम एवं सदस्य संख्या का उल्लेख करते हुए संघ के प्रधान कार्यालय-सामायिक-स्वाध्याय भवन,

प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर, फोन नं. 0291-2636763, 2624891 पर अवश्य लिखवा दिरावें। कार्यक्रम स्थल की सूचना गुरुदेव द्वारा घोषणा होने पर शीघ्र ही देने का लक्ष्य रहेगा। दूर गाँव से पधारने वाले साधक अपना आरक्षण जोधपुर तक का करवा सकते हैं। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की 8 जनवरी 2023 को आयोजित परीक्षा का परिणाम घोषित

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 08 जनवरी 2023 को आयोजित **जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा) कक्षा 1 से 12 का परीक्षा परिणाम** घोषित कर दिया गया है। परीक्षा परिणाम सम्बन्धी सूचना सभी परीक्षार्थियों को बोर्ड द्वारा भिजवाई जा चुकी है। सभी केन्द्राधीक्षकों को अपने-अपने केन्द्र के परीक्षा परिणाम की सूची भी भिजवाई जा चुकी है। जिन परीक्षार्थियों ने वरीयता सूची में स्थान प्राप्त किया है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित हैं-

अस्थायी वरीयता सूची

(प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
16743	अंकिता ललितजी हिरण	वैजापुर (महा.)	99.75	प्रथम
13780	विमला हीरालालजी भण्डारी	कोलकाता	99.60	द्वितीय
16300	निलिमा राहुलजी बोरा	लासूर स्टेशन (महा.)	99.50	तृतीय
16682	आशा शांतिलाल जी भण्डारी	आकोला (राज.)	99.40	चतुर्थ
5818	तनुजा सुनिलजी जैन	राधानिकुंज, जयपुर (राज.)	99.35	पंचम
16613	प्रियंका सुमितजी डागा	साबरमती, अहमदाबाद (गुज.)	99.30	षष्ठ
16419	सोनल ललित जी लोढ़ा	लासूर स्टेशन (महा.)	99.25	सप्तम
16528	मंजु हस्तीमल जी बच्छावत	कोलकाता	99.10	अष्टम
15095	कोमल रोहन जी खींवसरा	रविवारपेठ, नाशिक (महा.)	99.05	नवम
16834	आशा मनसुखलाल जी हिरण	वैजापुर (महा.)	99.00	दशम

(द्वितीय कक्षा)

14015	नम्रता महेन्द्र जी कोठारी	महावीर कॉलोनी, अजमेर	99.75	प्रथम
13830	निकिता विपल जी धोका	धामणगाँव रेलवे (महा.)	99.50	द्वितीय
10191	चन्द्रकांता गजेन्द्र जी कोठारी	भीलवाड़ा (राज.)	99.25	तृतीय
3646	पुनम पुनित जी पगारिया	पाली (राज.)	98.60	चतुर्थ
3164	नेहाकुमारी राजेन्द्र जी जैन	शक्तिनगर, जोधपुर (राज.)	98.55	पंचम
16763	भाग्यवन्ती विशाल जी सालेचा	शक्तिनगर, जोधपुर (राज.)	98.50	षष्ठ
14195	वंदना दिलीप जी बोहरा	अंकलेश्वर (गुज.)	98.45	सप्तम
13390	नीलम संदीप जी सुराणा	टेक्सास, अमेरिका	98.40	अष्टम
12957	सुनिता नेमीचन्द जी भटेवरा	वैल्लूर, चेन्नई	98.25	नवम
14219	रिम्पी दीपक जी जैन	घरोन्दा (हरियाणा)	98.20	दशम

(तृतीय कक्षा)

16525	नेहा राजेश जी नाहटा	ऊटी (तमिलनाडु)	98.75	प्रथम

10641	पूजा योगेश जी छाजेड़	सईदापेठ (चेन्नई)	97.00	द्वितीय
10067	प्रियंका अशोक जी जैन	नागपुर (महा.)	96.00	तृतीय
10942	अमिता संजय जी ओटावत	बोरीवली (मुम्बई)	95.75	चतुर्थ
7440	छाया सुरेशकुमार जी सुराणा	सदर नागपुर (महा.)	95.50	पंचम
11275	सोनम राकेश जी रांका	कालम्बोली (मुम्बई)	95.25	षष्ठ
3514	पायल पानमल जी सांड	विजयवाड़ा	95.00	सप्तम
11265	आशा कल्पेश जी चोरड़िया	कालम्बोली (मुम्बई)	94.75	अष्टम
1629	ईशा रमेश जी बोहरा	तिरुवेल्लुर, चेन्नई	94.50	नवम
10351	निलम रिकेश जी खींवसरा	तांबरम, चेन्नई	94.25	दशम
		(चतुर्थ कक्षा)		
16524	हेमा मुकेश जी कटारिया	तंडियारपेठ,चेन्नई	99.00	प्रथम
10043	इन्दु कमलेश जी जैन	मलाड़, मुम्बई	98.75	द्वितीय
10281	कविता उत्तमराज जी बोहरा	रायचूर	98.50	तृतीय
9096	ज्योति किशोर जी खाबिया	कडलूर, चेन्नई	98.25	चतुर्थ
10285	रीटा जितेन्द्र जी पिंचा	रायचूर	98.20	पंचम
10286	प्रिया विरेन्द्र जी पिंचा	रायचूर	98.15	षष्ठ
10287	नूतन दिलीप जी जैन	रायचूर	98.10	सप्तम
10088	सरिता अशोक कुमार जी मेहता	महावीर कॉलोनी, अजमेर	98.05	अष्टम
9950	प्रमिता श्रीपाल जी लुणावत	रविवारपेठ, नाशिक	98.00	नवम
7840	भारती शीतल जी ललवाणी	सिल्लोड़ (महा.)	97.50	दशम
		(पाँचवीं कक्षा)		
14251	पूनम प्रतीक जी मेहता	मदनगंज (राज.)	98.00	प्रथम
7368	नीता पवन जी चतुर	रायचूर	97.00	द्वितीय
7362	शीतल श्रीकांत जी खींवसरा	रायचूर	96.75	तृतीय
10430	अनुपमा प्रवीण कुमार जी भण्डारी	चिदम्बरम, चेन्नई	96.00	चतुर्थ
5190	शिखा नमित जी बोथरा	नगनालूर, चेन्नई	95.75	पंचम
2756	मीना नरेन्द्र जी चौधरी	भोपाल	95.50	षष्ठ
16468	संगीता नरेशचंद जी डागा	तिरुवनामलई, चेन्नई	95.25	सप्तम
		(छठी कक्षा)		
4971	सरिता शिवकुमार जी संकलेचा	अमरावती	99.00	प्रथम
444	आराधना मनीष जी गुलेच्छा	पाली (राज.)	98.00	द्वितीय
7302	अनिता प्रकाशचंद जी गोलेच्छा	अम्बुतुर, चेन्नई	97.75	तृतीय
4909	सपना विजय कुमार जी कोटेचा	यवतमाल	97.50	चतुर्थ
333	अंजु दीपक जी जैन	पाली (राज.)	97.25	पंचम
1140	डिम्पल विशालराज जी बेताला	सईदापेठ, चेन्नई	96.00	षष्ठ
7423	सोनिया पवन जी आछा	कावेरीपक्कम, चेन्नई	95.50	सप्तम
		(सातवीं कक्षा)		
864	चन्द्रगंधा सुरेश जी तातेड़	तिरुवल्लूर, चेन्नई	99.00	प्रथम
13024	मोनिका राहुल जी गाँधी	सलायूर, चेन्नई	97.00	द्वितीय
665	बबीता विमलचंद जी गादिया	रेडहिल्स, चेन्नई	96.50	तृतीय

6156	विद्या निर्मल जी छाजेड़	पोलूर, चेन्नई	96.00	चतुर्थ
5128	शांति दीपक जी सांखला	तिरुवल्लूर, चेन्नई	94.50	पंचम
13600	लता नरेन्द्र जी जालोरी	रविवारपेठ, नाशिक	94.00	षष्ठ
5141	शर्मिला किशोर कुमार जी बोहरा	तिरुवल्लूर, चेन्नई	93.00	सप्तम
		(आठवीं कक्षा)		
7536	शर्मिला संदीप जी खींवसरा	वैशाली नगर, अजमेर	99.00	प्रथम
7377	आरती रविन्द्र जी चौधरी	बोरीवली, मुम्बई	98.50	द्वितीय
504	आरती श्रेणिक कुमार जी भटेवरा	पोलूर, चेन्नई	98.00	तृतीय
7088	सुजाता महेन्द्र कुमार जी सुराणा	रविवारपेठ, नाशिक	97.60	चतुर्थ
6702	रिया कीर्तिकुमार जी सुराणा	हिंगनघाट (महा.)	97.55	पंचम
6040	वंदना प्रशांत जी संचेती	रविवारपेठ, नाशिक	97.50	षष्ठ
7091	सुनिता संदीप लोढ़ा	रविवारपेठ, नाशिक	97.40	सप्तम
		(नवमी कक्षा)		
7607	अंजना सुरेन्द्र जी पोखरणा	बिजयनगर, अजमेर	99.00	प्रथम
6472	गणपत मांगीलाल जी बाघमार	चिंताधरीपेठ, चेन्नई	98.75	द्वितीय
7343	सुमित्रा रविकुमार जी मुथा	रायचूर	98.50	तृतीय
		(दसवीं कक्षा)		
6542	विमला विजयराज जी बैद	कोंडितोप, चेन्नई	99.50	प्रथम
3094	नीलम दिलीपजी लुंकड़	सईदापेठ, चेन्नई	98.50	द्वितीय
10349	अमिता मनोज जी गोलेच्छा	विल्लीपुरम्, चेन्नई	98.00	तृतीय
		(ग्यारहवीं कक्षा)		
7563	पूनम मनीषकुमार जी बोहरा	विल्लीपुरम्, चेन्नई	99.00	प्रथम
7122	इन्द्रा रिखबचंद जी चोरड़िया	भीलवाड़ा (राज.)	98.50	द्वितीय
6430	तिलोत्मा सुरेशचंद जी ओस्तवाल	भड़गाँव (महा.)	98.00	तृतीय
		(बारहवीं कक्षा)		
1158	डिम्पल अभिषेक जी पीपाड़ा	कोंडितोप, चेन्नई	99.75	प्रथम
7119	कन्हैयालाल बालाबक्श जी जैन	भीलवाड़ा (राज.)	99.50	द्वितीय
6629	सुनिता सज्जनराज जी खाबिया	स्वाध्याय भवन, चेन्नई	98.50	तृतीय

इस परीक्षा की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है-

केन्द्र	आवेदन	उपस्थिति	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
184	2341	1579	1400	88.66

अशोक बाफना संयोजक | **आकाश चौपड़ा** सचिव | **धर्मचन्द जैन** रजिस्ट्रार

जिन-जिन केन्द्राधीक्षकों, निरीक्षकों, प्रश्न-पत्र निर्माताओं, उत्तरपुस्तिका जाँचकर्त्ताओं ने तथा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्था-स्वाध्याय संघ, युवक परिषद्, संस्कार केन्द्र आदि के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं ने उक्त परीक्षा के आयोजन में जो महनीय सहयोग/सेवा/मार्गदर्शन आदि

प्रदान किये, उसके लिए शिक्षण बोर्ड हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करता है।

शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 23 जुलाई 2023 को दोपहर 12:30 से 3:30 बजे तक आयोजित की जायेगी। परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- अशोक बाफना, संयोजक-9444270145, आकाश चौपड़ा, सचिव-9413033718, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-9351589694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर- फोन: 0291-2630490, 2636763, व्हाट्सअप नम्बर : 7610953735

-आकाश चौपड़ा, सचिव

लाडनूँ में 'भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में जैन स्वातन्त्र्य-सेनानियों का भूला-बिसरा इतिहास' विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

3 फरवरी, 2023 को लाडनूँ में आचार्य महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म-दर्शन विभाग के तत्त्वावधान तथा कुलपति प्रो. बच्छराजजी दुग्गड़ की अध्यक्षता में 'भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम में जैन स्वतान्त्र्य-सेनानियों का भूला-बिसरा इतिहास' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीयसंगोष्ठी का आयोजन हुआ। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि जैन समाज ने स्वतन्त्रता के लिए बहुत बलिदान दिए हैं, जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। इसलिए आज इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि डॉ आलोकजी त्रिपाठी, कुलपति सरदार वल्लभभाई पटेल पुलिस सुरक्षा एवं आपराधिक न्याय विश्वविद्यालय जोधपुर ने कहा कि इतिहास के पन्नों में दबे जैन स्वतन्त्रता सेनानियों की जानकारी को बाहर लाना देश की बहुत बड़ी सेवा होगी। विशिष्ट अतिथि डॉ ज्योतिजी जैन ने कहा कि जब आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है तब भुला दिए गए आजादी के संघर्ष करने वाले शूरवीरों को भी हमें याद करना चाहिए। 5 फरवरी, 2023 को हुए समापन समारोह के मुख्य अतिथि संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रामसेवकजी दुबे ने कहा कि जैनदर्शन के सिद्धान्तों के अनुसार इस देश का प्रत्येक नागरिक जैन ही है। देश को पराधीनता से मुक्ति दिलवाने के लिए जैन समाज के लोगों ने भी प्राणों की बाजी लगाईं थी, इसलिए उनका इतिहास भी लिखा जाना चाहिए। संगोष्ठी में लगभग 36 विद्वानों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए।

-डॉ. मनीषा जैन

स्कूली शिक्षा में प्राकृत अतिरिक्त विषय के रूप में सम्मिलित

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा 6 फरवरी, 2023 को जारी कार्यालय आदेश के अनुसार कला संकाय के अन्तर्गत पूर्व में सञ्चालित प्राकृत भाषा वैकल्पिक विषय को 2023-24 से अतिरिक्त विषय के रूप में सम्मिलित कर लिया गया है। विद्यार्थी कक्षा 11 एवं 12 में कला संकाय के अन्तर्गत लिये जाने वाले तीन वैकल्पिक विषयों के साथ ही चौथे अतिरिक्त वैकल्पिक विषय के रूप में प्राकृत का अध्ययन कर सकता है। श्री प्राज्ञ जैन स्मारक समिति बिजयनगर द्वारा की गई माँग एवं पत्राचार के बाद बोर्ड सचिव श्री मेघनाजी चौधरी ने उपरोक्त आदेश जारी किया। समिति के अन्तर्गत अंग्रेजी माध्यम में सञ्चालित श्री प्राज्ञ पब्लिक सीनयर सेकण्डरी स्कूल बिजयनगर, अजमेर में विद्यार्थी कक्षा 11 एवं 12 कला संकाय के अन्तर्गत प्राकृत भाषा का अध्ययन कर सकते है। अंग्रेजी साहित्य, अर्थशास्त्र, भूगोल, कम्प्यूटर विज्ञान, इतिहास, संस्कृत, हिन्दी साहित्य, संगीत में से कोई भी तीन विषयों के साथ प्राकृत भाषा के अध्ययन का विकल्प लिया जा सकता है। छात्रों के लिए हॉस्टल सुविधा भी उपलब्ध है। अधिक जानकारी के लिये दूरभाष 8529251177 पर जानकारी ली जा सकती है।

-डॉ. नवलसिंह जैन, निदेशक श्री प्राज्ञ जैन स्मारक समिति, बिजयनगर

विनम्र अनुरोध

राजस्थान में अनेक जैन विद्यालय हैं। उन सबकी प्रबन्धक समितियों से अनुरोध है कि वे भी अपने विद्यालयों में प्राकृत विषय के अध्ययन एवं अध्यापन की सुविधा प्रदान कर जैन आगमों की भाषा प्राकृत को प्रोत्साहित करने हेतु अपना पुरुषार्थ जगाएँ। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का आदेश प्राकृत के अध्ययन हेतु द्वार खोल रहा है। जैन विद्यालयों में प्रारम्भ होने के पश्चात् इसे सरकारी विद्यालयों में भी तथा प्रमुख तीन वैकल्पिक विषयों में शामिल करने के लिए भी प्रयत्न किया जा सकता है।

-डॉ. धर्मचन्द जैन, सदस्य, प्राकृत विकास बोर्ड, भारत सरकार

वर्द्धमान हॉस्पिटल की पावटा में नई शाखा का शुभारम्भ

दूरसञ्चार विभाग के मुख्य कार्यालय के पास पावटा बी रोड़ क्षेत्र में आमजन को सस्ती एवं विश्वसनीय चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएँ सुलभ कराने के लिए वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी (वर्द्धमान हॉस्पिटल) द्वारा **जस्टिस श्री कृष्णमल लोढ़ा उगमकँवर लोढ़ा चेरिटेबल हॉस्पिटल का भव्य शुभारम्भ** श्री आर. एस. मेहता साहब के कर-कमलों से 18 फरवरी, 2023 को हुआ। डॉ. सुरेन्द्रमलजी लोढ़ा एवं श्री राजेन्द्रमलजी लोढ़ा (मुख्य न्यायाधिपति, भारत) ने अपने माता-पिता के नाम से प्रारम्भ किये गए इस हॉस्पिटल के माध्यम से आमजन को विश्वसनीय चिकित्सा सुविधाएँ नियमित रूप से मिलेंगी, ऐसी शुभकामनाएँ प्रदान की। सोसायटी के अध्यक्ष श्री पूरणराजजी अबानी ने बताया कि वर्द्धमान हॉस्पिटल की कार्यकारिणी में 15 वर्षों तक न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमलजी लोढ़ा ने अध्यक्ष के रूप में बखूबी दायित्व निर्वहन किया। यहाँ सामान्य तौर पर आवश्यक सभी चिकित्सकों की आउटडोर सेवाएँ, ई.सी.जी., एक्स-रे, लेबोरेट्री जाँच एवं फार्मेसी सुविधाएँ अत्यन्त कम शुल्क पर उपलब्ध कराई जायेंगी।

-नवरतन डागा, सचिव

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई-भगवान महावीर फाउण्डेशन द्वारा सामाजिक क्षेत्र में मानवीय सेवा के उत्कृष्ट कार्य हेतु 27वें महावीर पुरस्कार के नामांकन आमन्त्रित किये जा रहे है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत (1) अहिंसा और शाकाहार के प्रचार, (2) शिक्षा, (3) चिकित्सा और (4) सामुदायिक और सामाजिक सेवा के क्षेत्र को शामिल किया गया है। आवेदन-पत्र वेबसाइट www.bmfawards.org से डाउनलोड किये जा सकते हैं। नामांकन प्राप्त करने की अन्तिम तिथि 31 जुलाई, 2023 है। अन्तिम तिथि के बाद कोई भी नामांकन स्वीकार नहीं किया जाएगा।

-एस. प्रसन्नचन्द जैन, मैनेजिंग ट्रस्टी

चेन्नई-मद्रास विश्वविद्यालय के जैन विभाग की अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. प्रियदर्शनाजी जैन ने वेटिकन सिटी, इटली में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय महिला अधिवेशन में भाग लेकर पूरे भारतवर्ष से जैनधर्म का प्रतिनिधित्व किया। इसमें 12 धर्मों के 15 से अधिक देशों से 30 महिलाओं ने प्रतिनिधित्व किया। अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, जापान, लेबनॉन, अर्जेन्टीना, केन्या, श्रीलंका, हांगकांग, ताइवान, मलावी आदि कई देशों से अनेक प्रभावकारी महिलाओं ने विश्व शान्ति और सौहार्द के अपने-अपने अनुभवों की प्रस्तुति की, जिसका वेटिकन के चैनल से 25 से 27 जनवरी विश्व भर में सीधा प्रसारण किया गया और सराहा गया।

डॉ. जैन ने अपने वक्तव्य में तीर्थंकरों के द्वारा स्थापित चतुर्विध संघ में जो नारी को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है,

चर्चा करते हुए पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कृति की संवाहक जैन सन्नारी महासती के रूप में, श्राविका के रूप में कैसे अहिंसा, संयम और तप की अक्षुण्ण धारा को अपने जीवन में सञ्जोकर औरों को भी प्रभावित करके समाज में शान्ति और सौहार्द फैलाती है, इन सबकी चर्चा करके सभा को जैनधर्म के सिद्धान्तों से अवगत कराया। एक आदर्श जैन नारी कैसे अपने परिवार, समाज, देश और पर्यावरण का संरक्षण करती है, इसका सुन्दर चित्रण डॉ. जैन ने अपने 12 मिनट के वक्तव्य में अत्यन्त प्रभावकारी रूप में किया। समस्त महिलाओं ने पोप फ्रांसिस और वेटिकन के अन्य गणमान्य जनों से भी संवेदनशील विषयों पर चर्चा की और मानवता के खातिर काम करने का संकल्प भी लिया। वर्तमान में व्हाट्स एप्प के माध्यम से यह ग्रुप सक्रिय है और देश-विदेश में मानवीय मूल्यों के संवर्धन हेतु कार्यरत है। यह जानकारी हमें मद्रास विश्वविद्यालय के जैन विभाग की विज्ञप्ति से प्राप्त हुई है।

चेन्नई-रत्नसंघ के चतुर्थ आचार्य परम प्रतापी पूज्यश्री कजोडीमलजी जी म.सा. के 192वें दीक्षा दिवस को श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में 28 जनवरी, 2023 को जप-तप-त्यागपूर्वक स्वाध्याय भवन, साहूकारपेट में सामूहिक सामायिक-स्वाध्याय के संग गुणगाण पूर्वक मनाया गया।

चेन्नई-तमिलनाडु की मारवाड़ी जैन अरुणा विजय जिसने मास्टर शेफ इण्डिया में टॉप टेन में आने के बाद उस व्यञ्जन को बनाने से स्पष्ट मना कर दिया, जिसमें अण्डे का प्रयोग आवश्यक था। 25 लाख की आय के निकट तक पहुँचने वाली अरुणा विजय का यह क़दम निश्चित ही पूरे जैन समाज को गौरवान्वित करता है। यह सभी शाकाहारी समाजों के लिए गर्व की बात है।

नई दिल्ली-संघशास्ता श्रद्धेय श्री सुदर्शनलालजी म.सा.के ज्येष्ठ सुशिष्य गणाधीश तपस्वीराज श्री प्रकाशचन्दजी म.सा., बहुश्रुत पण्डित रत्न श्री जयमुनिजी म.सा. तथा संघ संचालक मनोहर व्याख्यानी श्री श्री नरेशचंदजी म.सा. आदि ठाणा-36 एवं संघ विभूति श्री शिक्षाजी म.सा., संघ प्रमुखा श्री संयम प्रभा 'कमल' जी म.सा. आदि ठाणा-28 के सान्निध्य में सी.बी.डी. मैदान में वैरागी नितिनजी जैन तथा वैरागिन सुविधि जी जैन की जैन भागवती दीक्षा संपन्न हुई। *-अशोक जैन 'जयचंदा'*

नई दिल्ली- जैनों की प्रतिनिधि संस्था जैन महासभा, दिल्ली के चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें सर्वसम्मति से श्री दिनेशजी दोशी को अध्यक्ष चुना गया। वे मुनि श्री भव्य विजय के सांसारिक भाई हैं। महासचिव के पद पर प्रो. रतनजी जैन एवं कोषाध्यक्ष के पद पर श्री विनोद जी बागरेचा का चयन हुआ। *- प्रो. रतन जैन, महासचिव*

मुम्बई-श्री जैन सेवा संघ, मुम्बई द्वारा जैन रत्न समारोह का आयोजन 26 नवम्बर, 2022 को वीर सावरकर हॉल, दादर में हुआ। यह संस्था प्रतिवर्ष समाज एवं राष्ट्र को बहुमूल्य योगदान देने वाली विभूतियों का सम्मान करती है। इस वर्ष डॉ. अजितजी जैन, नई दिल्ली, को कोरोना काल में फ्रंटलाइन वारियर के रूप में सेवा हेतु, श्रीमती सुशीलाजी बोहरा, जोधपुर को लगभग 42 वर्षों से अन्ध, मूक-बधिर एवं मानसिक विकलांग विद्यार्थियों की सहायता हेतु, श्री गणपतराजजी चौधरी, अहमदाबाद को मानवता के कार्यों हेतु और श्री पुष्पराजजी जैन, भिवंडी को अन्ध, मन्दबुद्धि और मूक बधिर बच्चों के विद्यालय को विकसित करने में सहयोग देने हेतु अभिनन्दन-पत्र, शाल और स्मृति चिह्न प्रदान कर 'जैन सेवा रत्न' से विभूषित किया गया। संस्था के महामन्त्री श्री उगमराजजी लूणावत ने सभी का धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया। *-उगमराज लूणावत*

खीचन फलोदी (जोधपुर)- विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व निर्माण में सहायक शिक्षण प्रशिक्षण के साथ-साथ विद्या कला-कौशल के लिए लोंकाशाह गुरुकुल खीचन पिछले 6 वर्षोंसे कार्यरत है, और इसी क्रम में 7 से 10 वर्ष

तक की आयु के बच्चों के लिए आगामी 22 मार्च, से 2 अप्रेल,2023 तक विद्या, कला, संगीत एवं शारीरिक विकास युक्त शिविर का आयोजन 'श्री वीर लोंकाशाह संस्कृत ज्ञानपीठ गुरुकुल खीचन फलोदी जिला जोधपुर' में होने जा रहा है। प्रथम 50 विद्यार्थियों हेतु पंजीयन 15 फरवरी, 2023 से प्रारम्भ है। गुरुकुलम् में अध्यन करने के इच्छुक विद्यार्थियों को शिविर में पढ़ाए जाने वाले विषयों का विवरण इस प्रकार हैं–1. संस्कृत संभाषण (संस्कृत बोलना सीखें मात्र 21 दिन में) 2. वैदिक गणित, 3. आयुर्वेद एवं चिकित्सा, 4. सुभाषितं, 5. नैतिक शिक्षा, 6. इतिहास, 7. अंग्रेजी। कलाएँ–1. चित्रकला, 2. हथकरघा, 3. हस्त लेखन। संगीत–1. हारमोनियम, 2. वेणू वादन, 3. तबला। शारीरिक खेल–1. योग, 2. रज्जू मल्लस्तम्भ, 3. मल्लस्तम्भ, 4. धनुर्विद्या। विशेष–1. शताधिक भारतीय खेल एवं 2. परा मेधा (Mid Brain) सम्पर्क सूत्र : +9183060 37955

बधाई

नई दिल्ली–भारत सरकार के इंस्पायर फेलो एवं अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त स्वास्थ्यनीति विशेषज्ञ डॉ. महावीरजी

गोलेच्छा को इस वर्ष स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय की ओर से जारी वैज्ञानिकों की सूची में शीर्ष दो प्रतिशत में शामिल किया गया है। अमेरिका का स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय हर साल दुनिया भर के शीर्ष दो प्रतिशत शोधकर्ताओं के लिए उनके शोधप्रकाशनों के आधार पर डेटा जारी करता है। ये डेटा प्रतिष्ठित एल्सेवियर प्रकाशक की ओर से प्रकाशित किए जाते हैं। लगातार दूसरे वर्ष डॉ. गोलेच्छा को इस वैश्विक सूची में स्थान मिला है। नियम के अनुसार सभी शोधकर्ताओं को 22 वैज्ञानिक क्षेत्रों और 176 उप–क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है। डॉ. गोलेच्छा को पब्लिक हेल्थ, रिसर्च के क्षेत्र में सम्मिलित किया गया, इस क्षेत्र में उन्होंने 75 से भी ज्यादा अनुसन्धान–पत्र विश्व की प्रसिद्ध अनुसन्धान पत्रिकाओं में प्रकाशित किये, जिनमें लांसेट, ब्रिटिश मेडिकल जर्नल, नेचर, ग्लोबल हेल्थ, अर्बन हेल्थ, ई–क्लीनिकल मेडिसिन, सोशल साइंस मेडिसिन प्रमुख हैं। डॉ.गोलेच्छा इन सभी पत्रिकाओं में अनुसन्धान पत्र प्रकाशित करने वाले सबसे युवा भारतीय हैं।

नई दिल्ली– 17 फरवरी, 2023 को आयोजित नेशनल मीडिया फ़ाउंडेशन के 45वें स्थापना दिवस पर डॉ. अरिहन्त

कुमार जैन (मुम्बई) को पत्रकारिता के क्षेत्र में 'प्राकृत टाइम्स इंटरनेशनल न्यूज़लेटर' के माध्यम से विश्व भर में प्राकृत भाषा एवं साहित्य के प्रचार–प्रसार के लिए 'नेशनल गौरव अवार्ड' से सम्मानित किया गया । डॉ. अरिहन्त ने श्रीक्षेत्र श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) के ऐतिहासक एवं पुरातात्विक महत्त्व तथा प्राकृत भाषा में उल्लिखित शिलालेखों को दर्शाते हुए 'प्राकृत भाषा – एक प्राचीन समृद्ध परंपरा' नामक एक महत्त्वपूर्ण रिसर्च डॉक्यूमेंट्री फिल्म का भी निर्माण किया है, जिसे राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित भी किया जा चुका है। वर्तमान में आप जैन अध्ययन केन्द्र, के. जे. सोमैया इंस्टीट्यूट को सोमैया विद्याविहार विश्वविद्यालय, मुम्बई में असिस्टेण्ट प्रोफेसर हैं ।

नई दिल्ली– 17 फरवरी, 2023 को गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान में आयोजित नेशनल मीडिया फाउण्डेशन के 45वें स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि श्री प्रियरंजन दास त्रिवेदी, समारोह गौरव डॉ. मणीन्द्र जैन, सम्मानित अतिथि श्री नरेन्द्र भण्डारी, श्री अरविन्द कुमार सिंह एवं नेशनल मीडिया फाउण्डेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जैन द्वारा डॉ. इन्दु जैन को विश्व शान्ति की स्थापना के उद्देश्य से अहिंसा, अनेकान्त, सद्भाव, करुणा, मैत्री, शाकाहार के क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु नेशनल गौरव अवार्ड से सम्मानित किया गया। आपने कई राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय सेमिनारों में आलेख वाचन, मन्त्रालय एवं प्रतिष्ठित संस्थाओं के कार्यक्रमों का सञ्चालन तथा संयोजन किया है। आप प्रतिष्ठित संस्थाओं में सम्माननीय पद पर रहकर निरन्तर समाज सेवा और सकारात्मक सोच के साथ समाज को

आगे बढ़ने की प्रेरणा देने के कार्य में संलग्न हैं।

अलीगढ़-रामपुरा (टोंक)- सुश्री वागीशा सुपुत्री श्रीमती बबीताजी-श्री विनोद कुमारजी जैन ने किर्गिस्तान के

बिस्केक शहर के मेडिकल कॉलेज से एम.बी.बी.एस. पूर्ण करने के पश्चात् भारतीय चिकित्सा परिषद् (MCI) द्वारा आयोजित FMGE परीक्षा 2023 में प्रथम प्रयास में सफलता प्राप्त की है। वह धर्मनिष्ठ है।

सवाई माधोपुर- श्री तरुण कुमारजी सुपुत्र श्री जय कुमारजी जैन ने भारतीय चिकित्सा परिषद् (एम.सी.आई.) की

ओर से आयोजित फोरेन मेडिकल ग्रेजुएट्स एग्जामिनेशन की 2023 की वरीयता सूची में प्रथम प्रयास में सफलता प्राप्त की है। गौरतलब है कि विदेश से चिकित्सा की पढ़ाई करने वाले छात्रों को भारतीय चिकित्सा परिषद् की परीक्षा में उत्तीर्ण होना आवश्यक होता है। *-विनोद जैन*

जोधपुर-डॉ. हर्षवर्धनजी सुपुत्र श्रीमती श्रुतिजी-डॉ. विपिनजी सुपौत्र श्रीमती पुष्पाजी-श्री गणपतराजजी सिंघवी दोहिता श्रीमती सुशीलाजी-स्व. श्री किशोररूपचन्दजी भण्डारी ने MBBS/MD की डिग्री U.V. Gullas college of medicine PHILIPPINES से प्राप्त कर भारत में FMGE परीक्षा को प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण किया।

श्रद्धाञ्जलि

श्रद्धेया महासती श्री प्रियदर्शनाजी म.सा. का देवलोकगमन

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी तथा साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. की सुशिष्या तपस्विनी श्रद्धेया महासती श्री प्रियदर्शनाजी म.सा. का 28 फरवरी, 2023 को समाधिभावों के साथ रात्रि 8.15 बजे जयपुर के राधानिकुञ्ज के निकट स्थित राधाविला में देवलोकगमन हो गया। 1 मार्च, 2023 को 10.00 बजे उनकी पार्थिव देह का अन्तिम संस्कार किया गया। आपने माघ शुक्ला तृतीया, विक्रम सम्वत् 2072 दिनांक 11 फरवरी, 2016 को पूज्य आचार्यप्रवर के श्रीमुख से दूदू, जिला-जयपुर में जैन भागवती दीक्षा अङ्गीकार की थी। आप स्व. श्री दुलेहराजजी सिंघवी (रत्नसंघ में दीक्षित श्रद्धेय श्री दयामुनिजी म.सा.) एवं श्रीमती सौभाग्यवतीजी सिंघवी की संस्कारशीला सुपुत्री थी। आपमें प्रारम्भ से ही वैराग्यभाव रहा, किन्तु 71 वर्ष की आयु में प्रव्रज्या अङ्गीकार करने का योग बना। आपके वीर पतिदेव श्री भीकमचन्दजी मेहता तथा तीनों सुपुत्रों (यशवन्तजी, मनोजजी एवं कमलेशजी) सहित समस्त परिवार ने आज्ञा प्रदान कर संयम-जीवन स्वीकार करने का अवसर प्रदान किया। आप तपस्विनी महासती होने के साथ अनेक थोकड़ों की जानकार थीं। स्वभाव से सरल एवं शीतल थी तथा वृद्धावस्था में भी अपने समस्त कार्य स्वयं पूर्ण कर लेती थी। उन्होंने 7 वर्षों की संयम-पर्याय में परीषहों पर विजय प्राप्त कर कर्मनिर्जरा करते हुए जीवन सफल बनाया। 1 मार्च को सैकड़ों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में उन्हें राधाविला से जय-जयकार के साथ मोक्षधाम, गोल्यावास ले जाया गया तथा परिवारजनों, स्थानीय संघाध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के मन्त्री-श्री विमलचन्दजी डागा, संरक्षक श्री सुमेरसिंहजी बोथरा सहित विभिन्न पदाधिकारियों की उपस्थिति में पार्थिव देह का

अन्तिम संस्कार किया गया। महासती मण्डल श्री प्रकाशचन्दजी जैन, श्यामपुरा वालों के आवास पर विराज रहा था।

जोधपुर-संघ-सेवी, धर्मनिष्ठ सुश्राविका वीरमाता श्रीमती बिदामकँवरजी धर्मसहायिका श्री भँवरलालजी सुपुत्रवधू

स्व. श्री रावतमलजी चौपड़ा (पालासनी वाले) का 13 फरवरी, 2023 को देहावसान हो गया। आपकी सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थीं। आप नियमित रूप से गुरु-भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने में अग्रणी थीं तथा नियमित रूप से 4 से 5 सामायिक की साधना करती थी। आपने सदैव तन-मन-धन से संघ की सेवा में योगदान दिया है। आप रत्नसंघीया महासती श्री सुश्रीप्रभाजी एवं महासती श्री शारदाजी म. सा. की सांसारिक माताजी थीं। आपके सभी भतीजे और सुपौत्र सहित सम्पूर्ण परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय होने के साथ सन्त-सतीवृन्द की सेवा एवं स्वधर्मी वात्सल्य में सदैव तत्पर हैं।

- धनपत सेठिया, महामन्त्री

जोधपुर-अनन्य गुरुभक्त धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मानकँवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री नेमीचन्दजी नाहटा का 10

फरवरी, 2023 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आप सभी सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहती थीं। नाहटा परिवार एवं आपका पीहर पक्ष सेठिया परिवार समाज-सेवा तथा संघ द्वारा सञ्चालित सभी गतिविधियों में निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। पीहर पक्ष से आपके भ्राता श्री धनपत जी सेठिया अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ में महामन्त्री पद का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। आप परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की सांसारिक बहिन थीं। उपाध्याय श्री के चातुर्मास काल में आप विशेष धर्माराधन करके धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त करती थीं।

-प्रकाश सालेचा, संयुक्त महामन्त्री

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री हीराचन्दजी कांकरिया का 11 फरवरी, 2023 को देहावसान हो गया। आप सरल

स्वभावी होने के साथ धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक थे एवं सन्त-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आप रत्नसंघीय सन्त-सतीवृन्द के जोधपुर चातुर्मास में तन-मन-धन से परिवार सहित अपूर्व धर्मध्यान का लाभ प्राप्त करते थे तथा दया, पौषध और सन्त-सतीवृन्द की सेवा में हमेशा अग्रणी रहते थे। आप रत्नसंघीय विदुषी व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवतीजी म. सा. के सांसारिक भाई थे। आप अपने पीछे धर्मसहायिका, दो पुत्र, एक पुत्री सहित भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

-धीरज डोसी

खेरली (अलवर)-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शारदाजी धर्मसहायिका श्री सुरेशचन्दजी जैन (सहाड़ी वाले) का 30

जनवरी, 2023 को 72 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आपका जीवन त्याग-प्रत्याख्यान से युक्त था एवं सन्त-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहती थीं। आप सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत थीं एवं नियमित रूप से गुरु-भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करती थीं। आपने वर्षीतप, सिद्धि तप, अठाई, पचौला, तेला आदि तपस्याएँ की तथा सम्पूर्ण जीवन रात्रिभोजन-त्याग रखा एवं नियमित रूप से प्रतिदिन सामायिक किया करती थीं। आप दिवंगत रत्नसंघीय महासती श्री शशिप्रभाजी म.सा. की सांसारिक चाचीजी थीं। आपका परिवार खेरली पधारने वाले सभी सन्त-सतियों की सेवा, दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ लेने में अग्रणी है और संघ द्वारा सञ्चालित गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों से निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। आपके धर्मसहायक श्री सुरेशचन्दजी जैन संघ एवं संघीय संस्थाओं की गतिविधियों में तथा श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ में स्वाध्यायी के रूप में और

पल्लीवाल क्षेत्र के संयोजक के रूप में, संस्कार केंद्र के क्षेत्रीय प्रधान के रूप में महत्त्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। आप सन् 2022 में विशिष्ट स्वाध्यायी सेवा-सम्मान से सम्मानित हैं। आपके बड़े सुपुत्र श्री मनीषजी जैन आयुर्वेद चिकित्सक हैं तथा श्री जैन रत्न युवक परिषद् के पल्लीवाल क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रधान रह चुके हैं एवं संघ द्वारा 2019 में संघ-सेवा सम्मान से सम्मानित हैं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

इंदौर- अनन्य गुरुभक्त, धर्मनिष्ठ स्वाध्यायी सुश्रावक श्री हरकचन्दजी जैन सुपुत्र श्री फूलचन्दजी जैन (श्यामपुरा

वाले) का 14 फरवरी, 2023 को 86 वर्ष की वय में सप्तदिवसीय चौहिवार संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आप स्वाध्यायप्रेमी एवं गुरुभक्त श्रावक थे। आपकी सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति असीम श्रद्धा-भक्ति थी। आप प्रतिदिन महावीर भवन जाकर 5-6 सामायिक, प्रतिक्रमण एवं स्वाध्याय करते थे। आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा सञ्चालित गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों से निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। अन्त समय मेंआपने पूरी चेतना के साथ जिस समता भाव से मृत्यु को महोत्सव बनाया वह दृश्य देखो योग्य था। आपके लघु भ्राता श्री महावीरजी कोटा संघ-सेवा में तथा श्री प्रकाशचन्दजी, श्री धर्मचन्दजी जैन सन्त-सतीवृन्द के अध्ययन-अध्यापन में सहयोग प्रदान करने के साथ श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ में वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। आपके सुपुत्र श्री कन्हैयालालजी एवं सुपौत्र सी. ए. नीरजजी एवं सी.ए. निर्मलजी ने आपकी खूब सेवा की। आपकी इच्छानुसार नेत्रदान भी किया गया। आप पोरवाल संघ, इन्दौर के अध्यक्ष भी रहे। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

अजमेर- धर्मनिष्ठ बालरत्न श्री भव्यजी सुपुत्र श्री महावीरजी चंगेरिया का 10 फरवरी, 2023 को 11 वर्ष की

अल्पायु में संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। माता-पिता एवं परिवारजनों से प्राप्त संस्कारों के फलस्वरूप तथा वीर परिवार में जन्म लेने से आप धर्म-ध्यान हेतु सदैव लालायित रहते थे। असाध्य बीमारी से ग्रसित होने के बावजूद भी आपने आर्त्तध्यान नहीं करते हुए जीवन के अन्तिम समय तक परिवारजनों को भी आर्त्तध्यान नहीं करने का निवेदन किया। आप रत्नसंघीय व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजी म. सा. के सांसारिक भाई के सुपौत्र थे। आपके दादाजी श्री नौरतनमलजी चंगेरिया अजमेर में शेखेकाल विराजने वाले सन्त-सतीवृन्द के पधारने पर परिवार सहित अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान करते थे। सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा संचालित गतिविधियों और प्रवृत्तियों से निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

जबलपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती संजूशाजी धर्मपत्नी श्री प्रकाशचन्दजी बाघमार (मूलनिवासी कोसाना) का 16

फरवरी, 2023 को देहावसान हो गया। सन्त-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली चिंतनशील श्राविका थीं। साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा तथा व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा के जबलपुर चातुर्मास में आपने धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। बाघमार परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य और आतिथ्य-सत्कार में सदैव अग्रणी रहा है। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती चन्द्रादेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री ज्ञानचन्दजी पुत्रवधू स्व.श्री अनूपचन्दजी

बम्ब का 11 फरवरी, 2023 को 80 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आपकी सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपका जीवन तप-त्याग, व्रत-प्रत्याख्यान से ओतप्रोत था। आपने अपने जीवन काल में सिद्धि तप, 24 तीर्थंकर तप, आयम्बिल ओली तप किए, साथ ही आप कई वर्षों से निरन्तर एकाशन तप के साथ संवर पौषध करने में अग्रणी थीं। प्रवचन में जाना, प्रतिदिन 5 सामायिक, प्रतिक्रमण एवं नवकारसी-पौरसी करना आपकी दिनचर्या का हिस्सा था। बम्ब परिवार संघ-

सेवा, समाज सेवा और स्वधर्मी वात्सल्य में सदैव समर्पित रहता है। आपके धर्मसहायक श्री ज्ञानचन्दजी का सम्पूर्ण जीवन सादगीमय और सेवा कार्यों में समर्पित रहा। उन्होंने मानव मात्र के प्रति करुणाभाव रखते हुए लगभग 40 वर्षों तक अमर जैन अस्पताल में नि:स्वार्थ भाव से सेवाएँ दीं एवं जयपुर नगर-निगम में पार्षद पद पर रहते हुए जन-कल्याण में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। आप अपने पीछे दो सुपुत्र श्री प्रकाशजी, श्री सुरेशजी एवं दो पुत्रियाँ श्रीमती पुष्पाजी नाहर, श्रीमती सुशीलाजी हीरावत सहित भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। *-अनिल कुमार बम्ब*

हैदराबाद-अनन्य गुरुभक्त धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री संदीपजी छाजेड़ का 27 जनवरी, 2023 को देहावसान हो गया।

आपकी सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। हैदराबाद में संघ की गतिविधियों में आपने अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया। आपके पूज्य पिताजी स्व. श्री किशोरचंदजी छाजेड़ ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ आन्ध्रप्रदेश सम्भाग के क्षेत्रीय प्रधान एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, हैदराबाद के मन्त्री पद का दायित्व बखूबी निर्वहन किया था। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में छाजेड़ परिवार सदैव तत्पर रहा है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

बजरिया-स.मा.-धर्मनिष्ठ, संघनिष्ठ युवा सुश्रावक श्री लोकेश जी जैन सुपुत्र श्री उम्मेदचन्दजी जैन एवं सुपौत्र स्व.

श्री रामदयालजी जैन 'सर्राफ' का 3 फरवरी, 2023 को चेन्नई में देहावसान हो गया। आपका जीवन सरलता, सेवाभावना, विनम्रता आदि गुणों से ओतप्रोत था तथा प्रारम्भ से ही संघ सेवा के लिए समर्पित रहा। आपने आचार्य हस्ती द्वारा प्रेरित सामायिक-स्वाध्याय को अपने जीवन में आत्मसात् किया था। आपके हृदय का ट्राँस्प्लाण्ट हुआ, किन्तु उसके 17 दिन पश्चात् अस्पताल में ब्रेन स्ट्रोक होने से देहावसान हो गया। आपका धर्मनिष्ठ, संघनिष्ठ परिवार कोटा और सवाई माधोपुर में संघ-सेवा में महनीय सहयोग प्रदान कर रहा है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री कुशालसिंहजी गलुण्डिया (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.) का 28 जनवरी, 2023 को

स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल और सादगी से परिपूर्ण था। आप देव-गुरु-धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। आप सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं। आपकी रचनाएँ जिनवाणी पत्रिका में प्रकाशित हुई तथा राष्ट्रीय संगोष्ठी में भी भाग लिया।

-श्रीमती विजया मल्हारा, जलगाँव

सवाई माधोपुर-वरिष्ठ स्वाध्यायी, धर्मनिष्ठ सुश्रावक अध्यापक श्री रामस्वरूपजी जैन (कुंडेरा वाले) का 1

फरवरी, 2023 को देवलोकगमन हो गया। आपने जोधपुर स्वाध्याय-संघ के निर्देशानुसार कई वर्षों तक पर्युषण पर्व में सेवा दी। आप सरलता, मधुरता, उदार स्वभाव के धनी और अतिथि सेवा में अग्रणी रहने वाले गुणवान श्रावक थे। सेवानिवृत्ति के बाद से अधिक से अधिक समय सामायिक-स्वाध्याय-तप-त्याग में व्यतीत करने के साथ आप सन्त-सतियों की सेवा में अग्रणी रहते थे। आपके सुपुत्र श्री पदमप्रभुजी, श्री वर्द्धमानजी धार्मिक प्रवृत्ति के श्रावक हैं।

-पदमप्रभु जैन

जयपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सुशीलाजी धर्मसहायिका श्री सुशीलजी बोहरा पुत्रवधू स्व. श्री मदनलालजी

बोहरा का 13 फरवरी, 2023 को 63 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी, मिलनसार, हंसमुख एवं धार्मिक प्रवृत्ति की श्राविका थीं तथा लालकोठी क्षेत्र में पधारने वाले सभी सन्त-सतियों की सेवा में अग्रणी रहती थीं। विगत एक वर्ष से स्वास्थ्य में प्रतिकूलता होने पर भी आप समभाव में रमण करती रहीं। आपका जीवन निष्कलंक एवं निष्कपट रहा। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ कर गई हैं।

जयपुर-डॉ. संजीवकुमारजी सुपुत्र श्री महेंद्रजी गोधा का 17 फरवरी, 2023 को स्वर्गवास हो गया। वे जन्म से ही

जिनशासन की छत्रछाया में पले और बड़े हुए। डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रिय शिष्यों में से एक थे तथा गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के उपदेशों की प्रभावना में देश-विदेश में संलग्न रहे। आप वीतरागी निराकुल मार्ग की प्रेरणा देने के कारण जैन रत्न, अध्यात्म चक्रवर्ती आदि अनेक उपाधियों से विभूषित थे। वे जैनपथ, वीतराग विज्ञान के सम्पादक, सत्पथ फाउण्डेशन के ट्रस्टी, अनेक संस्थाओं के निर्देशक तथा शिविर विधान पंचकल्याण के मार्गदर्शक थे। आप सत्पथ के माध्यम से हजारों साधर्मियों को सत्पथ पर लगाने वाले थे।

-प्रो. प्रेमसुमन जैन

मल्लेश्वरम्-बेंगलूरू - धर्मनिष्ठ सुश्रावक वरिष्ठ धर्म अध्यापक श्री प्रकाशचन्दजी पटवा (कंजार्डा-नीमच निवासी)

का 15 जनवरी, 2023 को 75 वर्ष की वय में संथारा सहित देवलोकगमन हो गया। आप स्वाध्याय-सेवा शिखर सम्मान और गुरु श्रेष्ठ पदवी अलंकरण से अलंकृत थे। आप मास्टरजी के नाम से प्रख्यात थे। आप संघ-समाज की गतिविधियों में सदैव तत्पर रहते थे।

-गौतमचंद ओस्तवाल, बेंगलूरू

सवाईमाधोपुर-युवा सुश्रावक श्री गजेन्द्रजी (गज्जु) सुपुत्र श्री महावीर प्रसादजी जैन (खटुपुरा वाले) का 15

फरवरी, 2023 को 42 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आप दिलखुश मिजाज, सरलमना, सेवा-भावना आदि गुणों से सम्पन्न थे। आपकी मिलनसारिता से आप सम्पर्क में आने वाले लोगों को प्रभावित कर लेते थे। आपका जीवन सहज, सरल और सादगी से परिपूर्ण था।

-त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर

उपर्युक्त दिवगंत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी सम्बद्ध संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

अभिनन्दनीय पहल

श्री धनसुरेश जैन

शान्ति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ के जिला समन्वयक श्री विनोद कुमार जी जैन, सिंगोर वालों के सुपुत्र चि. मनीषजी जैन का शुभ विवाह 6 फरवरी को सौ.कां. मीनूजी सुपुत्री श्री गणपत लालजी जैन चौरू के संग सवाईमाधोपुर में सम्पन्न हुआ। शुभ विवाह से पूर्व चि. मनीषजी जैन ने सामायिक की साधना आराधना की। दिन में पाणिग्रहण संस्कार हुआ। स्नेहभोज में जमीकन्द का उपयोग नहीं किया गया। राहुल गाँधी की भारत जोड़ो यात्रा में भी मनीष जैन सक्रिय रूप से सहभागी रहे थे। एन.एस.यू.आई. के पूर्व जिला संयोजक रहे हैं। वर्तमान में रणथम्भौर टाइगर रिजर्व, सवाई माधोपुर के सदस्य हैं। युवारत्न मनीष जैन द्वारा सवाईमाधोपुर से जयपुर तक विहार सेवा का अनूठा लाभ लिया गया था। इससे पूर्व 12 जनवरी को श्री लालचन्दजी जैन सर्राफ के सुपुत्र चि. अतुलजी जैन का शुभविवाह श्री अशोक कुमारजी जैन रोहिल्या एण्डवा वाले की सुपुत्री सौ.कां. स्वीटीजी जैन के संग सम्पन्न हुआ। जिसमें भी मण्डप, भात, पाणिग्रहण संस्कार आदि कार्यक्रम दिन में ही सम्पन्न हुए। दोनों धार्मिक परिवारों की अच्छी पहल अभिनन्दनीय है।

-मण्डी रोड़, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

❋ आज जैन समाज में दिखावा इतना बढ़ गया है कि देखकर विचार आता है। इससे जैनधर्म अपना नाम ऊँचा नहीं कर सकता।

-आचार्यश्री हस्ती

10 मार्च 2023
जिनवाणी 90
ISSN 2249-2011

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

16383 श्री अशोकजी गेलड़ा, चेन्नई (तमिलनाडु)
16384 श्री निकिलजी जैन, लुधियाना (पंजाब)
16385 श्री रूपेश कुमारजी कर्णावट, ऊटी (तमिलनाडु)
16386 श्री जितेन्द्र नरेशचन्दजी बोरा, अकोला (महाराष्ट्र)
16387 श्री आशीष कुमारजी जैन, हिण्डौनसिटी (राजस्थान)
16388 श्री मनीष कुमारजी सांखला, बैंगलोर (कर्नाटक)
16389 सौ. साधना रमेशजी शाह, खार वेस्ट, मुम्बई (महा.)
16390 श्री विनोदजी बोरा, जालना (महाराष्ट्र)
16391 श्री अशोक कुमारजी जैन, पानीपत (हरियाणा)

जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार

21000/-श्री अमितजी, अभिजीतजी, समकितजी मेहता, बेंगलूरू, पूज्य वीरपति श्री धनरूपचन्दजी मेहता के स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होने के उपलक्ष्य में।

11000/-श्री कन्हैयालालजी, नीरजजी सी.ए., निर्मलजी जैन सी.ए., इन्दौर, पूज्य पिताजी श्री हरकचन्दजी जैन के चौविहार संथारे के साथ स्वर्गगमन की पुण्यस्मृति पर।

11000/-श्री प्रकाशजी, सुरेशजी बम्ब, अन्धेरी ईस्ट, मुम्बई, पूज्या माताजी श्रीमती चन्द्रादेवीजी बम्ब धर्मसहायिका स्व. श्री ज्ञानचन्दजी बम्ब का 11 फरवरी, 2023 को स्वर्गगमन होने की पुण्यस्मृति में।

7000/- श्रीमती कमलाबाईजी सिंघवी, भीलवाड़ा, श्री माणकचन्दजी सिंघवी की पुण्यस्मृति में।

2500/- श्री जिनेशकुमारजी, नरेशकुमारजी, मनोजकुमारजी, अनिलकुमारजी जैन (बगावदा वाले), पूज्य पिताजी श्री मूलचन्दजी-मातुश्री श्रीमती चन्द्रकान्ताजी जैन की गोल्डन जुबिली वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।

2100/- श्रीमती विजयजी मेहता, जोधपुर, अपने पौत्र के स्वास्थ्य लाभ एवं धर्मसहायक तथा पुत्री के जन्म दिवस के अवसर पर सप्रेम।

2100/- श्री उम्मेदचन्दजी, लालचन्दजी जैन, कोटा-सवाईमाधोपुर, सुपुत्र श्री लोकेशजी जैन (सोनू) का 2 फरवरी, 2023 को स्वर्गगमन होने की पुण्यस्मृति में।

2100/- श्री अनिलकुमारजी मेहता, ब्यावर, मातुश्री श्रीमती फूलकँवरजी मेहता की भावनानुसार सपरिवार नववर्ष में गुरुचरण सन्निधि में आराधना करने के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री अजयजी, विजयजी कांकरिया, जोधपुर, पूज्य पिता श्री हीराचन्दजी कांकरिया (भोपालगढ़ वाले) का 11 फरवरी, 2023 को स्वर्गवास हो जाने पर।

2000/- श्री शलीलजी-कान्ताजी मेहता, जोधपुर-अहमदाबाद, जिनवाणी को सप्रेम।

1800/- श्री दिनेशजी, अक्षयजी गांग, जोधपुर, श्री मनमोहनमलजी गांग की 22 जनवरी, 2023 को 18वीं पुण्यस्मृति के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री राजेन्द्रजी सिंघवी, जोधपुर, श्रीमती सुधाजी (स्नेहलता) धर्मसहायिका स्व. श्री रिखबराजजी ओस्तवाल का 4 जनवरी, 2023 को स्वर्गगमन होने की पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री देवेन्द्रनाथजी-श्रीमती कमलाजी, लोकेन्द्रनाथजी-श्रीमती रितुजी मोदी, सुश्री लोरीजी, आर्विजी मोदी, जोधपुर, स्व. श्री हुकमनाथजी एवं श्रीमती कान्ताजी मोदी की पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री पदमचन्दजी, पल्लवजी जैन (धमूण वाले), महावीर नगर, सवाई माधोपुर, सुश्री पल्लवीजी जैन की राजस्थान विद्युत् प्रसारण निगम लिमिटेड, सवाईमाधोपुर में कनिष्ठ सहायक पद पर नियुक्ति होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री पदमप्रभुजी, वर्धमानजी जैन (कुण्डेरा वाले), हाउसिंग बोर्ड-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताजी श्री रामस्वरूपजी जैन (अध्यापक) का 1 फरवरी, 2023 को स्वर्गगमन होने की पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री सुरेशचन्दजी जैन, खेरली-अलवर, धर्मपत्नी श्रीमती शारदाजी जैन का 30 जनवरी, 2023 को स्वर्गवास हो जाने पर पुण्यस्मृति में।

1100/- श्रीमती पुष्पाजी, अपूर्वजी जैन, नवसारी, पूजनीय श्री ज्ञानेशजी जैन की पुण्यस्मृति में।

गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु

श्री अविनाशजी मेहता सुपुत्र श्री लक्ष्मणजी-श्रीमती इन्द्राजी मेहता (महावीर नगर, जयपुर), यू.एस.ए.

10 मार्च 2023
जिनवाणी 91
ISSN 2249-2011

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले अधिकतम 20 वर्ष की आयु के श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है। उत्तर प्रदाता अपने नाम, पते, आयु तथा मोबाइल नम्बर के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड आदि का भी उल्लेख करें।

लालच : एक पिशाच

संकलित

एक बार की बात है-दो भाई ऊँटों पर सवार होकर धन कमाने के लिए परदेस जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक साधु उनकी ओर आता हुआ मिला। पास आकर वह उन दोनों भाइयों से बोला-''तुम लोग आगे मत जाना, बड़ा भयानक पिशाच बैठा है, तुम्हें खा जायेगा।'' इतना कह कर वह आगे चला गया।

दोनों भाइयों ने उसकी बात सुनी और विचार करने लगे कि यह साधु बेचारा बूढ़ा और अकेला था, कुछ देखकर डर गया होगा। हम तो दो हैं और जवान भी हैं। हमें डरने की जरूरत नहीं है हमारे पास तो बन्दूक भी है। ऐसा सोचकर उन्होंने अपनी यात्रा जारी रखी। थोड़ा आगे जाने पर वे देखते हैं कि रास्ते में एक थैली पड़ी है। उन्होंने अपने ऊँटों से उतरकर उस थैली को उठाया और थैली को खोलकर देखा। उसमें सोने की मोहरें भरी हुई थी। दोनों ने अपने आस-पास, इधर-उधर निगाहें दौड़ाई, कोई भी नहीं था। प्रसन्न होकर वे सोचने लगे कि चलो अच्छा हुआ। हमारा काम बन गया। परदेस जाने की अब जरूरत ही नहीं रही।

ऐसा सोचकर वे निश्चिन्त हो गए। दोनों को भूख भी लग आई थी। बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा-''जाओ ! पास के गाँव से खाना ले आओ।'' छोटे भाई ने बड़े भाई की बात मानी और खाना लाने के लिए गाँव का रुख किया।

अब छोटे भाई के जाते ही बड़े भाई के मन में विचार आने लगा कि कुछ ही समय में मोहरें आधी-आधी बँट जायेंगी। भाई के आने पर यदि वह उसे गोली से उड़ा दे तो सभी मोहरें उसी की हो जायेंगी। उधर वह छोटा भाई भी अपने मन में ऐसे ही विचारों से ग्रसित था। वह भी सोच रहा था कि अब हमें उन प्राप्त मोहरों के दो विभाग करने पड़ेंगे और आधी संपत्ति का स्वामी बड़ा भाई हो जायेगा। उसने निश्चय किया कि वह खाने में विष मिला देगा, जिसके खाने से बड़े भाई का प्राणांत हो जायेगा और सभी मोहरों का वह एकमात्र मालिक होगा। यह बात उसके मन को जम गई।

थोड़ी देर में वह खाने का सामान लेकर गाँव से उस स्थान पर आया जहाँ बड़ा भाई उसका इंतजार कर रहा था। ज्यों ही वह खाने की सामग्री लेकर उस स्थान पर आया, बड़े भाई ने उस पर एकदम गोली दाग दी। तुरन्त ही छोटा भाई वहीं ढेर हो गया और उसके प्राण पखेरू उड़ गए। बड़े भाई को जोरों से भूख लगी थी। उसने सोचा कि पहले खाना खा लूँ, फिर भाई को गड्ढा खोदकर उसमें गाढ़ दूँगा। उसने ज्यों ही पहला ग्रास मुख

में रखा कि उसे चक्कर आया और देखते-देखते उसकी जीवन लीला भी समाप्त हो गई। साधु की बात सच निकली। साधु ने किसी और पिशाच से नहीं, बल्कि लालच रूपी पिशाच से सचेत किया था और वह 'लालच' पिशाच दोनों को खा गया।

शिक्षा–धन के लिए पागल बना हुआ अविवेकी पुरुष अपने प्रिय से प्रिय सम्बन्धी को भी हानि पहुँचाने में संकोच नहीं करता।

-पुस्तक 'प्रेरक कथाएँ' से साभार

वर्धमान कैसे बने महावीर?

संकलित

क्या वर्धमान ने घर, राजमहल आदि सब कुछ त्याग दिया, इसलिये भगवान बने? नहीं.... भगवान बनने की पात्रता तो 27 जन्म पहले नयसार सुथार के भव से हो गई थी। नयसार के भव में उन्होंने प्रतिज्ञा ली थी कि-''मैं किसी को भोजन कराये बिना भोजन नहीं करूँगा।'' एक दिन जंगल में मुनि को भोजन कराने का अवसर प्राप्त हुआ। भोजन भले ही साधारण था, किन्तु उस समय उसके भाव उत्कृष्ट थे और मुनि के भाव भी शुभ थे; परिणामस्वरूप सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो गई।

उस दिन उन्होंने सुपात्र दान दिया और उनके भगवान बनने की नींव शुरू हो गई। एक छोटी-सी प्रतिज्ञा ने उन्हें मोक्ष की राह पर बढ़ा दिया। इस प्रकार भगवान महावीर का जन्म पूर्व के 26 भवों के बाद हुआ। वैशाली गणराज्य ब्राह्मण कुण्डग्राम के मुख्य ब्राह्मण ऋषभदत्त की धर्मपत्नी ब्राह्मणी देवानन्दा की कुक्षि में आए। देवानन्दा द्वारा 14 स्वप्न देखने के बाद आषाढ़ शुक्ल अष्टमी को मध्यरात्रि को प्रभु का च्यवन हुआ। शक्रेन्द्र देव ने अवधिज्ञान से जाना कि नीचगोत्र कर्म के उदय से यह च्यवन हो गया है, तो हरिणेगमेषी देव को भेजकर 82 रात्रि के पश्चात् माता त्रिशला की कुक्षि में स्थानान्तरित करवाया। माता त्रिशला ने भी चौदह स्वप्न देखे और चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को क्षत्रियकुण्ड ग्राम में राजा सिद्धार्थ के घर प्रभु महावीर का जन्म हुआ।

भगवान के जन्म के पश्चात् राजा सिद्धार्थ के भण्डार में वृद्धि होने लगी, धन-धान्य एवं राज्य सम्मान बढ़ने लगा, इसलिये इनका नाम वर्धमान रखा गया। जब वर्धमान साथियों के आग्रह पर आमली पीपली खेलने गए तो देवलोक में इन्द्र ने भगवान के बल की प्रशंसा की तब उनकी परीक्षा लेने धरती पर एक देव साँप बनकर भगवान के सामने आया। भगवान ने साँप को पकड़कर दूरस्थ स्थान पर छोड़ दिया। दूसरी बार प्रभु को खम्भे पर बैठाकर स्वयं राक्षस का रूप लेकर लम्बा ताड़ जैसा रूप बनाया, प्रभु ने मजबूत मुक्के का प्रहार कर वापस छोटे होने को मजबूर कर दिया। भगवान के साहस को देखकर उन्हें हरा न सकने के कारण उस देव ने कहा कि इन्द्र ने जैसी प्रशंसा की थी, वैसे ही आप साहसिक और धीर हो, आप सचमुच महावीर हो। तब से इनका नाम महावीर हो गया।

-पुस्तक 'जीवन-बोध भाग-2' से साभार

चौदह क्षणिकाएँ

डॉ. दिलीप धींग

1. जीवन

मिट्टी का ढेला जीवन है,
दो दिन का मेला जीवन है।
ऐसे में सर्वोत्तम ढंग से,
जीने की कला जीवन है।।

2. निद्रा

द्रव्य-निद्रा, भाव-निद्रा, जीवन में निद्रा ही निद्रा।
जागिये! वरना अचानक, आ जाएगी महानिद्रा।

3. करमुक्त आय

खूब कमाओ प्रिय मित्रों, यह अनमोल वक्त है।
पुण्य रूपी आय तो, सर्वथा करमुक्त है।

4. शेयर

व्रत-नियम के शेयर ले लो,
जीवन-सुमन खिलेगा।

बिना खर्च जोखिम के ही,
प्रतिदिन डिविडेंड मिलेगा।।

5. वाणी

झगड़े की जड़ सिञ्चित होती,
अविचारित वाणी से।
सौहार्द का पौधा पनपे,
क्षमा-प्रेम के पानी से।।

6. स्वाध्याय

स्वाध्याय का तप करने से,
ज्योतिर्मय होता अन्तर्मन।
तम अज्ञान का हर जाता है,
पावन बन जाता है जीवन।।

7. मर्यादा

विषय-भोग में, खान-पान में,
मर्यादा से बाहर मत जा।
मर्यादा में रहता पानी,
करता है उपकार जगत का।।

8. भाग्यशाली

जिसके हाथों में सम्यक् श्रम,
पाँव सुपथ पर गतिमान है।
और हृदय में प्रेम करुणा,
बेशक वह नर भाग्यवान है।।

9. पूजा

समभाव के पुष्प लीजिये,
पावन मन का थाल सजा।
दान-दया के दीप जलाकर,
निरासक्त बन करिये पूजा।।

10. कष्ट

दया से वह श्रेष्ठ है, विनय से ही ज्येष्ठ है।
क्रूरता अभिमान दोनों, आदमी के कष्ट हैं।।

11. ईर्ष्या

सबकी प्रगति का आकांक्षी,
खुद भी बढ़ता जाता है।
ईर्ष्याग्नि में जलने वाला,
सफल नहीं हो पाता है।।

12. गुणग्राहिता

परनिन्दक और आत्मप्रशंसक,
ज्येष्ठ-श्रेष्ठ से बच जाते हैं।
गुणग्राही और सत्य समर्थक,
नया इतिहास रच जाते हैं।।

13. पहली सीढ़ी

कष्ट-सहिष्णु बना स्वयं जो,
पर के कष्ट मिटाने को।
पहली सीढ़ी वह चढ़ता है,
अपनी मञ्ज़िल पाने को।।

14. करुणा

जिसके परम पावन नयनों से,
करुणा का निर्झर बहता है।
उस निर्झर के निर्मल जल से,
जग अपना कल्मष धोता है।।

-शोध-प्रमुख : जैनविद्या विभाग, शासुन जैन कॉलेज, चेन्नई-17 (तमिलनाडु)

छोटे-छोटे बच्चे

संकलित

छोटे-छोटे बच्चे, मानो गुलाब के फूल।
हम खिलते जायेंगे, महावीर के शासन में....।।टेर।।
हम बनेंगे महावीर, हम बनेंगे गौतम।
जम्बू जैसे बन जायेंगे, महावीर के शासन में....।।1।।
चन्दनबाला बनेंगे, मृगावती बनेंगे।
सीता जैसे बन जायेंगे, महावीर के शासन में....।।2।।
झूठ नहीं बोलेंगे, चोरी नहीं करेंगे।
टी.वी. से दूर रहेंगे, महावीर के शासन में....।।3।।

सुबह जल्दी उठेंगे, नमस्कार मन्त्र जपेंगे।
जय जिनेन्द्र बोलेंगे, महावीर के शासन में....।।4।।
हँसते-रमते रहेंगे, गुस्सा नहीं करेंगे।
सन्तसेवा साधेंगे, महावीर के शासन में....।।5।।
जब बड़े बन जायेंगे, शासन को चमकायेंगे।
जल्दी मुक्ति पायेंगे, महावीर के शासन में....।।6।।

पुस्तक 'जैन पाठ्यक्रम' से साभार

प्रतिक्रमण-प्रश्नोत्तर

प्र. 1– प्रतिक्रमण में जावज्जीवाए, जावनियमं तथा जाव अहोरत्तं शब्द कहाँ-कहाँ आते हैं?

उत्तर– जावज्जीवाए-पहले से आठवें व्रत में एवं बड़ी संलेखना के पाठ में। जावनियमं-नववें व्रत में। जाव अहोरत्तं-दसवें और ग्यारहवें व्रत में।

प्र. 2– काल की अपेक्षा प्रतिक्रमण कितने प्रकार के एवं कौनसे हैं?

उत्तर– काल की अपेक्षा से प्रतिक्रमण पाँच प्रकार का है-(1) दैवसिक प्रतिक्रमण, (2) रात्रिक प्रतिक्रमण (3) पाक्षिक प्रतिक्रमण, (4) चातुर्मासिक प्रतिक्रमण और (5) सांवत्सरिक प्रतिक्रमण।

-'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

Question Answers

Shri Dulichand Jain

Q 1. What is Jainism?

Ans. Jainism is a religion of compassion, non-violence and non-possession. It states that friendliness and universal love for all creatures, big or small, is the path to eternal bliss. This idea springs from its belief that all creatures are equal since each one has a divine soul within. Knowing this, we must not harm any creature and live in peaceful co-existence.

Q 1. Who started Jainism?

Ans. Jainism is an ancient and timeless religion, without any beginning or end. Through the epochs, the *tīrthaṅkaras* (fordmakers) have spread this religion to the masses, and re-established the religious order from time to time.

At present, we are following the religious order set up by Mahāvīra about 2,500 years ago. He was the twenty-fourth tīrthaṅkara of Jainism. He revived this great religion, emphasizing the importance of non-violence and compassion towards all. He opposed the prevalent animal sacrifices and orthodox religious practices. He established the religious order (*Saṅgha*) and accrued a large number of disciples.

The Jaina *ācāryas*, monks and nuns devote their lives in propagating this religion. The Jaina community accepts and respects them as the religious teachers.

-Chennai (Tamilnadu)

Win one, Win all

Shri Shrikant Gupta

One day, a monk came to Gautamswami and asked him, "Oh Swamin! how can you keep calm amongst your enemies, how then can you conquer them?" Gautamswami sweetly replied, "First I win one enemy, then I conquer four. After that, I conquer ten enemies, the rest of the enemies disappear after seeing this."

The puzzled monk then inquired on who these enemies were? Gautamswami answered, "The most terrible enemy is our own ego. If you win that, you will win four more : Anger, Deceit, Pride and Greed. After that, you will be able to win over all the good and bad things associated with the five senses which are the temptations relating to good or bad hearing, seeing, smelling, tasting and touching. When these ten are conquered, the other enemies cannot stay and are forced to disappear."

The monk asked a final question, "There is a poisonous plant in one's own heart. It grows and also bears fruit. How can you destroy this plant?" "Well, you must root it out so it does not bear fruit", answered Gautamswami. This plant is called 'DESIRE.' Desire for material comfort and desire for worldly pleasure have to go to get ultimate bliss.

-Jodhpur (Rajasthan)

10 मार्च 2023
जिनवाणी 95
ISSN 2249-2011

बाल-स्तम्भ

निराशा

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 अप्रेल, 2023 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपना नाम, आयु, मोबाइल नम्बर तथा पूर्ण पते के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड इत्यादि का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

शिवा और रानू उच्च शिक्षा हेतु इंग्लैंड गईं। दोनों ने साथ रहने का निर्णय लिया। उन्होंने किराए पर एक कमरा और रसोईघर ले लिए। उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि खाना स्वयं बनायेंगे। बाहर का खाना महँगा पड़ता है और हमेशा के लिए अच्छा भी नहीं रहता है।

वे कॉलेज गईं और प्रवेश के फार्म लेकर आई। रात में दोनों ने फार्म भर लिए और दूसरे दिन जमा करवा कर आ गई। शाम को दोनों उद्यान में घूमने लगीं और गपशप भी करने लगीं।

तीसरे दिन रानू का प्रवेश-पत्र आ गया। शिवा ने कहा-''मेरा प्रवेश-पत्र नहीं आया। हाय! मैं क्या करूँ? मेरा प्रवेश होगा या नहीं। प्रवेश नहीं हुआ तो क्या करूँगी।''

रानू-''क्यों नहीं होगा?''

शिवा-''इनकी जो भी माँगे थीं और जो बिन्दु थे वे सब पूरे कर दिए थे। तेरा आ गया। मेरा क्यों नहीं आया?''

रानू-''कल कॉलेज चल कर बात करेंगे।'' शिवा का सिर चकराने लगा। रुआँसी हो गई। देह ठंडी पड़ गई। रानू ने चाय मँगवाई। शिवा ने दो घूँट पीकर छोड़ दी और कमरे में घूमने लगी।

रानू-''शिवा! धैर्य रख। प्रवेश पत्र आ जाएगा। एक दिन आगे-पीछे हो सकता है। तू चाय पी, इसे झूठी नहीं छोड़नी है।''

शिवा-''मेरे गले ही नहीं उतर रही है।''

रानू-''देखो! छोटी-छोटी बात के लिए धीरज खो देंगे तो हम टूट जायेंगे। कितनी ही समस्याएँ हमारे सामने आयेंगी, उनका सामना हमें ही करना है। घर में तो माँ-पापा होते हैं वे काम भी कर देते हैं और मनोबल भी बढ़ा देते हैं। हमें आँच नहीं आने देते हैं, पर यहाँ तो....।''

शिवा-''तू मुझे कितना ही समझा, मेरी समझ के बाहर है। हे प्रभो! मैं क्या करूँ।''

शिवा ने सन्ध्या का खाना भी नहीं खाया और बिस्तर पर लेट कर करवटें बदलती रही। रानू कुछ समय तक बेचैनी का दृश्य देखती रही। अन्त में उससे देखा नहीं गया और उसे हाथ पकड़कर उठाया।

रानू-''बाहर चलते हैं, थोड़ा घूम आएँ।''

शिवा-''तुझे घूमने-फिरने की लगी है। मेरा तो जी निकल रहा है। कब कॉलेज जाऊँ और प्रवेश-पत्र पाऊँ।''

रानू-''यह रात तो हमें काटनी पड़ेगी, चाहे हँस करके बिताओ या रो करके। अपने मन को ढाँढस देना होगा।''

शिवा-''तू सैर-सपाटे करने चली जा। मैंने तो कर्म ऐसे ही किये हैं, जो भोग रही हूँ।''

रानू-''छोटी सी बात के लिए अपने को कौस रही है। बवण्डर मचा रखा है।''

शिवा-''यह बात छोटी है, पूरे जीवन का प्रश्न है। माँ-पापा को कितना मनाया, समझा-बुझाकर इंग्लैंड आने के लिए राजी किया। उन्हें क्या उत्तर दूँगी?''

रानू-''शिवा।''

शिवा-''क्या शिवा शिवा कर रही है। तू तो खुश है न? तेरे को प्रवेश-पत्र मिल गया?''

रानू-''मैं प्रसन्न जब होऊँगी जब तू खुश होगी।''

शिवा न तो स्वयं खुश है न दूसरों को खुश रख पा रही है। निराशावादी लोगों की सोच नकारात्मक होती है। वे हर बात उल्टी सोचते हैं। उनकी दूरदर्शिता विपरीत होती है। वे हर काम में हानि पहले सोचते हैं। निराशा के कारण किसी पर भी विश्वास नहीं करते हैं। वे अपना और दूसरों का विकास नहीं कर सकते हैं, उन्हें जीवन में विफलता मिलती है। निराशावादी लोग जिद्दी, क्रोधी हो जाते हैं। चिड़चिड़े भी हो जाते हैं। मन का चैन-शान्ति खो बैठते हैं और सिर धुनते रहते हैं। वे हृष्ट-पुष्ट भी नहीं होते हैं। दूसरों को जीने नहीं देते हैं।

किसी तरह रोते-पीटते रात कटी। दोनों निपट कर दस बजने की राह देखने लगी। शिवा एक-एक सैंकण्ड से घड़ी देख रही थी।

दस बजते ही दोनों सहेलियाँ नीचे आकर टैक्सी करके कॉलेज पहुँच गई। कार्यालय खुल गया था। लिपिक काम कर रहे थे।

शिवा-''मैं शिवा। मेरा प्रवेश-पत्र दीजिए।'' लिपिक ने प्रवेश-पत्र लाकर टेबल पर रखा और कहने लगा-''आपने नीचे अपने हस्ताक्षर नहीं किए हैं। आप हस्ताक्षर कीजिए और प्रवेश-पत्र ले जाइये।''

रानू-शिवा ने प्रवेश-पत्र लेकर बाबूजी को धन्यवाद दिया।

रानू-''अब तो तेरी रोनी सूरत सुधार ले।''

दोनों खिलखिला कर हँस पड़ी। टैक्सी करके कमरे पर आ गई। रानू ने चाय-बिस्किट मँगवाए। रानू ने पैसे देने के लिए पर्स खोला। पर्स में बटुआ नहीं मिला। इधर-उधर से पूरा पर्स टटोल लिया, पर बटुआ नहीं मिला।

शिवा ने भी उसका बटुआ ढूँढ़ा, परन्तु नहीं मिला। शिवा ने चाय वाले को पैसे दे दिए। रानू का बटुआ खोने पर भी शिवा अधिक चिन्तित थी। वह इतनी व्याकुल हो रही थी कि उसकी मुख मुद्रा मुरझा गई। निढ़ाल हो गई कि जैसे कोई बड़ा अनर्थ हो गया।

रानू-''तू अब कितना ही दु:खी हो, अब बटुआ मिलने वाला नहीं है। टैक्सी वाले को पैसे दिये थे। उसके पश्चात् हाथ से फिसल गया, यही भान हो रहा है।''

शिवा-''ढूँढ़ने चलें।''

रानू-''कहाँ चलें? मिलने का कोई अता-पता है? देखो शिवा! होना था, वह हो गया। उसे भूल जाओ। मैंने मन को मना लिया है और तू भी मन को मना ले। उसी में हमारा भला है। जिसे मिला है वह सुखी रहे यही मेरी इच्छा है।''

शिवा-''उसमें कितने रुपये थे?''

रानू-''टोह लेने से कोई अर्थ नहीं निकलता है। अपना चैन गँवाना है।''

टैक्सी वाला रानू से पैसे लेकर आगे निकल गया। उसे स्कूल से बच्चे लेकर घर-घर पहुँचाना था। प्रथम बच्चे को टैक्सी में बिठाने लगा तो बटुआ मिला। उसने उठाकर जेब में डाल लिया। बच्चों को छोड़कर तुरन्त उन्हें बटुआ लौटा दूँगा, ऐसा विचार किया। दोनों बहनें बटुआ गुम होने से दु:खी हो रही होंगी। पहले देने जाऊँगा तो बच्चे समय पर घर नहीं पहुँच पायेंगे। बच्चे के घर वाले चिन्तित होकर बड़ी मेम को फोन लगायेंगे, शिकायतें सुननी पड़ेगी। मेम मेरे से भी रुष्ट हो जायेगी। इतने लोगों को दु:खी करना ठीक नहीं है। बच्चों को छोड़ने के पश्चात् टैक्सी ड्राइवर शिवा-रानू के कमरे पर पहुँचा और दरवाजा खटखटाया।

शिवा–''कौन है?''

टैक्सी ड्राइवर–''आप दरवाजा खोलिए और अपना बटुआ सम्भालिए।''

दोनों सखियों ने किवाड़ के छेद से बाहर देखा। टैक्सी ड्राइवर हाथ में बटुआ लिए खड़ा था।

शिवा ने बटुआ लिया और पूछने लगी कि इसमें कितने रुपये हैं?

टैक्सी ड्राइवर–''बहन! मैंने बटुआ नहीं खोला है। यह आपका बटुआ है तो रख लीजिए। मुझे तो यही लगा कि यह आपका है।''

रानू–''शिवा बस कर। थोड़ा विश्वास कर। इन्हें रुपये निकालने होते तो यहाँ टैक्सी का तेल जला कर क्यों आते? मन मीठा कर लेते। भैयाजी बटुआ मेरा है। मुझे इसके मिलने की आशा भी नहीं थी। मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देती हूँ। मुझे बटुए से ज्यादा प्रसन्नता इस बात की है कि दुनिया में ईमानदार लोग हैं।''

बटुआ खोलकर सौ रुपये टैक्सी ड्राइवर को पुरस्कार रूप में देने के लिए हाथ बढ़ाया।

ड्राइवर–''बहन! क्षमा चाहता हूँ। आपके इतने सुन्दर विचार ही मेरा पुरस्कार है।''

ड्राइवर चला गया। वह भारतीय था। उसे हिन्दी भाषा आती थी।

शिवा–''रानू तेरा भाग्य बहुत प्रबल है।''

रानू–''जो लोग धैर्य रखते हैं, निराश नहीं होते हैं उनकी कामना स्वत: पूर्ण हो जाती है। भगवान भी उनकी रक्षा करता है।''

मैं निराशामय जीवन जीना नहीं चाहती हूँ। वह बल–बुद्धि को हीन कर देता है। निराशा उन्नति के मार्ग में दीवार बन खड़ी रहती है।

–ई–123, नेहरु पार्क, जोधपुर (राजस्थान)

प्र. 1 शिवा को प्रवेश–पत्र क्यों प्राप्त नहीं हुआ?

प्र. 2 निराशावादी लोग कैसे होते हैं?

प्र. 3 कहानी के आधार पर शिवा के स्वभाव की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।

प्र. 4 रानू के अनुसार ईश्वर कैसे लोगों की सहायता करता है?

प्र. 5 टैक्सी ड्राइवर ने किस तरह अपनी ईमानदारी का परिचय दिया?

प्र. 6 कहानी से कोई चार भाववाचक संज्ञा के उदाहरण लिखिए।

बाल-स्तम्भ [जनवरी-2023] का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी-2023 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'नियम का महत्त्व' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	तेजस जैन, अलीगढ़-रामपुरा (राजस्थान)	25
द्वितीय पुरस्कार-300/-	मुदिता जैन, सुमेरगंज मण्डी-बूँदी (राजस्थान)	24
तृतीय पुरस्कार- 200/-	रूपमाला जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	23
सान्त्वना पुरस्कार (5) - 150/-	सक्षम जैन, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	22
	अदिति बाँठिया, नागपुर (महाराष्ट्र)	22
	भावित सुराणा, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)	22
	अनिका जैन, महारानी फार्म, जयपुर (राजस्थान)	22
	दीक्षा सायर, भीलवाड़ा (राजस्थान)	22

बाल-जिनवाणी फरवरी, 2023 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 अप्रेल, 2023)

प्र. 1. किसान ने अपने पुत्रों को घर छोड़ने को क्यों कहा?
प्र. 2. अपना चिन्तन शुभ रखने से क्या लाभ हैं?
प्र. 3. 'शब्दों का अपना एक संसार होता है।' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
प्र. 4. राजकुमार ने किस कारण दोनों भाइयों को उपहार दिया?
प्र. 5. सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति और वृद्धि कैसे हो सकती है?
प्र. 6. प्रतिक्रमणसूत्र में अठारह पापस्थान को अन्धकार का पाठ क्यों कहा है?
प्र. 7. किन्हें जीवन श्रेष्ठ और शानदार लगने लगता है?
प्र. 8. Why is helping others said to be the most satisfying job?
प्र. 9. How do Jains help in environmental protection?
प्र. 10. बाल-जिनवाणी से गुणवाचक विशेषण के कोई पाँच उदाहरण लिखिए।

बाल-जिनवाणी [दिसम्बर-2022] का परिणाम

जिनवाणी के दिसम्बर-2022 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	शान्तनु प्रशान्त कोठारी, धुलिया (महाराष्ट्र)	39
द्वितीय पुरस्कार-400/-	काजल जैन, जयपुर (राजस्थान)	38
तृतीय पुरस्कार- 300/-	पुलकित जैन, आदर्श नगर-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	37
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	कु. ममता आर. छाजेड़, भुसावल (महाराष्ट्र)	36
	अमम जैन, महारानी फॉर्म-जयपुर (राजस्थान)	36
	मुदित जैन, मानसरोवर-जयपुर (राजस्थान)	36

बाल-जिनवाणी, बाल-स्तम्भ के पाठक ध्यान दें

बाल-जिनवाणी एवं बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर प्रदाताओं से निवेदन है कि वे अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नम्बर, बैंक विवरण-(खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक का नाम इत्यादि) भी साथ में स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखकर भिजवाने का कष्ट करें ताकि आपका पुरस्कार उचित समय पर आपको प्रदान किया जा सके। जिन्हें अब तक पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हुई है, वे श्री अनिल कुमारजी जैन से (मो. 9314635755) सम्पर्क कर सकते हैं। *-सम्पादक*

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।

ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

7506357533 ✆ : 9022786523, 022-26287187

ई-मेल : **oswalmatrimony@gmail.com**

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168

A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यो एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)

श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।
श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन।
युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई।
श्रीमती इन्द्राबाई सूरजमल जी भण्डारी, चैन्नई (निमाज-राज.)।

DIAMOND MEMBER (RS.200000)

M/s Prithvi Exchange (India) Ltd., Chennai
श्रीमान् सुगनचन्द सा सरोजाबाई जी मुथा, डबल रोड, बैंगलोर

SILVER MEMBER (RS.50000)

श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोथरा, जलगांव (घोपालगढ़)
श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर
श्रीमती वीना सुरेशचन्द्र जी मेहता, उमरगांव (घोपालगढ़ वाले)।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, जबलपुर
श्रीमान् प्रकाशचन्द शायरचन्द जी मुथा, औरंगाबाद (महा.)
श्रीमती लाडकंवर जी धर्मपत्नी श्रीमान् अमरचन्द जी सांड, विजयनगर, राजस्थान
श्रीमान पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरूवन्नमलई (तमिलनाडू)
श्रीमान् सिद्धार्थजी भण्डारी, जागृति नगर, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
श्रीमान् हेमन्त अरविन्द जी सिंघवी, चारनी रोड, मुम्बई

GOLD MEMBER (RS. 75000)

श्रीमती पुष्पाबाई सुभाषचन्द जी बागरेचा, शिरपुर (महा.)
श्रीमान् सम्पतराज जी, सपनाजी, दिनेशजी राजेशजी सुराणा, जोधपुर-बैंगलोर
श्रीमान् संदीप मांगीलाल जी मुणोत, शिरपुर (महा.)

PLATINUM MEMBER (RS.100000)

श्रीमान् वूलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई।
श्रीमान् वलीचन्द जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई।
श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई।
श्रीमान् अम्बालाल जी वसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई।
श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवंर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई।
प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)।
श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़।
श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू।
श्रीमान जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले)
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, तिरूवल्लुवर (तमिलनाडू)।
श्रीमती कंचनजी बापना, श्री संजीव जी बापना, कलकत्ता (जोधपुर वाले)
श्रीमान पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरूवन्नमलई (तमिलनाडू)
श्रीमती शान्ता डॉ. उमरावसिंह जी लोढा, रावजी की हवेली, जोधपुर
स्व. श्रीमान् रिषभराज जी सज्जनकंवर जी भण्डारी, सरवारपुरा, जोधपुर

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

'छोटा सा चिंतन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

जिनवाणी प्रकाशन की योजना के लाभार्थी बनें

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा जिनवाणी पत्रिका के प्रकाशन हेतु एक योजना प्रारम्भ की गयी है। जिसके अन्तर्गत एक-एक लाख रुपये की राशि प्रदान करने वाले दो महानुभावों के द्वारा प्रेषित प्रकाश्य सामग्री एक-एक पृष्ठ में एक माह प्रकाशित की जाती है। इसके साथ ही वर्ष भर उनके नामों का उल्लेख भी जिनवाणी में किया जाता है। सन् 2020 की जुलाई से अनेक महानुभाव इस योजना में जुड़े हैं, उन सबके हम आभारी हैं।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से चैक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रॉच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप एवं जमाकर्ता का पेन नं., मण्डल कार्यालय को प्रेषित करने की कृपा करें, जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके। 'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है।

वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु लाभार्थी

(1) श्रीमती शान्ताजी, प्रदीपजी, मधुजी मोदी, जयपुर।
(2) श्री तेजमलजी, अभयमलजी लोढ़ा, नागौर-जयपुर।
(3) न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया, जोधपुर।
(4) श्री कनकराजजी कुम्भट, जोधपुर।
(5) श्री पूनमचन्दजी जामड़ (किशनगढ़ वाले), जयपुर।
(6) श्री सुशीलजी बाफना, जलगाँव।
(7) श्री सोहनलालजी, गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, चेन्नई।
(8) मैसर्स अमरप्रकाश फाउण्डेशन प्रा. लि., चेन्नई।
(9) श्री सुबाहु कुमारजी, मनोजजी, मनीषजी (सी.ए.) जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
(10) श्री श्रीपाल मलजी-श्रीमती मधुजी, श्री चिरागजी-श्रीमती लक्ष्याजी सुराणा (नागौर वाले), चेन्नई
(11) श्री कनकराजजी, महेन्द्रजी, देवांशजी कुम्भट, जोधपुर-मुम्बई
(12) सी. आर. कोठारी मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि), जयपुर-वडोदरा-मुम्बई
(13) नाहर परिवार मुम्बई, भोपाल, इन्दौर, बरेली।
(14) सौ. प्रेमलताजी श्री सोहनलालजी, सौ. रंजनाजी श्री महावीरजी बोथरा, जलगाँव (महाराष्ट्र)

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

उदारमना लाभार्थियों की अनुमोदना एवं स्वेच्छा से नये जुड़ने वाले लाभार्थियों का हार्दिक स्वागत।

CLUB REGALIA
AT NAVKAR CITY

CLUB REGALIA

SWIMMING POOL

KID'S PLAY ROOM

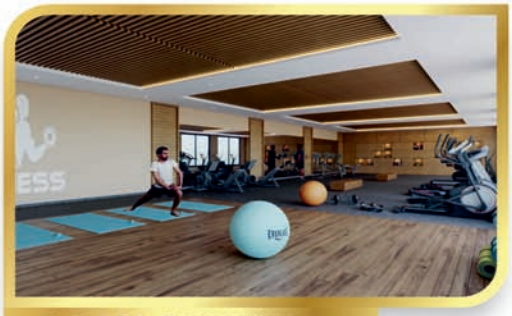

INDOOR GYMNASIUM

AMENITIES

- NON-ALCOHOLIC CLUB
- 100%VEGETARIAN CLUB
- INDOOR SQUASH COURT
- SPA & WELLNESS CENTRE
- OUTDOOR SWIMMING POOL
- INDOOR BADMINTON COURT
- MULTI-CUISINE RESTAURANT
- OUTDOOR BANQUET LAWN
- INDOOR BANQUET HALL
- BILLIARDS LOUNGE
- KID'S POOL AREA
- BOWLING ALLEY
- MUSIC ROOM
- LIBRARY
- SALON

8504 000 222

Near DPS Circle, Navkar City, Jodhpur (Raj.)

Disclaimer: Visual representations shown are only informative and indicative of the envisaged developments subject to variation and modification made by the company as approved by the competent authorities

JVS PURITY

JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

Special Foods for undernourished Children

Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

CERTIFIED ISO 22000 CERTIFIED

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)
Tel.: 0141-2770294
Email-jvsfoods@yahoo.com
Website-www.jvsfoods.com
FSSAI LIC. No. 10012013000138

Food Safety System Certification 22000

KALPA-TARU®

WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

022 3064 3065

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENSA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office**:101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | **Email**: sales@kalpataru.com | **Website**: www.kalpataru.com

In association with HDFC PROPERTY FUND

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन